Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीसीतापतये नमः

श्रीवाल्मीकिमहामुनिकृतशतकोटिरामचरितान्तर्गतं–

आनन्दरामायणम्

'ज्योत्स्ना'ऽभिधया भाषाटीकयाऽऽटीकितम्

विवाहकाण्डम्

प्रथमः सर्गः

(स्वयंवरके प्रसंगमें रामका राजा भूरिकीर्तिकी पुरीको प्रस्थान)

श्रीरामदास उवाच

अथ रामः सभामध्ये मन्त्रिभिः परिवेष्टितः । तस्थौ सिंहासने रम्ये वरछत्रोपशोभितः ॥ १ ॥
एतस्मिन्नन्तरे तत्र कश्चिद्दूतः समाययौ । नत्वा सभायां श्रीरामं स्वामिवृत्तं न्यवेदयत् ॥ २ ॥
पूर्वदेशाधिपतिना राज्ञा श्रीभूरिकीर्तिना । प्रेषितोऽस्मि महाराज द्रष्टुं त्वत्पादपंकजे ॥ ३ ॥
पत्रं पठित्वा श्रीराम कार्या मत्स्वामिने कृपा । इत्युक्त्वा रामदूतस्य करे पत्रं समर्पयत् ॥ ४ ॥
रामदूतोऽपि सौमित्रेः पुरस्तात्पत्रमादरात् । स्थापयामास वेगेन गत्वा तस्थौ निजस्थलीम् ॥ ५ ॥
ततः स लक्ष्मणः पत्रं वरबन्धनवेष्टितम् । समुद्घाट्य राघवाग्रे पपाठ मंजुलस्वनः ॥ ६ ॥
हेमकृत्रिमपुष्पाद्यैरङ्कितं कुंकुमान्वितम् । दर्शनादेव मांगल्यसूचकं तोषकारकम् ॥ ७ ॥
उवाच पत्रलिखितैरक्षरैर्लक्ष्मणः शनैः । स्थितः श्रीरामपुरतो वरसिंहासनांतिके ॥ ८ ॥

श्रीमान् श्रीराघवेन्द्रो जयतु दशशिरश्छेदनार्थं जगत्यां
कौसल्यायां नृपेशो दशरथतनयश्चेति नाम्नाऽवतीर्णः ।
तस्याहं भूरिकीर्तिः पदजलरुहयोर्गन्धमाघ्रातुकामः
कृत्वा नैज शिरस्तु भ्रमरवदनिशं प्रार्थनां प्रार्थयामि ॥ ९ ॥

श्रीरामदास बोले–एक दिन रामचन्द्र सभामें अपने राजसिंहासनपर बैठे थे। उनके ऊपर सुन्दर छत्र लगा हुआ था और उनके चारों ओर कितने ही मंत्री बैठे हुए थे। इसी समय एक दूत आया और वह अपने प्रभुका सन्देश सुनाने लगा। उसने कहा—पूर्व देशके अधिपति महाराज भूरिकीर्तिने आपके चरणोंका दर्शन करनेके लिए मुझे भेजा है। आप मेरे स्वामीपर कृपा करके यह पत्र पढ़ लीजिए। इतना कहकर उसने वह पत्र रामके दूतको दे दिया। उस दूतने लक्ष्मणके हाथमें दिया और प्रणाम करके चुपचाप बैठ गया ॥ १–५ ॥ लक्ष्मणने सुन्दर कपड़ेमें बँधे हुए उस पत्रको खोला और मधुर स्वरसे बाँचकर रामको सुनाने लगे। पत्रपर सुवर्णके फूल बने हुए थे और कुमकुमके छींटे पड़े थे। जिसे देखनेमात्रसे वह मांगल्यसूचक तथा आनन्ददायक प्रतीत होता था ॥ ६ ॥ ७ ॥ पत्रमें जो लिखा था, उसे रामके पास जाकर धीरे-धीरे लक्ष्मण सुनाने लगे–॥ ८ ॥ रघुवंशमें उत्पन्न श्रीरामचन्द्रजीकी जय हो, जो राम रावणको मारनेके लिए दशरथके पुत्र

CC-0. In Public Domain. Vasishtha Tripathi Collection. Pandit Shambhu Nath Sharma Nagpur Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मम पौत्र्यावुभे राम चंपिका सुमतीति च । तयोः स्वयंवरार्थं ह्यायाताश्च बहवो नृपाः ॥१०॥
बंधुपुत्रैर्बंधुभिस्त्वं स्वसुताभ्यां च मंत्रिभिः । सुहृज्जनैस्तथा पौरैः सावरोधः स्वसेनया ॥११॥
आगच्छस्व मम पुरं मयि कृत्वा महत्कृपाम् । विफलां प्रार्थनां मे त्वं मा कुरुष्व त्विमां प्रभो ॥१२॥
इति पत्रार्थमाकर्ण्य स्वस्थचित्तो रघूत्तमः । स्वयंवरं ततो गन्तुं गुरुणा निश्चयं व्यधात् ॥१३॥
ततोऽब्रवीत्स सौमित्रिमद्य सेनां प्रचोदय । श्वोऽहं गच्छामि पुत्राभ्यां त्वया मंत्रिजनैः सह ॥१४॥
भरतेनापि युष्माकं पुत्रैः शत्रुघ्नसंयुतः । स्वयंवरं सावरोधः पौरैर्जानपदैः सह ॥१५॥
विजयो नगरीं राज्यं पालितुं स्थापितो मया । अद्य वै वस्त्रगेहानि बहिर्नेयानि लक्ष्मण ॥१६॥
पंथानं शोधयंत्वद्य नानादूतास्त्वरान्विताः । गच्छन्तु सकला नार्यः पुष्पकेण विहायसा ॥१७॥
तथेति लक्ष्मणश्चोक्त्वा चकार स यथोदितम् । राघवेण सभामध्ये प्रबद्धकरसंपुटः ॥१८॥
ततो द्वितीयदिवसे प्रभाते रघुनन्दनः । स्नात्वा नित्यविधिं कृत्वा निनायाग्नीन् स पुष्पके ॥१९॥
स्थापयामास कुण्डेषु भुक्त्वा सह सुहृज्जनैः । ततः सीतां समाहूय त्वरयामास राघवः ॥२०॥
ततः स्त्रियस्तदा सर्वाः सीताद्या रुक्मभूषिताः । यानमारुरुहुः शीघ्रं दिव्यवस्त्रादिमण्डिताः ॥२१॥
ततो रामो गजारूढो वरछत्रोपशोभितः । ययावग्रे चामराद्यैर्वीजितश्च मुहुर्मुहुः ॥२२॥
रामाग्रे वारणारूढो ययौ शीघ्रं गुरुस्तदा । राघवस्य पृष्ठभागे करिस्थो लक्ष्मणो ययौ ॥२३॥
ततः कुशाद्यास्ते ह्यष्टौ बाला जग्मुर्गजस्थिताः । ततो भरतशत्रुघ्नौ जग्मतुर्गजसंस्थितौ ॥२४॥
ततः सर्वे मंत्रिणश्च पौरा जानपदादयः । नानावाहनसंस्थास्ते ययुः सर्वे त्वरान्विताः ॥२५॥
चतुर्दन्ते शुक्लवर्णे वारणैरावतोद्भवे । संस्थितो राघवो रेजे मुक्ताजालविराजिते ॥२६॥
एवं रामः शनैर्मार्गे बंदिमागधसंस्तुतः । शृण्वन् वाद्यनिनादांश्च ययौ पूर्वदिशं शनैः ॥२७॥

होकर कौसल्याकी कोखसे जन्मे हैं। मैं भूरिकीर्ति भ्रमरकी नाईं उनके चरणकमलोंको सूँघनेकी कामनासे रात-दिन प्रार्थना करता रहता हूँ ॥ ९ ॥ हे राम ! मेरी चम्पिका तथा सुमति नामकी दो पौत्रियाँ हैं। उनके स्वयंवरमें बहुतसे राजे आये हुए हैं। अतएव आपसे भी प्रार्थना है कि अपने भ्राताओं, पुत्रों, भ्राताओंके पुत्रों, मंत्रियों, मित्रों, घरकी नारियों, पुरवासियों तथा सेनाके साथ मेरे यहाँ पधारें। हे प्रभो ! मेरी इस प्रार्थनाको विफल मत कीजिएगा ॥ १०–१२ ॥ इस प्रकार उस पत्रकी बातोंको स्वस्थचित्त होकर रामचन्द्रजी-ने सुना और स्वयंवरमें जानेके लिए गुरु वसिष्ठसे निश्चय किया। इसके बाद रामने लक्ष्मणसे कहा कि आज सेना भेज दो। कल हम, तुम, लव, कुश, मंत्रियों, भरत तथा तुम लोगोंके पुत्रों, स्त्रियों तथा पुरवासियोंको साथ लेकर स्वयंवरमें चलेंगे। विजयको अयोध्या नगरी तथा देशकी रक्षाके लिए नियुक्त कर दिया जाय। हे लक्ष्मण ! तुम आज अभी तम्बू-कनात आदि भेज दो ॥ १३–१६ ॥ झटपट कुछ दूतोंको रास्ता साफ करनेके लिए आगे भेज दो। घरकी सारी स्त्रियोंको पुष्पक विमान द्वारा पहले ही भेज दो ॥ १७ ॥ लक्ष्मणने रामकी सब बातें मान लीं और जैसा उन्होंने कहा था, सो सब ठीक कर दिया ॥ १८ ॥ दूसरे दिन रामने सबेरे उठकर स्नान और नित्यकर्म करनेके अनन्तर सब भ्राताओंके साथ बैठकर भोजन किया। अग्निहोत्रकी अग्नि मँगवाकर पुष्पक विमानपर रखी ॥ १९ ॥ इसके बाद सीताको बुलाया और जल्दी तैयार होनेके लिये कहा ॥ २० ॥ सीता आदि नारियोंने सुनहले वस्त्र तथा आभूषण पहने और पुष्पक विमान-पर जा बैठीं ॥ २१ ॥ इसके बाद राम एक सुन्दर हाथीपर बैठकर चले। उस समय उनके ऊपर श्वेत छत्र लगा हुआ था और सेवक उनपर चँवर डुला रहे थे ॥ २२ ॥ सबसे आगे गुरु वसिष्ठका हाथी था, उनके पीछे राम और रामके पीछे लक्ष्मणका हाथी था ॥ २३ ॥ उनके पीछे कुश आदि आठों बच्चों और भरत-शत्रुघ्नका हाथी चल रहा था ॥ २४ ॥ इन सबके पीछे मन्त्री तथा पुरवासी अनेक प्रकारकी सवारियोंपर सवार होकर शीघ्रतासे चले जा रहे थे ॥ २५ ॥ रामचन्द्रजी ऐरावतके कुलमें उत्पन्न चार दाँतवाले तथा मोतियोंके झुब्बोंसे सुशोभित हाथीपर बैठे हुए बड़े सुन्दर लग रहे थे ॥ २६ ॥ इस तरह बन्दीजन-मागध आदिकोंके द्वारा

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ववर्षुः सकला नार्यः पुष्पकस्था रघूत्तमम् । पुष्पवृष्टिभिरानन्दपूरिता राघवेक्षणाः ॥२८॥
निनेदुर्नववाद्यानि ननृतुर्वारयोषितः । जगुर्गीतानि रम्याणि पुरतस्ते नटादयः ॥२९॥
एवं रामः शनैर्गत्वा साकेताद्योजनोपरि । सेनानिवेशसंस्थानं निर्मितं तद्ददर्श सः ॥३०॥
अवरुह्य गजेंद्रात्स विवेश वसनगृहम् । एवं रामः शनैर्मार्गे पश्यन् देशान्मनोरमान् ॥३१॥
तीर्त्वा भागीरथीं गङ्गां विलंघ्य कटकान् प्रभुः । ययौ विंशद्दिनैर्भूरिकीर्तेर्देशमनुत्तमम् ॥३२॥
भूरिकीर्तेस्ततो दूतो गत्वा निजप्रभुं जवात् । कथयामास रामस्य मुदाऽऽगमनमादरात् ॥३३॥
भूरिकीर्तिर्नृपः श्रुत्वाऽऽगमनं राघवस्य सः । तुतोष नितरां श्रीमान् रामं प्रत्युद्ययौ जवात् ॥३४॥
स्वपुरीं शोभयामास पताकाध्वजतोरणैः । वारणेन्द्रं पुरस्कृत्य समायातैर्नृपैः सह ॥३५॥
ये ये समागतास्तत्र पार्थिवाश्च स्वयंवरे । विषण्णास्या बभूवुस्ते व्यग्रचित्तास्तथैव च ॥३६॥
स्वचित्ते मंत्रयामासुः कथमत्र स्वयंवरे । त्यक्त्वा श्रीरामबालांश्च कन्येऽस्माकं वरिष्यतः॥३७॥
इति चिंताविष्टचित्ताः प्रत्युज्जग्मू रघूत्तमम् । रामं दूराद्ददृशुस्ते तत्सेनां च त्वरान्विताम् ॥३८॥
ततस्ते राघवं नत्वोपायनानि न्यवेदयन् । रामेणालिंगिताः सर्वे तत्पार्श्वे संस्थितास्तदा ॥३९॥
ततस्तं भूरिकीर्तिस्तु स्वपुत्राभ्यां समन्वितः । नत्वा रामादिकान् पूज्य वस्त्राभरणवाहनैः ॥४०॥
निनाय नगरीं स्वीयां गोपुराट्टालमण्डिताम् । नर्तत्सु वारनारीषु वाद्येषु निनदत्सु च ॥४१॥
स्तुवत्सु वन्दिवृन्देषु विवेश नगरीं प्रभुः । तदा तत्पुरनार्यस्ताः श्रुत्वा रामं समागतम् । ४२ ।
विहाय निजकार्याणि दुद्रुवुर्गोपुरादिषु । शीघ्रमारुरुहुः सर्वा ददृशुस्ता रघूत्तम् ॥४३॥
काचित्स्वबालकं त्यक्त्वा रुदन्तं निजमञ्चके । दुद्राव राघवं द्रष्टुं वरप्रासादमस्तके ॥४४॥
तांबूलबीटिकां काचित्कृत्वा यावत्पतिं ददौ । तावच्छ्रुत्वा समायातं रामं दुद्राव सा जवात् ॥४५॥

अपनी विरुदावली सुनते हुए धीरे-धीरे पूर्व दिशाकी ओर चले। उधर पुष्पक विमानपर बैठी हुई स्त्रियाँ रामको निहार-निहारकर उनपर पुष्पवृष्टि करती चल रही थीं ॥ २७ ॥ २८ ॥ उस समय आगे-आगे विविध प्रकारके नये-नये बाजे बज रहे थे। नट अच्छे-अच्छे गाने गाते थे तथा वेश्यायें नाच रही थीं। इस तरह रामचन्द्रजी अयोध्यासे एक योजनकी दूरीपर गये और वहाँ उन्होंने अपनी सेनाका शिविर देखा। उस स्थानपर हाथीसे उतरकर तम्बूके बने हुए डेरेमें ठहरे। इस प्रकार रामचन्द्रजी रास्तेमें अनेक मनोरम देशों-को देखते हुए गङ्गाजीको पार करके बीस दिनमें राजा भूरिकीर्तिकी सुन्दर नगरीके पास पहुँचे ॥ २९-३२ ॥ तुरन्त राजा भूरिकीर्तिके दूतने जाकर अपने स्वामीको श्रीरामके आगमनकी सूचना दी। राजाने यह समाचार सुना तो बहुत प्रसन्न हुए। तुरन्त पताका, ध्वजा तथा तोरण आदिसे सारी नगरी सजवायी और निमन्त्रणमें आये हुए राजाओंको साथ लेकर रामकी अगवानीको चल दिये। रामका आगमन सुनकर जो राजे वहाँ आये थे, वे घबड़ा उठे। उनका मुख मलीन हो गया ॥ ३३-३६ ॥ उन्होंने अपने मनमें विचार किया कि रामके बेटोंके सामने वे कन्याएँ हमें कैसे पसन्द करेंगी। ऐसी चिन्ता करते हुए वे रामकी ओर चले जा रहे थे, तबतक उन लोगोंने दूरसे ही रामको तथा उनकी विशाल सेनाको देखा। रामके पास पहुँचकर उन सबोंने प्रणाम करके उनको विविध प्रकारके उपहार समर्पण किये। राम उन सबको हृदयसे लगा-लगाकर मिले और अपने पास बिठाला ॥ ३७-३९ ॥ इसके बाद राजा भूरिकीर्ति अपने दोनों पुत्रोंके साथ आकर मिले। उन्होंने। रामादिकी अनेक प्रकारके वस्त्राभूषणोंसे पूजा की। इसके अनन्तर आदर समेत सबको बड़े-बड़े कंगूरों तथा अटारियोंसे सुसज्जित नगरीमें ले चले, जहाँ वेश्यायें नाच रही थीं और विविध प्रकारके बाजे बज रहे थे ॥ ४० ॥ ४१ ॥ एक ओर बन्दीजन विरुदावली बखान रहे थे। उस नगरीकी स्त्रियोंने जब सुना कि रामचन्द्रजी आ रहे हैं तो अपने सारे कामोंको छोड़कर दौड़ पड़ीं। वे अटारियों, छज्जों तथा छतोंपर चढ़-चढ़कर रामको निहारने लगीं ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ कोई स्त्री अपने बच्चेको रोता छोड़कर छतकी तरफ दौड़ी। कोई स्त्री पानका बीड़ा लगाकर पतिको देना चाहती थी, इतमें सुना कि राम आ गये हैं तो वेगके साथ दौड़ पड़ी। कोई स्त्री

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काचित्त्यक्त्वा भोजनं तु काचित्पाकस्य सत्क्रियाम् ।
काचित्सकबरीहस्ता मुक्तकेशा ययौ जवात् ॥४६॥
पतिनालगिता काचिन्निष्कास्य स्वपतेः करम् । ययौ वेगेन ललना वरप्रासादमस्तकम् ॥४७॥
क्षालयन्ती पतेः पादावेकं प्रक्षाल्य कामिनी । यावज्जग्राह साऽन्यं तु तावच्छ्रुत्वा समागतम् ॥४८॥
सीतया रामचंद्रं हि शीघ्रं दुद्राव सा तदा । काचिद्भर्त्रा चुम्बमाना दूरं कृत्वा पतेर्मुखम् ॥४९॥
दुद्राव राघवं द्रष्टुं प्रासादे स्रस्तपल्लवा ।काचिद्विनिद्रिता भर्त्रा त्यक्त्वा निद्रां त्वरान्विता॥५०॥
विस्तीर्णकज्जला मन्दनेत्रा निद्राभरान्विता । नेत्राभ्यां कुंचितान् केशान् वारयंती जवाद्ययौ ॥५१॥
त्यक्त्वाऽभ्यंगं हि काचित्सा कुर्वन्तं करसन्निधिम् । ययौ वेगेन प्रासादं श्रुत्वा राघवमागतम् ॥५२॥
काचिद्भुजे कंचुकीं सा कृत्वैके चापरे भुजे । कर्तुकामा ययौ शीघ्रं तथैव प्रमदोत्तमा ॥५३॥
काचिदेके पदे कृत्वा नूपुरादीनि भामिनी । अपरे कर्तुकामा सा तथैवाट्टालमाययौ ॥५४॥
कथयंती शुभां वार्तां स्वपत्युः पुरतः स्थिता । श्रुत्वा रामं समायान्तं दुद्राव गजगामिनी ॥५५॥
काचिन्निजपतिं पात्रे कुर्वन्ती परिवेषणम् ।भूमौ त्यक्त्वाऽन्नपात्रं सा ययौ रामं निरीक्षितुम्॥५६॥
काचित्स्नात्वा दिव्यवस्त्रा कुर्वती सा प्रदक्षिणाः । तुलसीं च महादेवं श्रुत्वा रामं ययौ जवात् ॥५७॥
काचिद्रज्जुघटं कूपे कृत्वा तोयार्थमुद्यता । त्यक्त्वा रज्जुघटं कूपे दुद्रावेंदुनिभानना ॥५८॥
काचित्स्वबालकं स्तन्यं रहः पाययती वधूः । कुचयोर्बालकं धृत्वा तथैव सा ययौ जवात् ॥५९॥
काचित्सा परिधायाथ वस्त्रं कच्छं करेण सा । कर्तुकामा ययौ वेगात्तथैवाट्टालमस्तकम् ॥६०॥
एवं कर्माण्यनेकानि कुर्वत्यस्ताः पुरस्त्रियः । विहाय तानि सर्वाणि ययौ रामं निरीक्षितुम् ॥६१॥
दृष्ट्वा रामं गजस्थं ता ववर्षुः पुष्पवृष्टिभिः । ऊचुः परस्परं नार्यः शतशोऽट्टालसंस्थिताः ॥६२॥
धन्या सा रामजननी कौसल्या या रघूत्तमम् । सुषुवे राजराजानं परिपूर्णमनोरथा ॥६३॥

भोजन करती थी और कोई भोजन बना रही थी। सो उसको ज्योंका त्यों छोड़कर भागी। कोई बालोंको सँवार रही थी, वह केशोंको हाथमें थाम्हे ही दौड़ पड़ी। किसीका पति आलिंगन कर रहा था। इतनेमें रामका आगमन सुना तो स्वामीका हाथ झिड़ककर दौड़ आयी। कोई अपने पतिके पैर धो रही थी, उसने एक पैर धोकर दूसरा पकड़ा ही था कि उसे खबर लगी कि सीताके सहित राम आ रहे हैं, वह तुरन्त दौड़कर प्रासादपर चढ़ गयी। कोई पतिके साथ शय्यापर सोयी थी ॥४४-५०॥ इससे उसकी आँखोंका काजल मुँहभरमें पुत गया, वह भी यह समाचार पाते ही आँखोंके सामनेवाले बालोंको हटाती हुई दौड़ी ॥ ५१ ॥ कोई उबटन लगा रही थी, वह एक हाथसे साड़ी सम्हालती हुई दौड़ पड़ी। किसीका पति कामोन्मत्त होकर आलिंगन करना चाहता था। वह भी एक हाथसे साड़ी सम्हालती हुई चली आयी ॥ ५१ ॥ ५३ ॥ कोई कामिनी नूपुर पहन रही थी। वह केवल एक ही पैरमें उसे पहनकर अपनी अँटारीपर दौड़ पड़ी ॥५४॥ कोई पतिसे बातें कर रही थी। वह जहाँतक बात कर चुकी थी, वहाँ ही छोड़कर दौड़ आयी ॥ ५५ ॥ कोई पतिके लिए भोजन बना रही थी, वह भी पात्रको ज्योंका त्यों छोड़कर रामको देखने लिए दौड़ पड़ी ॥ ५६ ॥ कोई स्नान करके तुलसी तथा महादेवकी प्रदक्षिणा कर रही थी, वह भी रामका आगमन सुनकर उसे अधूरा ही छोड़कर भाग चली ॥ ५७ ॥ कोई चन्द्रमुखी रमणी कुएँपर पानी भरने गयी थी, वह रस्सी और घड़ा कुएँमें ही फेंककर चल पड़ी ॥५८॥ कोई एकान्तमें बच्चेको दूध पिला रही थी, वह बालकको लिये हुए ही दौड़ आयी ॥ ५९ ॥ कोई भोजन आदिके कामोंसे निबटकर अँटारीपर जाना चाहती थी, वह आधे कपड़े पहने हुए ही चली आयी ॥६०॥ इस प्रकार अनेक तरहके कामोंको करती हुई स्त्रियाँ अपना अपना काम छोड़कर रामके दर्शनके लिए छज्जों और छतोंपर आ खड़ी हुईं ॥ ६१ ॥ हाथीपर बैठे हुए रामको देखकर स्त्रियां उनपर फूलोंकी वर्षा करती हुई आपसमें इस प्रकार बातें करती थीं—॥६२॥ रामकी माता कौसल्या धन्य

CC-0. In Public Domain. Pandit Shri Shri Sharma Nagafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काश्चिदूचुश्च सा धन्या सीता जनकनंदिनी । यस्या बिंबाधररसमुररीकुरुतेऽत्र सः ॥६४॥
काश्चिदूचुस्तया तप्तं जानक्या दुष्करं तपः । पूर्वजन्मनि यत्पुण्याद्राजराजप्रियाऽभवत् ॥६५॥
काश्चिदूचुर्वयं मन्दभाग्यास्तु जगतीतले । सीतादास्यो न जाताः स्म रामसेवनतत्पराः ॥६६॥
इति नानाविधा वाचस्तासां शृण्वन् रघूत्तमः । ययौ स राजमार्गेण नृपकल्पितमन्दिरम् ॥६७॥
तत्रावरुह्य नागेन्द्राद्विवेश वरमंदिरम् । तस्थौ सुखेन जानक्या बंधुभिर्बालकैः प्रभुः ॥६८॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये विवाहकाण्डे
स्वयंवरार्थं भूरिकीर्तेः पुरं प्रति श्रीरामगमनं नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

द्वितीयः सर्गः

(राजा भूरिकीर्तिकी पुत्री चम्पिकाका स्वयंवर)

श्रीरामदास उवाच

अथापरदिने रामं भूरिकीर्तिः समाययौ । नत्वा प्राह रघुश्रेष्ठं सभामागन्तुमर्हसि ॥ १ ॥
तथेति राघवश्चोक्त्वा बालकै रुक्मभूषितैः । रुक्मतन्तूद्भवश्रेष्ठकंचुकोष्णीषमण्डितः ॥ २ ॥
ऊरू पिधाय त्रिमुखैः कटिबंधोत्तरीयकैः । भूषितैरष्टभिः शीघ्रं शिबिकास्थैः समाययौ ॥ ३ ॥
सभायां ये नृपाः पूर्वमासनेषु च संस्थिताः । श्रुत्वा रामं समायांतं संभ्रमात्तत्पुरो ययौ ॥ ४ ॥
चक्रुः सर्वे राघवाय प्रणामान्पार्थिवोत्तमाः । तेषां नामानि रामाय दीर्घशब्दैः पृथक् पृथक् ॥ ५ ॥
चित्रोष्णीषा रामदूताः प्रोचुर्वै वेत्रपाणयः । वस्त्रालंकारभूषाभिर्भूषिता मुदिताननाः ॥ ६ ॥
राजराज नृपश्चायं कर्णाटविषये स्थितः । विजयस्ते प्रणामांश्च करोति त्व विलोकय ॥ ७ ॥
राघवेंद्र नृपश्चायं श्रीमान् द्रविडदेशजः । कंबुकण्ठो प्रणामांस्ते करोति त्वं विलोकय ॥ ८ ॥
दीनानाथ नृपश्चायं विदर्भविषये स्थितः । अंगनाथः प्रणामांस्ते करोति त्वं विलोकय ॥ ९ ॥

हैं, जिन्होंने राजाधिराज राम जैसे पुत्रको जन्म दिया ॥ ६३ ॥ कोई कहने लगी कि जनकनन्दिनी सीता धन्य हैं कि रामचन्द्रजी जिनके अधररसका पान करते हैं ॥ ६४ ॥ कोई बोली–ज्ञात होता है कि सीताने पूर्वजन्ममें दुष्कर तपस्या की थी, जिसके प्रभावसे वे आज राजराज रामचन्द्रकी प्रिया बधू बनी हैं ॥ ६५ ॥ कुछ स्त्रियाँ कहने लगीं कि हम लोग बड़ी अभागिनी हैं, जो सीताकी दासी होकर भी रामकी सेवा नहीं कर सकीं ॥ ६६ ॥ इस तरह नाना प्रकारकी बातें सुनते हुए रामचन्द्रजी राजमार्गसे चलकर हाथीसे उतरे और राजा भूरिकीर्ति द्वारा सजाये हुए भवनमें गये और सीता, भ्राताओं तथा बालकोंके साथ टिके ॥ ६७ ॥ ६८ ॥
इति श्रीशतकोटिरामचरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे विवाहकाण्डे प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

श्रीरामदास बोले–इसके बाद दूसरे दिन राजा भूरिकीर्ति स्वयं रामके पास पहुँचे और प्रणाम करके कहने लगे—हे रघुश्रेष्ठ ! अब सभामें चलिए । "अच्छा" कहकर रामने भी सुवर्णके अनेक आभूषण पहने, सुवर्णके सूत्रसे बने अच्छे-अच्छे वस्त्र धारण किये, परतलेसे सज्जित कमरबन्द कसा और शिबिकापर बैठकर आठों बालकोंके साथ सभाभवनकी ओर चले ॥ १–३ ॥ जो राजे पहले ही से सभामें आकर बैठे हुए थे, वे रामका आगमन सुनकर अकचका उठे और रामके सामने जा पहुँचे ॥ ४ ॥ उन्होंने भगवानको प्रणाम किया । रङ्ग-बिरङ्गी पगड़ियाँ बाँधे और हाथमें बेंत लिये हुए रामके दूत जोर-जोरसे बोलकर इस प्रकार उनका नाम बतलाने लगे–हे राजाओंके भी राजा राम ! देखिए, कर्णाटक देशका रहनेवाला यह विजय नामका राजा आपको प्रणाम कर रहा है ॥५–७॥ इधर देखिए, हे राघवेन्द्र ! यह द्रविड़ देशका निवासी कम्बुकण्ठ नामका राजा आपको प्रणाम कर रहा है । हे दीनाथ ! यह विदर्भ देशका अंगनाथ नामका राजा आपको

CC0. In Public Domain. Kirtika Sharma Karagar Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाराज नृपश्चायं मागधे विषये स्थितः । परंतपः प्रणामांस्ते करोति त्वं विलोकय ॥१०॥
सीताकांत नृपश्चायमवंतिस्थः प्रतापवान् । उग्रबाहुः प्रणामांस्ते करोति त्वं विलोकय ॥११॥
रघुवीर नृपश्चायं स्थितो हैहयपत्तने । प्रतीपस्ते प्रणामांश्च करोति त्वं विलोकय ॥१२॥
हे राम नृपतिश्चायं शूरसेने स्थितो महान् । सुषेणस्ते प्रणामांश्च करोति त्वं विलोकय ॥१३॥
कोसलेंद्र नृपश्चायं हरिद्वारस्थितो महान् । नीपान्वये यज्ञकीर्तिः करोति नमनं तव ॥१४॥
अयोध्येश नृपश्चायं कलिंगविषये स्थितः । हेमांगदस्तटेऽब्धेश्च करोति नमनं तव ॥१५॥
रावणारे नृपश्चायं नागपत्तनसंस्थितः । पांड्योऽयं मतिमान् शूरः करोति नमनं तव ॥१६॥
एवं तेषां प्रणामांश्च मानयन् स्वेक्षणादिभिः । विवेश बंधुभिर्बालैः सभायां मन्त्रिभिः प्रभुः ॥१७॥
तत्र सिंहासने दिव्ये पश्चिमायां ततो हरिः । उपाविशत्स पूर्वास्यश्छत्रचामरमण्डितः ॥१८॥
रामस्य सव्ये सौमित्रिकैकेयतनयाः स्थिताः । तस्थुस्तथा रामवामे कुशाद्या मंत्रिबालकाः ॥१९॥
शत्रुघ्नसव्ये संतस्थुः सुमंत्राद्याः सुमन्त्रिणः । सभायामुत्तरे याम्ये पंक्तौ सर्वे नृपादिकाः ॥२०॥
नेमिरेखोपमास्तस्थुः स्वसुहृत्पुत्रमन्त्रिभिः । पश्चिमाभिमुखाः सर्वा ननृतुर्वारयोषितः ॥२१॥
अट्टालसस्था विप्राद्या ददृशुः कौतुकं महत् । ततो नदत्सु वाद्येषु धूपेषु प्रज्वलत्सु च ॥२२॥
नर्तत्सु वारनारीषु गायत्सु मागधादिषु । स्तुवत्सु बंदिवृंदेषु सभायां नृपपौत्रिके ॥२३॥
शिबिकास्थे दिव्यवस्त्रदिव्यालंकारमण्डिते । नवरत्नमहामालाधृतरम्यकरोत्पले ॥२४॥
ते समाजग्मतू रम्ये सभाग्रस्थे विरेजतुः । तयोर्नेत्रकटाक्षैश्च भिन्नमर्मस्थला नृपाः ॥२५॥
बभूवुर्विकलाः सर्वे कामबाणैर्विशेषतः । न तदा लेभिरे शर्म शुष्ककण्ठौष्ठतालुकाः ॥२६॥
सभां तां चंपिकानाम्नी वह्निकोणाद्विवेश ह । ईशकोणाच्च सुमतिः सभां तां संविवेश ह ॥२७॥

प्रणाम करता है, इसे देखिए ॥ ८ ॥ ९ ॥ हे महाराज ! देखिये, मगध देशका रहनेवाला यह परन्तप नामक राजा आपको प्रणाम करता है ॥ १० ॥ हे सीताकान्त ! अवन्तिदेशका निवासी और महाप्रतापशाली यह उग्रबाहु नामक राजा आपको प्रणाम कर रहा है ॥ ११ ॥ हे रघुवीर ! यह हैहयनगरका रहनेवाला प्रतीप नामक राजा आपको प्रणाम करता है ॥ १२ ॥ हे राम ! शूरसेन नगरका रहनेवाला यह सुषेण नामक राजा आपको प्रणाम करता है । हे कोसलेन्द्र ! यह हरिद्वारका रहनेवाला नीपवंशज यज्ञकीर्ति नामक राजा आपको प्रणाम कर रहा है ॥१३॥१४॥ हे अयोध्येश ! समुद्रतटस्थ कलिंग देशमें रहनेवाला यह हेमांगद नामका राजा आपको प्रणाम करता है । हे रावणारे ! नागपत्तनका रहनेवाला बुद्धिमान् तथा अति पराक्रमी पाण्ड्य नामक राजा आपको प्रणाम कर रहा है ॥ १५ ॥ १६ ॥ रामचन्द्रजी सबकी ओर निहार तथा संकेत आदिसे लोगों-के प्रणाम स्वीकार करके अपने भ्राताओं और बालकोंके साथ सभाभवनमें पधारे । वहाँ पश्चिमकी तरफ रखे हुए एक दिव्य सिंहासनपर पूर्वकी ओर मुख करके बैठे । उस समय भी उनके ऊपर छत्र लगा था और चमर चल रहे थे ॥ १७ ॥ १८ ॥ रामकी दाहिनी बगलमें लक्ष्मण भरत आदि भ्राता बैठे । बायीं ओर कुश आदि सब लड़के तथा मंत्रिपुत्र बैठे । शत्रुघ्नकी दाहिनी बगलमें सुमंत्रादि मन्त्री बैठे । सभाकी उत्तर ओर दक्षिणी पंक्तिमें गोलाकार बनाकर सब राजे सुहृत्-पुत्र तथा मन्त्रियोंके साथ बैठे थे और पश्चिमकी ओर मुख करके वेश्यायें नाच रही थीं ॥ १९–२१ ॥ अटारियोंपर बैठे हुए ब्राह्मण आदि नगरनिवासी वहाँका कौतुक देख रहे थे । इसके अनन्तर जब बाजे बजने लगे, चारों ओरसे धूपकी सुगन्धि उड़ने लगी, वेश्याएँ नाचने लगीं, मागध-नट आदि विविध प्रकारके गायन गाने लगे और बन्दीजन तरह-तरहकी स्तुति करने लगे । उसी समय शिबिकापर चढ़कर दिव्य वस्त्र तथा अलंकार पहिने, नवरत्नोंकी बनी एक बड़ी-सी माला हाथोंमें लिये वे दोनों सुन्दरी कन्यायें सभामें आ पहुँचीं । उनके नेत्रकटाक्षसे घायल तथा कामके बाणोंसे विदीर्णहृदय होकर कितने ही राजे विकल हो गये । उनके होंठ और ताल सूख गये । उस समय कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था । उस सभामें अग्निकोणसे चम्पिका तथा ईशानकोणसे सुमति नामवाली कन्या प्रविष्ट हुई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथोपमाता वृद्धा सा धृतहस्ताग्रयष्टिका ।सभायां चंपिकानाम्न्यै दक्षिणस्थान्पृथक् पृथक्॥२८॥
क्रमेण वर्णयामास तदा नृपतिसत्तमान् । तथाऽन्या च सभाग्राच्च धृतहस्ताग्रयष्टिका ॥२९॥
सुनन्दाख्याऽतिजरठा सुमत्यै नृपतीन्क्रमात् । वर्णयामासोत्तरस्थानुपमाता पृथक् पृथक् ॥३०॥
अथ सा चम्पिकां प्राह नीत्वा तां नृपतेः पुरः । शिबिकास्थां चोपमाता नन्दा चामरवीजिता ॥३१॥
राजकन्ये चंपिकेऽत्र शृणुष्व वचनं मम । एनं नृपं वर्णयामि पश्य त्वं मदनोपमम् ॥३२॥
पांड्योऽयं मतिमान्नाम्ना नागपत्तनसंस्थितः । शूरो रथी नृपश्रेष्ठः प्रजापालनतत्परः ॥३३॥
यदि ते रोचते चित्ते वरयैनमनुत्तमम् । अस्य त्वं महिषी भूत्वा नागपत्तनसंस्थिता ॥३४॥
क्रीडस्व मुदिताऽनेन वरप्रासादराजिषु । नन्दोक्तं चंपिका श्रुत्वा द्व्यर्थं वाक्यमनुत्तमम् ॥३५॥
न बबन्ध मनस्तस्मिन्नृपतौ मतिमत्तरा । चोदयामास नन्दां तामग्रे गन्तुं नृपान्तरम् ॥३६॥
तदाऽन्यं नृपतिं नन्दा नीत्वा तां शिबिकास्थिता । चंपिकां प्राह वेगेन पश्यैनं बालिके नृपम् ॥३७॥
कलिङ्गविषयस्थोऽयं नाम्ना हेमाङ्गदो महान् । कोटिशो वारणेंद्राणां यस्य गण्डस्थलादिषु ॥३८॥
मुक्ताजालातिगुच्छाश्च राजन्ते कमलानने । अस्य त्वं महिषी भूत्वा गवाक्षैः सागरस्य च ॥३९॥
पश्यन्ती कौतुकं बाले करोषि क्रीडनादिकम् । अस्य स्त्रीवृंदमध्ये त्वं भव मुख्याऽद्य कन्यके ॥४०॥
इत्युक्ताऽपि तथा तन्वी नन्दया चंपिका नृपे । तस्मिन् मनो न बबन्धान्यं गन्तुं तामचोदयत् ॥४१॥
सपत्नीभयमालक्ष्य सपत्नीकस्त्यजिष्यति । अमहानिति वाक्ये नन्दया सूचिताऽपि सा ॥४२॥
ततोऽन्यं नृपतिं गत्वा नन्दा प्रोवाच चंपिकाम् । पश्यैनं नृपतिं मुग्धे हरिद्वारनिवासिनम् ॥४३॥
नीपान्वयसमुद्भूतं ह्यब्धाविव निशाकरम् । यज्ञानां नृपतेरस्य कीर्त्या जगति मण्डले ॥४४॥
यज्ञकीर्तिरिति ख्यातः पृथ्वीशः प्रमदाप्रियः । वरयैनं नृपं पुत्रि रुक्मभूषणभूषितम् ॥४५॥

॥ २२–२७ ॥ चम्पिकाके साथ एक उपमाता (धाई) सुनन्दा थी, जो हाथमें एक छोटी-सी छड़ी लिये थी। वह दक्षिणकी तरफ बैठे राजाओंका वर्णन करने लगी ॥ २८–३० ॥ सुनन्दा चम्पिकाको एक राजाके सामने लायी। उस समय भी चम्पिका पालकीपर बैठी थी और उसपर चमर चल रहे थे ॥ ३१ ॥ सुनन्दा चम्पिकाका सम्बोधन करके कहने लगी—हे राजकन्ये चम्पिके ! मेरी बात सुनो—देखो, यह कामदेवके समान सुंदर अति बुद्धिमान् पाण्ड्य नामक राजा नागपत्तनका रहनेवाला, बड़ा पराक्रमी, रथी, सब राजाओंमें श्रेष्ठ और प्रजापालनमें तत्पर है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ यदि तुम्हें अच्छा लगे तो इसीको पसन्द कर लो। तुम इसकी राजरानी बनकर नागपत्तनमें आनन्दके साथ अच्छे-अच्छे महलोंमें क्रीड़ाएं करोगी। सुनन्दाकी ये बातें उसे द्व्यर्थक तथा व्यर्थ-सी जान पड़ीं। उस राजापर उसकी तबीयत नहीं डटी और दूसरे राजाके पास चलनेका संकेत किया ॥ ३४–३६ ॥ फिर सुनन्दा शिबिकामें बैठी चम्पिकाको दूसरे राजाके सामने ले जाकर कहने लगी ॥ ३७ ॥ हे बालिके ! इसे देखो, यह महान् कलिंग देशका रहनेवाला हेमाङ्गद नामका राजा है। इसके गण्डस्थलपर हाथियोंकी गजमुक्ताओंसे बने गुच्छे लटकते रहते हैं। इसकी रानी बनकर तुम महलोंकी खिड़कियोंसे समुद्रकी लहरोंके कौतुक देखती हुई विहार करोगी। बस, अब इसे पसन्द करके तुम इसकी समस्त स्त्रियोंकी प्रधान बन जाओ ॥ ३८–४० ॥ इतना कहने-सुननेपर भी उसका मन उस राजापर नहीं जमा और आगे बढ़नेका संकेत किया ॥ ४१ ॥ क्योंकि चम्पिकाको यह ख्याल हुआ कि इसके यहाँ सपत्नी (सौत) का डर हैं। दूसरे "अमहान्" शब्दका प्रयोग करके नन्दाने भी थोड़ा-सा संकेत कर दिया था ॥ ४२ ॥ इसके अनन्तर दूसरे राजाके पास पहुँचकर नन्दा कहने लगी—हे मुग्धे ! इस राजाको देखो, यह हरिद्वारका निवासी है ॥ ४३ ॥ जैसे समुद्रसे चन्द्रमाकी उत्पत्ति हुई है, उसी प्रकार यह पवित्र नीप राजाके वंशमें उत्पन्न हुआ है। अनेक यज्ञोंको करनेसे जगत् भरमें इसकी कीर्ति फैल चुकी है ॥ ४४ ॥ इसीलिए लोग इसे यज्ञकीर्ति कहते हैं। सुवर्णके आभूषणोंसे मण्डित इस राजाको तुम वर लो। यह विस्तृत भूभागका मालिक है और

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अस्याद्य महिषी भूत्वा गङ्गावीचिपरम्पराः । नौकास्था पश्यसि त्वं हि वरयैनं नृपोत्तमम् ॥४६॥
अस्य पत्नी वरिष्ठा त्वं भव माऽग्रे व्रजाबले । इत्युक्ताऽपि तया तस्मिन्न बबन्ध निजं मनः ॥४७॥
त्वं वरिष्ठा मा भवेति नन्दयाऽग्रे व्रजेरिता । चोदयामास सा नन्दामग्रे गन्तुं नृपांतरम् ॥४८॥
नन्दाऽप्यन्यं नृपं नीत्वा चंपिकां प्राह वेगतः । पश्यैनं नृपतिं मुग्धे शूरसेनाह्वये वरे ॥४९॥
देशे करोति वै राज्यं सुषेणोऽयमनुत्तमः । तुरगा वायुवेगाश्च यस्य पत्न्यो मृगीदृशः ॥५०॥
यस्यांगणे वारनारीनृत्यघोषस्त्वहर्निशम् । वरयैन चंपिकेऽद्य तवाननवदाननम् ॥५१॥
अस्य त्वं महिषी भूत्वा जन्मसाफल्यतां कुरु । वारस्त्रीलंपट श्रुत्वा तथा वाक्यमनुत्तमम् ॥५२॥
न बबन्ध मनस्तस्मिन्नृपतौ तां प्रचोदयत् । अथ सा चोदिता नन्दा तयाऽन्यं नृपतिं क्षणात् ॥५३॥
निनाय शिबिकास्थां तां चंपिकामाह सादरम् । पश्यैनं नृपतिं बाले स्थितं हैहयपत्तने ॥५४॥
सहस्रार्जुनवंशस्य भूषणं कमलोपमम् । प्रतीप इति नाम्नाऽयं ख्यातः शूरो महारथी ॥५५॥
वरयैनं नृपं माऽन्यं गच्छ हेमस्वरूपिणि । अस्य त्वं महिषी भूत्वा रेवायां पतिना सह ॥५६॥
करिष्यसि जलक्रीडां चम्पिके शृणु मद्वचः । इत्युक्ताऽपि तया तन्वी न बबन्ध मनो नृपे ॥५७॥
वरयैनं नृपं मेति नन्दास्यादमहारथी । नृपोऽयं चेति वाक्ये द्वे श्रुत्वा द्व्यर्थविदुत्तमा ॥५८॥
एवं नानानृपाणां सा वर्णनानि पृथक् पृथक् । स्तुतिरूपनिषेधानि शुश्रूषंती नृपात्मजा ॥५९॥
जगाम शिबिकासंस्था सनन्दा भरतानुजम् । सुमन्त्रादीनतिक्रम्य श्रुत्वा श्रीराममन्त्रिणा ॥६०॥
ततः प्रोवाच सा नन्दा पश्यैनं भरतानुजम् । कोसलेन्द्रस्य रामस्य बन्धुमेकोदरोपमम् ॥६१॥
अयोध्यावासिनं रामराजवाक्यानुवर्तिनम् । वरयैनं चम्पिकेऽद्य श्रुतकीर्त्याः स्वसा भव ॥६२॥
इत्युक्तापि तया तन्वी शत्रुघ्ने निजमानसम् । न बबन्ध भ्रुवा संज्ञामग्रे गतुं चकार ताम् ॥६३॥

स्त्रियोंसे बड़ा प्रेम करता है। आज यदि तुम इसके साथ ब्याह कर लोगी तो नावपर बैठकर गङ्गाजीकी अपूर्व लहरियोंको देखोगी। मेरी बात मान लो और इसे अपना पति स्वीकार करो। अब आगे मत बढ़ो। ऐसा कहनेपर भी उसका मन उस राजापर नहीं रमा और आगे चलनेका संकेत किया ॥ ४५-४८ ॥ सूनन्दा भी दूसरे राजाके सम्मुख पहुँचकर कहने लगी—हे मुग्धे ! इस राजाकी ओर देखो। यह शूरसेन नामक देशमें रहता हुआ राज करता है। इसका सुषेण नाम है। वायुके समान वेगवाले बहुतसे घोड़े इसके पास हैं। कितनी ही मृगीकी तरह नेत्रोंवाली स्त्रियाँ भी इसके यहाँ हैं। इसके आँगनमें सदा वेश्यायें नाचती रहती हैं। हे चम्पिके ! तू इसे पसन्द कर ले। देख, तेरे ही मुखके समान इसका भी मुँह है। राजमहिषी बनकर तू अपना जीवन सुफल कर ले। उस राजाको वेश्यालम्पट जानकर चम्पिकाका मन उस राजापर भी नहीं रमा और नन्दाको आगे चलनेके लिए संकेत किया। उसके संकेतसे नन्दा चम्पिकाको साथ लिये क्षण भरमें एक दूसरे राजाके पास पहुँचकर बोली—हे बाले ! इस राजाको देखो, यह हैहयपत्तनका रहनेवाला, कमलके सदृश कोमल तथा सहस्रार्जुनका वंशज है। यह बड़ा योद्धा एवं महारथी है और 'प्रतीप' इस नामसे विख्यात है। ॥ ४९-५५ ॥ इसको वरकर तू अपने योग्य सम्मान्य पदपर पहुँचेगी। इसकी महिषी बनकर तू पतिके साथ नर्मदानदीमें सानन्द विहार करेगी ॥ ५६ ॥ इतना कहनेपर भी वह चम्पिकाको अच्छा नहीं लगा। क्योंकि नन्दाने भी कहा था—'एनं नृपं मा वर' यानी 'इसे मत पसन्द कर' दूसरे 'अमहारथी' शब्दसे भी तिरस्कार ही किया था। इसलिए वह भी अच्छा नहीं लगा। नन्दाके द्व्यर्थक वाक्योंको वह खूब समझती थी ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इस प्रकार अनेक राजाओंके पृथक् पृथक् वर्णन तथा स्तुतिके अन्तर्गत निषेधवाक्योंको सुनती हुई पालकीपर बैठी ही चम्पिका रामके मन्त्री सुमन्त्रादिकोंको लाँघकर शत्रुघ्नके पास पहुँची ॥ ५९ ॥ ६० ॥ नन्दाने कहा—ये भरतके छोटे भाई हैं, किन्तु रामके सगे भाई जैसे मालूम पड़ते हैं ॥ ६१ ॥ ये अयोध्यामें रहते हैं और राजा रामकी आज्ञाओंका पालन करते हैं। चम्पिके ! तू इन्हींके साथ विवाह करके श्रुतकीर्तिकी बहिन बन जा ॥ ६२ ॥ इतना कहनेपर भी शत्रुघ्नमें उसका मन नहीं

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः सा भरतं नीत्वा नन्दा तामाह मंजुलम् । शत्रुघ्नस्याग्रगं चैनं कैकेय्या जठरोद्भवम् ॥६४॥
रामसेवारतं शांतं युवानं दयिताप्रियम् । वरयैनं वालिकेऽद्य मांडव्या सरयूजले ॥६५॥
करिष्यसि जलक्रीडां नौकास्था भरतेन हि । ततस्तत्संज्ञया नन्दा लक्ष्मणं चंपिकां जवात् ॥६६॥
नीत्वा सौमित्रिकीर्तिं तां वर्णयामास सादरम् । पश्यैनं लक्ष्मणं बाले सुमित्राजठरोद्भवम् ॥६७॥
अयोध्यावासिनं रामसेवासक्तं मनोहरम् । वरयैनं चंपिकेऽद्य मेघनादप्रमर्दनम् ॥
शेषांशसंभवं चोर्मिलाया वीरस्वसा भव ॥६८॥
सर्वान् श्रुत्वा रामसेवासक्तान् पत्नीयुतानपि । छत्रचामरहीनांश्च रोचयामास तान्न सा ॥६९॥
ततस्तत्संज्ञया नन्दा श्रीरामाग्रे स्वयंवरम् । नीत्वा तामाह मधुरं स्तोतुं तं रघुनन्दनम् ॥७०॥
महत्ते चंपिके दैवं येन पश्यसि राघवम् । धन्योऽहमपि या रामं दृष्ट्वा स्तोतुं पुरः स्थिता ॥७१॥
क्वाहं मंदमतिर्नारी क्व रामो गुणसागरः । नाहं तत्स्तवने शक्ता वाल्मीकिर्यत्र कुण्ठितः ॥७२॥
शतकोटिमितैः श्लोकैश्चरित्रं राघवस्य च । मुनिना वर्णितं तच्च शतकोट्यंशवर्णितम् ॥७३॥
तस्याहं वर्णनं किञ्चित्करोमि यच्छृणुष्व तत् । सूर्यवंशभूषणं श्रीदशरथनृपात्मजम् ॥७४॥
कौसल्यातनयं रामं साक्षान्नारायणं विभुम् । ताटिकान्तकरं वीरं गाधिजाध्वरपालकम् ॥७५॥
अहल्योद्धारिणं श्रेष्ठं शिवचापैकखण्डनम् । जानकीवल्लभं रम्यं जामदग्न्यदवानलम् ॥
नृपवृंदैकजेतारं भरतप्राणदायिनम् ॥७६॥
ताताज्ञापालकं भ्रात्रा सीतयाऽरण्यवासिनम् । विराधमर्दनं श्यामं खरदूषणमर्दनम् ॥७७॥
त्रिशिरामृगमारीचकबन्धवालिमर्दनम् । समुद्रबंधनं लंकाराक्षसान्तकरं प्रभुम् ॥७८॥
रावणांतप्रकर्तारं सीतया राज्यकारिणम् । तीर्थयज्ञप्रकर्तारं सीताक्रीडनतत्परम् ॥७९॥

लगा और आगे चलनेका संकेत किया ॥ ६३ ॥ इसके बाद नन्दा चम्पिकाको लिये हुए भरतके सामने पहुँचकर कहने लगी—ये शत्रुघ्नके बड़े भाई भरत कैकेयीके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं ॥ ६४ ॥ ये भी रामकी सेवा करते हैं। इन शान्त, युवा एवं दयिताप्रिय भरतको वर ले तो तू मांडवी तथा भरतके साथ सरयूके जलमें विहार करेगी। वे भी ठीक नहीं जँचे तो चम्पिकाका संकेत पाकर नन्दा लक्ष्मणके सामने पहुँची ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ वह चम्पिकासे कहने लगी—ये सुमित्राके गर्भसे उत्पन्न लक्ष्मण हैं। ये अयोध्यामें रहते हुए रामकी सेवा करते हैं। तू इन सुन्दर, मेघनादका नाश करनेवाले और शेष भगवान्‌के अंशसे उत्पन्न लक्ष्मणके साथ ब्याह करके उर्मिलाकी बहिन बन जा ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ सब भाइयोंको रामके सेवक, छत्रचमरविहीन तथा ब्याहे सुनकर उसने तीनों भाइयोंमेंसे किसीको भी नहीं पसन्द किया ॥ ६९ ॥ इसके बाद धात्रीके संकेत करनेपर वह आगे बढ़ती हुई रामचन्द्रजीके सामने जा पहुँची। तब धात्री रामकी स्तुति करती हुई इस तरह बोली—॥ ७० ॥ हे चम्पिके! तुम्हारा अहोभाग्य है, जो तुम रामचन्द्रजीको देख रही हो और मैं भी धन्य हूँ, जो रामकी स्तुति करनेके लिए इनके सामने उपस्थित हुई हूँ ॥ ७१ ॥ कहाँ मैं एक मन्दमति नारी और कहाँ गुणोंके सागर रामचन्द्र। मैं इनकी स्तुति करनेमें कैसे समर्थ हो सकती हूँ, जब कि वाल्मीकि जैसे महान् कवि भी पूरी तौरसे वर्णन नहीं कर सके ॥ ७२ ॥ उन्होंने सौ करोड़ श्लोकोंमें जो वर्णन किया है, सो केवल उनके सौ करोड़ अंशोंकी स्तुति हुई है ॥ ७३ ॥ मैं अपनी बुद्धिके अनुसार थोड़ी-सी स्तुति कर रही हूँ, सो सुन। ये सूर्यवंशके भूषण, महाराज दशरथके पुत्र, कौसल्याके तनय और सर्वव्यापक साक्षात् नारायण हैं। इन्होंसे दुष्ट ताड़काका वध करके विश्वामित्रके यज्ञकी रक्षा की है ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ इन्होंने अहल्याको शापसे मुक्त किया और शिवधनुष तोड़ा है। ये सीताके बल्लभ, परशुरामके कोपरूपी वनके दवानल, राजाओंके समूहको जीतनेवाले तथा भरतके जीवनदाता हैं ॥ ७६ ॥ ये पिताकी आज्ञाका पालन करनेवाले, भाई तथा सीताके साथ वनोंमें रहनेवाले, विराधके नाशक, श्यामरूपधारी और खर-दूषणके नाशक हैं ॥ ७७ ॥ त्रिशिरा तथा मृगरूप धारण करनेवाले मारीचके वधकर्ता, कबन्ध तथा वालिको मारनेवाले, समुद्रमें सेतु बाँधनेवाले और लंकानिवासी राक्षसोंके विना-

CC-0. In Public Domain. Kirkari Sharma Vijayam Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जानकीत्यागकर्तारं सीताग्रहणतत्परम् । कुशलवात्मजाभ्यां च वाज्यर्थं युद्धकारिणम् ॥८०॥
एकपत्नीव्रतं शांतं सत्यभाषणतत्परम् । एकबाणमसंख्यातनामानं मारुतिध्वजम् ॥८१॥
कोविदारध्वजं बाणध्वजं वज्रध्वजं शुभम् । तार्क्ष्यध्वजं पुष्पकस्थं तार्क्ष्यवायुजवाहनम् ॥८२॥
नानाराजावतंसस्थमुक्तादीप्त्यंघ्रिशोभितम् । वरसिंहासनासीनं छत्रचामरमण्डितम् ॥८३॥
वरयैनं चंपिकेऽद्य सीतया भज राघवम् । नववर्षेश्वरश्चायं सप्तद्वीपाधिपोऽपि च ॥८४॥
बाणः पत्नीवचो यस्य नान्यं मा खेदमाचर । नवरत्नमालिकामस्य ग्रीवायां कुरु मा व्रज ॥८५॥
इत्युक्ता नंदया बाला स्वल्पपुण्या विधेर्वशात् । न बबन्ध मनो रामे सीतां संस्मृत्य चंपिका ॥८६॥
एकपत्नीव्रतं रामं सीतया ह्यभजेति च ।
खेदं मा चर तत्कण्ठे मालां मा कुरु चोदिता ॥८७॥
ततस्तत्संज्ञया नंदा तां निनाय कुशं प्रति । प्रोवाच मधुरं वाक्यं कुशवर्णनहर्षिता ॥८८॥
एनं पश्याल्पवयसं श्रीरामतनयं कुशम् । जानकीजठरोद्भूतं ज्येष्ठं भार्यार्थिनं शुभम् ॥८९॥
लवाग्रजं धनुर्वेदनिपुणं विनयान्वितम् । पित्रा संग्रामकर्तारं वाल्मीकिमुनिशिक्षितम् । ९०॥
एनं वृणीष्व बाले त्वं सुरमानवसंस्तुतम् । नवरत्नमयीं मालामस्य कण्ठे सुखं कुरु ॥९१॥
इति नन्दावचः श्रुत्वा चंपिका सा स्मिताननना ।
मुमोच मालिकां कण्ठे स्वकराभ्यां कुशस्य हि ॥९२॥
तदा निनेदुर्वाद्यानि तुष्टुवुर्बन्दिमागधाः । लज्जयाऽधोमुखो रेजे सभायां कुशबालकः ॥९३॥
तदा तुष्टो भूरिकीर्तिः कुशांके चम्पिकां शुभाम् । स्थापयामास वेगेन पश्यत्सु नृपतीषु च ॥९४॥

थक महाप्रभु हैं ॥ ७८ ॥ रावणको मारनेवाले, सीताके साथ राज्य करनेवाले, तीर्थ-यज्ञकर्ता एवं सीताके साथ विहारकारी हैं ॥ ७९ ॥ इन्होंने सीताका त्याग किया और फिर वापस बुला लिया। इन्हींने अपना यज्ञ पूर्ण करनेके लिए अपने बेटों लव-कुशके साथ भी युद्ध किया था ॥ ८० ॥ ये एकपत्नीव्रती, शान्त, सत्यभाषी, एक बाण तथा असंख्यनामधारी हैं। ये कोविदारध्वज, बाणध्वज, वज्रध्वज तथा गरुड़ध्वज हैं। पुष्पक, गरुड़ तथा हनुमान्‌जी इनके वाहन हैं ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ये बहुतसे राजाओंके मुकुटमणि हैं और मोतियोंके प्रकाशसे इनका चरण सुशोभित रहता है। ये एक अच्छे सिंहासनपर बैठते हैं और उसपर सुन्दर छत्र-चमर शोभित रहता है ॥८३॥ हे चम्पिके ! तू इन्हें वर ले और सीताके साथ रहती हुई इनकी सेवा कर। ये नवों खण्डों एवं सातों द्वीपोंके अधिपति हैं ॥ ८४ ॥ ये किसी अन्य स्त्रीविषयक बातोंकी बाणकी नाईं समझते हैं। अब तू किसी प्रकारका सोच-विचार न करके यह नवरत्नोंकी माला इनके गलेमें डाल दे ॥८५॥ इस प्रकार नन्दाके समझाने-पर भी भाग्यवश तथा सीताका स्मरण करके राम भी उसे पसन्द नहीं आये ॥ ८६ ॥ दूसरे नन्दाने भी अपने वर्णनमें कहा था कि एकपत्नीव्रती हैं, इसलिए "सीतया अभज" (सीताके साथ रहना पसन्द न कर) ॥८७॥ तत्पश्चात् चम्पिकाके संकेतसे नन्दा उसे कुशके सामने ले गयी और इस तरह कुशका भी वर्णन करती हुई कहने लगी-॥ ८८ ॥ इनको देखो, इनकी अभी थोड़ी उमर है। ये रामके तनय तथा सीताके पुत्र हैं। इनका नाम कुश है। ये लवके बड़े भाई हैं। अभी इनका विवाह नहीं हुआ है। इसलिए ये भार्यार्थी हैं। ये धनुर्वेदमें निपुण, विनीत स्वभाव, पिताके साथ संग्राम करनेवाले और महामुनि वाल्मीकिके शिष्य हैं ॥ ८९ ॥ ९० ॥ अतएव मनुष्यों और देवताओंसे संस्तुत इन कुशको पसन्द करके तू इनके कंठमें यह नवरत्नमयी माला डाल दे ॥ ९१ ॥ इस प्रकार नन्दाकी बात सुनी तो हँसकर उसने अपने हाथोंसे कुशके गलेमें वरमाला डाल दी ॥ ९२ ॥ उस समय विविध प्रकारके बाजे बज उठे और बन्दीजन तथा भाटोंने स्तुति की। उस सभामें लज्जासे नीचा मुख किये बैठा हुआ बालक कुश ही सुन्दर लग रहा था ॥ ९३ ॥ उस समय प्रसन्न होकर राजा भूरिकीर्तिने सब राजाओंके सामने ही चम्पिकाको कुशकी गोदमें बिठा

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ददर्श जालरंध्रैस्तं प्रासादस्था विदेहजा । मुमोद नितरां स्त्रीभिर्मुमोद राघवोऽपि सः ॥९५॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये विवाहकाण्डे चम्पिकास्वयंवरो नाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

तृतीयः सर्गः

(द्वितीय राजकन्या सुमतिके स्वयंवरका वर्णन)

श्रीरामदास उवाच

अथान्यां सा सभाग्राच्च सुमतिश्चोत्तरस्थितान् । नृपानीशानदिग्भागात्सुनंदा धृतयष्टिका ॥ १ ॥
क्रमेण वर्णयामास शिबिकास्थां सुलोचनाम् । बाले शृणुष्व मे वाक्यं पश्यैनं त्वं नृपोत्तमम् ॥ २ ॥
अवन्तिस्थं चोग्रबाहुनामानं च ह्यनुत्तमम् । नानेन सदृशः कश्चित्पृथिव्यां वर्तते नृपः ॥ ३ ॥
वरयैनं नृपं माऽग्रे गच्छ त्वं गजगामिनि । अस्य त्वं महिषी भूत्वा क्षिप्रानद्याश्च सैकते ॥ ४ ॥
वस्त्रगेहस्थिताऽनेन सुखं क्रीडस्व भामिनि । अनुत्तमं चेति वाक्यं द्व्यर्थं सा सुमतिः पुरा ॥ ५ ॥
श्रुत्वा मैनं वरयेति सुनंदाया वचः पुनः । श्रुत्वा तां चोदयामास सा तां नीत्वा नृपांतरम् ॥ ६ ॥
सुनन्दा सुमतिं प्राह पश्यैनं त्वं नृपं परम् । अंगनाथाह्वयं श्रेष्ठं विदर्भविषयस्थितम् ॥ ७ ॥
पूर्ववत्त्यज मा बाले वृणीष्वैनं नृपोत्तमम् । स्त्रीकामं स्वल्पवयसं भुजकेयूरराजितम् ॥ ८ ॥
अस्य त्वं महिषी भूत्वा पयोष्णीजलवीचिषु । सुखं कुरु जलक्रीडां नृपेणानेन भामिनि ॥ ९ ॥
एनं वृणीष्व मा चेति ह्युपमात्रा सुचोदिता । अग्रे गन्तुं सुनन्दां सा चोदयामास संज्ञया ॥१०॥
ततोऽन्यं नृपतिं नीत्वा सुनंदा तां वचोऽब्रवीत् । पश्यैनं नृपतिं बाले देशे मागधसंज्ञके ॥११॥
राज्यं करोत्ययं श्रीमान्नाम्ना ख्यातः परंतपः । वरयैनं नृपं माऽग्रे गच्छान्यं पार्थिवोत्तमम् ॥१२॥
अस्य त्वं महिषी भूत्वा तप्तनीरप्रपूरिते । ब्रह्मतीर्थे सदा क्रीडां हेमन्ते भज भामिनि ॥१३॥

दिया ॥ ९४ ॥ अटारीके झरोखोंसे सीताने यह मङ्गलमय कार्य देखा तो बहुत प्रसन्न हुईं और रामचन्द्रजी भी अत्यधिक प्रसन्न हुए ॥ ९५ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयविरचित'ज्योत्स्ना'भाषाटीकासहिते विवाहकाण्डे द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

श्रीरामदास बोले–तदनन्तर सुनन्दा दूसरी कन्या सुमतिको उत्तरकी ओर बैठे राजाओंके सामने ले जाकर ईशान कोणसे क्रमशः एक-एक राजाको दिखाकर इस प्रकार वर्णन करती हुई बोली—हे बाले! मेरी बात सुनो, राजाओंमें श्रेष्ठ इस राजाको देखो ॥ १ ॥ २ ॥ यह अवन्ति देशका रहनेवाला है। उग्रबाहु इसका नाम है। पृथ्वीतलपर इसके समान कोई राजा नहीं है ॥ ३ ॥ हे गजगामिनि! तू आगे मत बढ़, इसीको वर ले। इसकी रानी बनकर तू क्षिप्रा नदीके तटपर बने हुए डेरोंमें आनन्दपूर्वक विहार करेगी। सुनन्दाने "अनुत्तमम्" तथा "एनं मा वरय" इन दो वाक्योंका दो अर्थमें प्रयोग किया था। उसमें एकसे प्रशंसा और दूसरेसे निन्दा होती थी। इसी कारण सुमतिको वह राजा पसन्द नहीं आया और उसने आगे बढ़नेका संकेत किया ॥ ४–६ ॥ सुनन्दा उसे दूसरे राजाके सम्मुख लाकर कहने लगी—यह विदर्भ देशका निवासी अङ्गनाथ नामका राजा है ॥ ७ ॥ तू इसे मत छोड़। इसीको अपना पति बना ले। यह स्त्रीकी इच्छा रखता है। इसकी थोड़ी उमर है और बाहुओंमें केयूर पड़ा हुआ हैं ॥ ८ ॥ इसको पति बनाकर तू पयोष्णी नदीके तरङ्गोंमें इसके साथ सानन्द जलविहार कर ॥९॥ यहाँ भी धात्रीके "एनं मा वृणीष्व (इसे मत वर)" यह वाक्य सुनकर उसने आगे चलनेका संकेत किया ॥ १० ॥ तदनन्तर सुनन्दा उसे दूसरे राजाके सामने ले जाकर बोली—हे बाले! इस राजाको देख, यह नरपति मगध देशमें राज करता है। यह बड़ा श्रीमान् है। इसे लोग परन्तप कहते हैं। बस, तू इसी श्रेष्ठ राजाको अपना पति बना ले—और किसीके पास मत जा ॥ ११ ॥ १२ ॥ इसको अपना पति बनाकर जाड़के दिनोंमें तू सदा ब्रह्मतीर्थके गरम जलमें क्रीड़ा किया करेगी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैनं नृपं वरयेति शिक्षिता सा सुनन्दया । चोदयामास तां वृद्धां सा तां निन्ये नृपांतरम् ॥१४॥
सुनंदा बालिकामाह शृणुष्व मृगलोचने । पश्यैनं नृपतिं रम्यं द्राविड़े विषये स्थितम् ॥१५॥
कम्बुकंठाह्वयं श्रेष्ठं कांतिपुर्यां निवासिनम् । एनं नृपं वृणीष्वाद्य मा व्रजान्यं नृपोत्तमम् ॥१६॥
कांचिपुर्यामनेन त्वं सर्वतीर्थमनोरमे । क्रीडां भजस्व विस्तीर्णे हेमकञ्जविराजिते ॥१७॥
विष्णुं वरदराजाख्यं शिवमेकाम्बराह्वयम् । पूजयस्व सदाऽनेन कम्बुग्रीवनृपेण च ॥१८॥
वृणीष्वैनं नृपं माऽद्य सामान्यनृपवत्त्यज । इति वृद्धावचः श्रुत्वाऽग्रे तां गन्तुं प्रचोदयत् ॥१९॥
सुनंदाऽन्यं नृपं नीत्वा सुमतिं वाक्यमब्रवीत् । पश्यैनं नृपतिं मुग्धे मत्तमातङ्गगामिनि ॥२०॥
कर्णाटविषयस्थं त्वं विजयं पार्थिवोत्तमम् । कमलास्यं कञ्जहस्तं कमलांघ्रिणमुज्ज्वलम् ॥२१॥
स्मितास्यं कंजनयनं विजयाख्यपुरस्थितम् । शृणुष्व वचनं मेऽद्य वृणीष्वैनं नृपोत्तमम् ॥२२॥
अस्य त्वं महिषी भूत्वा वने कृष्णानदीजले । सुखं नृपेण क्रीडस्व मद्वाक्यं शृणु मा व्रज ॥२३॥
मद्वाक्यं शृणु मेत्युक्ता श्रुत्वा वाक्यमनुत्तमम् । व्रजेति सूचिता बाला चोदयामास तां पुनः ॥२४॥
एवं नानानृपाणां च वर्णनानि पृथक् पृथक् । स्तुतिरूपनिषेधीनि श्रुत्वा द्व्यर्थानि बालिका ॥२५॥
न बबंध मनः कस्मिन्नृपतौ तेषु सा तदा । ततस्तां शिबिकासंस्थां सुनंदा च शनैः क्रमात् ॥२६॥
अतिक्रम्य राममंत्रिबालकानपि पूर्ववत् । यूपकेतुं शिशुं नीत्वा बालिकां वाक्यमब्रवीत् ॥२७॥
शत्रुघ्नतनयं बालं यूपकेतुं मनोहरम् । पितृव्यं रामतनयद्वयवाक्यानुवर्तिनम् ॥२८॥
एनं पश्य बालिके त्वं सावधानमना भव । वरयैनं यूपकेतुं माऽग्रे गच्छ नृपात्मजे ॥२९॥
मैनं वरय गच्छाग्रे वृद्धया सेति चोदिता । सुनन्दा चोदयामासाग्रे गन्तुं सुमतिः पुनः ॥३०॥
सुबाहुं पुष्करं तक्षमेवं सा सुमतिः शनैः । चित्रकेतुमङ्गदं च त्यक्त्वा सा तं लवं ययौ ॥३१॥

॥ १३ ॥ यहाँ भी सुनन्दाने "एनं नृपं मा वरय (इस राजाको मत वर)" यह द्व्यर्थक वाक्य कहा था। जिससे सुमतिने आगे चलनेका संकेत किया। तब वह उसे दूसरे राजाके सामने ले गयी ॥ १४ ॥ और कहने लगी—हे मृगलोचने! इस सुन्दर राजाको देख, यह द्रविड़देशका निवासी है ॥ १५ ॥ इसका कम्बुकंठ नाम है। यह कान्तिपुरीमें रहता है। तू इसे वर ले। अब किसी अन्य राजाको देखनेकी इच्छा मत कर ॥ १६ ॥ कान्तिपुरीमें तू अतिशय विशाल सुवर्णकमलसे युक्त मनोरम सर्वतीर्थमें इसके साथ सानन्द विहार करेगी और इसके साथ वरदराज नामक विष्णु भगवान् तथा एकाँबर नामक शिवका पूजन करेगी। साधारण राजाओंकी तरह इसे भी न छोड़, इसको वर ले। इस प्रकार वृद्धा सुनन्दाकी बात सुनकर सुमतिने उसे आगे चलनेका संकेत किया ॥ १७–१९ ॥ तब सुनन्दा उसे दूसरे राजाके पास ले जाकर कहने लगी—हे मुग्धे! हे मत्तमातङ्गगामिनि! तू इस राजाको देख ॥ २० ॥ यह कर्णाटक देशका रहनेवाला विजय नामक राजा है। कमलके समान इसका मुख है और कमलके ही समान इसके हाथ-पैर भी हैं ॥ २१ ॥ इसका मुख सदा मुस्कुराता रहता है। कमलकी कलियोंकी नाईं इसकी आँखें हैं। यह विजयपुरका निवासी है। तू मेरी बात मानकर इसे अपना पति बना ले ॥ २२ ॥ इसकी राजमहिषी बनकर तू बनों तथा कृष्णा नदीके जलमें सानन्द विहार करेगी। मेरी बात मानकर तू और आगे मत बढ़ ॥ २३ ॥ "मद्वाक्यं मा शृणु (मेरी बात सुन)" यह बात सुनकर उसने सुनन्दाको आगे चलनेका संकेत किया ॥ २४ ॥ इस प्रकार अनेक राजाओंके वर्णन जो वास्तवमें निषेधमय थे, किन्तु ऊपरसे स्तुतिवाक्य मालूम पड़ते थे। ऐसे द्व्यर्थक वाक्योंको सुन-सुनकर बालिकाने उन राजाओंमेंसे किसीको भी नहीं पसन्द किया। तब सुनन्दा शिबिकामें बैठी हुई सुमतिको लेकर धीरे-धीरे रामके मन्त्रिपुत्रोंको लाँघकर यूपकेतुके सामने गयी और कहने लगी—॥ २५–२७ ॥ ये शत्रुघ्नके सुन्दर पुत्र यूपकेतु हैं। ये पितृव्य (ताऊ) रामके दोनों बेटे कुश-लवके अनुगामी हैं ॥ २८ ॥ हे बालिके! तू अब अपना मन सावधान करके इन्हें देख। हे नृपात्मजे! अब आगे न जाकर तू इन्हींको अपना पति बना ले ॥ २९ ॥ "मा एनं वरय अग्रे गच्छ (इसे न वर, आगे चल)" यह सङ्केत पाकर सुमतिने

CC-0. In Public Domain. Kirtivant Sharma Muzaffarpur, Delhi. Gurukul

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लवार्पितेक्षणां बालां सुनन्दा वाक्यमब्रवीत् । पश्यैनं बालिके बालं लवं श्रीराघवात्मजम् ॥३२॥
स्त्रीकामं स्वल्पवयसं सीतालालितमुत्तमम् । वाल्मीकिकृपया लब्धविद्यं रम्यं कुशानुजम् ॥३३॥
वृणीष्वैनं सुखेनैव कण्ठेऽस्य मालिकां कुरु । कुशांके चंपिकेयं ते स्वसा यद्वत्स्थिताऽद्य हि ॥३४॥
तथा त्वमपि भो मुग्धे लवांके संस्थिता भव । इति तस्या वचः श्रुत्वा सुनन्दायाः स्मिताननना ॥३५॥
लवस्य कण्ठे हर्षेण लज्जयाऽवनताननना । सुमतिर्निजबाहुभ्यामर्पयामास मालिकाम् ॥३६॥
तदा निनेदुर्वाद्यानि जगुस्ते गायकास्तदा । ननृतुर्वारनार्यश्च तुष्टुवुर्वन्दिमागधाः ॥३७॥
भूरिकीर्तिर्नृपस्तुष्टो लवांके सुमतिं तदा । शीघ्रं निवेशयामास परिपूर्णमनोरथः ॥३८॥
तोषमाप रघुश्रेष्ठः सीता प्रासादसंस्थिता । जालरंध्रैः सपत्नीकं लवं दृष्ट्वा तुतोष सा ॥३९॥
ततः सर्वान्नृपान् पूज्य भूरिकीर्तिर्नृपोत्तमः । प्रार्थयामास विनयवचनैस्तत्पुरतः स्थितः ॥४०॥
विवाहकौतुकं दृष्ट्वा भवद्भिर्गम्यतामिति । तथेति ते नृपाः प्रोचुर्ययुर्वासस्थलानि हि ॥४१॥
रामाग्रे संगरं कर्तुमसमर्था गतश्रियः । म्लानानना गतोत्साहाः कामबाणप्रपीडिताः ॥४२॥
रामोऽपि बन्धुभिर्बालैर्ययौ वासस्थलं मुदा । अथापरे दिने रामं भूरिकीर्तिः समाययौ ॥४३॥
पुरोधसोपविष्टः सन्नत्वा रामं वचोऽब्रवीत् । द्रष्टव्यो लग्नदिवसः सुमुहूर्तः सुखावहः ॥४४॥
मामंगीकुरु रामाद्य त्वत्पादाश्रयकामुकम् । उभयोस्त्वं मण्डपयोः कार्याण्याज्ञापय प्रभो ॥४५॥
तथेति राघवश्चोक्त्वा वसिष्ठं चोदयत्तदा । सोऽपि रामाज्ञया ज्योतिःशास्त्रज्ञः परिवेष्टितः ॥४६॥
मुहूर्तं कथयामास पञ्चमेऽहनि राघवम् । ततस्तुष्टो भूरिकीर्तिर्गणेशं लग्नपत्रिकाम् ॥४७॥

सुनन्दाको आगे चलनेका संकेत किया ॥ ३० ॥ इसी प्रकार सुबाहु, पुष्कर, तक्ष, चित्रकेतु तथा अंगदको छोड़ती हुई वह लवके पास पहुँची ॥ ३१ ॥ जब सुमति लवकी ओर देखने लगी तब सुनन्दा बोली--हे बाले ! इस बालकको देख, यह रामका पुत्र है। यह अपना विवाह करना चाहता है। इसकी थोड़ी उमर है। सीताके द्वारा इसका पालन-पोषण हुआ है। वाल्मीकिकी कृपासे इसे उत्तम विद्या प्राप्त हुई है और यह कुशका छोटा भाई है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ तू सानन्द इसे अपना पति बनाकर इसके गलेमें वरमाला डाल दे, जिस तरह तुम्हारी बहिन चम्पिका कुशकी गोदमें बैठी है, उसी तरह ओ मुग्धे ! तू भी लवकी गोदमें बैठ जा। इस प्रकार सुनन्दाकी बात सुनकर वह मुस्करायी और लज्जावश मस्तक झुकाकर उसने अपने हाथोंसे लवके गलेमें वरमाला डाल दी ॥ ३४-३६ ॥ उस समय अनेक प्रकारके बाजे बजे, गायकोंने गाने गाये, वेश्यायें नाचने लगीं और बन्दीजन स्तुति करने लगे ॥ ३७ ॥ महाराज भूरिकीर्तिने प्रसन्न होकर सुमतिको लवकी गोदमें बिठा दिया ॥ ३८ ॥ यह देखकर रामचन्द्रजी तथा अँटारीपर बैठी सीता दोनों प्रसन्न हुए। जब झरोखोंसे सीताने लवकी गोदमें सुमतिको बैठी देखा तो उनकी प्रसन्नताका ठिकाना नहीं रहा ॥ ३९ ॥ इसके अनन्तर राजा भूरिकीर्तिने वहाँ आये हुए सब राजाओंकी पूजा करके विनयपूर्वक प्रार्थना की—॥ ४० ॥ अब आप लोग विवाहका भी उत्सव देखकर जाइएगा। राजाओंने भी उनकी बात स्वीकार कर ली और अपने-अपने डेरेपर चले गये ॥ ४१ ॥ वे सब राजे रामसे युद्ध करनेमें असमर्थ थे। अतएव उनकी श्री नष्ट हो गयी थी, मुख कुम्हला गया था, उत्साह भंग हो गया था और बेचारे कामके बाणोंसे पीडित हो रहे थे ॥ ४२ ॥ राम भी अपने भाइयों और बच्चोंके साथ प्रसन्नतापूर्वक डेरेपर गये। इसके बाद दूसरे दिन राजा भूरिकीर्ति रामके पास पहुँचे ॥ ४३ ॥ पुरोहित उनके साथ था। वे रामके समक्ष बैठे और कहा कि कोई अच्छा लग्न-दिवस तथा सुखदायक मुहूर्त विचारिए। फिर कहा—हे राम ! अपने चरणोंके भक्त मुझ दासकी प्रार्थनाको अङ्गीकार करके दोनों मण्डपोंके लिए जो कार्य करने हों, उनके लिए आज्ञा दीजिए ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ "अच्छा" कहकर रामने वसिष्ठकी ओर संकेत किया। वसिष्ठने रामकी आज्ञासे ज्यतिषशास्त्रको जाननेवाले कितने ही पंडितोंके साथ विचार करके उसके पाँचवें दिन विवाहका शुभ मुहूर्त बतलाया। इसके अनन्तर प्रसन्न मनसे भूरिकीर्तिने गणेशजी, लग्नपत्रिका, गणकों, पण्डितों, वैदिक आदिकों तथा रामके साथवाले बंधुजनों और

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्पूज्य गणकान्सर्वान्पण्डितान्वैदिकादिकान् । बंधुपुत्रादिभिः सर्वैः श्रीरामं पूजयत्तदा ॥४८॥
नत्वा रामं गृहं गत्वा चकार मण्डपादिकम् । रामाज्ञया लक्ष्मणोऽपि चकार मण्डपादिकम् ॥४९॥
तदा वटपुरी रम्या पाताकाध्वजतोरणैः । पुरुषोत्तमराजधानी रेजे सागररोधसि ॥५०॥
ततो मुहूर्तसमये वधूच्छिष्टां निशां कुशम् । लवं च लिप्य तैलाक्तं सीताद्या मातरस्तदा ॥५१॥
करकुम्भाँश्चतुर्दिक्षु जलपूर्णान्सदीपकान् । संस्थाप्य स्नापयामासुर्महावाद्यपुरःसरम् ॥५२॥
तैलाभ्यंगं निशायुक्तं सीताद्याः स्वीयबालकैः । सहैव चक्रुरानन्दपूरिता रुक्मभूषिताः ॥५३॥
अभ्यंगपूर्वकं सस्नुस्ते रामाद्यास्तदा मुदा । समाहूय ततः सीतां मुक्तानां स्वस्तिकोपरि ॥५४॥
वसिष्ठो मुनिभिर्युक्तः शिशुभ्यां राघवेण हि । गणपार्चां कारयित्वा पुण्याहादित्रयं क्रमात् ॥५५॥
देशाचारान्कुलाचारानिष्टदेवीं प्रपूज्य च । कारयामास विधिवत्प्रतिष्ठां देवकस्य च ॥५६॥
तदा जनकनंदिन्या रजनीकुंकुमान्विते । विरेजतुः स्त्रीकदम्बस्थितायाः पदपंकजे ॥५७॥
सीताद्यास्ताः स्त्रियः सर्वा हरित्पीतारुणैर्वरैः । हेमतंत्वंकितैर्वस्त्रैर्विरेजुर्मंडपाङ्गणे ॥५८॥
ततः समाययुः सर्वे मुदा तत्र मुनीश्वराः । स्वयंवरोत्सवे पूर्वं नागता ये सहस्रशः ॥५९॥
श्रुत्वोसाहं विवाहस्य कुशस्य च लवस्य ते । तान्सर्वान् रामचन्द्रोऽपि वस्त्राभरणधेनुभिः ॥६०॥
पूजयामास विधिवत् सीतया लक्ष्मणादिभिः । भूरिकीर्तिर्नृपैर्युक्तो महावाद्यपुरःसरम् ॥६१॥
स्वयं कुशलवौ गेहं नेतुकामः समाययौ । मण्डपे पूजयामास वीरो राज्ञः सुतस्तदा ॥६२॥
कुशं तथा लवं चापि कनीयान् भूरिकीर्तिजः । हेमतंतूद्भवैर्दिव्यैर्वस्त्रैराभरणादिभिः ॥६३॥
तदा विरेजतुर्बालौ तथा तेऽप्यंगदादयः । ततस्तौ वारणेन्द्रस्थौ दिव्यचामरवीजितौ ॥६४॥
पश्यंतौ नर्तनान्यग्रे वारस्त्रीणां स्मिताननौ । शृण्वंतौ वाद्यघोषांश्च वर्णितौ मागधादिभिः ॥६५॥

पुत्रोंके साथ रामकी पूजा की ॥ ४६-४८ ॥ फिर रामको प्रणाम करके घर गये और वहां मंडपादिकी तैयारी करने लगे। रामकी आज्ञासे लक्ष्मण भी अपना मण्डप आदि बनवाने लगे ॥ ४९ ॥ उस समय समुद्रके तटपर स्थित पुरुषोत्तमकी राजधानी वह वटपुरी पताका, ध्वजा तथा तोरणोंसे सुशोभित होकर बड़ी ही सुन्दर दीखने लगी ॥ ५० ॥ इसके बाद मुहूर्तवाले दिन तथा हरदीमातृपूजनवाली रातको कुश और लवको सीतादिक माताओंने उबटन लगाये, तेल लगाया और मण्डपके चारों ओर करकुम्भ (करवा) रक्खा और उसपर दीपक जलाये। फिर बाजोंके साथ उन दोनों वरोंको स्नान कराया ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ उन बालकोंके साथ ही सीतादिक माताओंने भी आनन्दित मनसे तेल लगाया ॥ ५३ ॥ फिर उबटन लगाकर उन सबके साथ रामने भी स्नान किया। इसके अनन्तर राम सीताको बुलाकर मोतियोंसे बने हुए स्वस्तिक चौकके ऊपर बैठे और बहुतसे ऋषियोंके साथ आकर वसिष्ठने दोनों बालकोंके साथ रामके द्वारा गणेशजीकी पूजा करवायी और क्रमशः तीन प्रकारके पुण्याहवाचन करवाये ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ तत्श्चात् देशाचार तथा कुलाचारके अनुसार इष्टदेवकी पूजा करके विधिवत् देवताकी स्थापना की ॥ ५६ ॥ उस रात्रिके समय कुमकुम रंजित वस्त्र पहने हुए वे दोनों बालक बहुत ही सुन्दर लग रहे थे ॥ ५७ ॥ इनके सिवाय हरे, पीले, लाल और सुनहले कपड़े पहने स्त्रियाँ भी बहुत भली लग रही थीं ॥ ५८ ॥ इसी समय वे हजारों ऋषि प्रसन्नतापूर्वक वहां आ पहुँचे, जो स्वयंवरके उत्सवमें नहीं आये थे ॥ ५९ ॥ वे भी कुश-लवका विवाहोत्सव सुनकर आ गये। रामचन्द्रजीने भी सीता तथा बन्धुओंके साथ अनेक तरहके वस्त्र-आभूषण तथा गौवें देकर उनकी पूजा की ॥ ६० ॥ ६१ ॥ इसके बाद बहुतसे राजाओंके साथ कुश-लवको लेनेके लिए महाराज भूरिकीर्ति आये। वहाँ पहुँचकर भूरिकीर्तिके छोटे वीर पुत्रने सुवर्णके तारोंके कामदार बहुतसे वस्त्र और आभरण देकर कुश-लवकी पूजा की ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ उस समय वे दोनों बालक तथा अङ्गद आदि वीर बच्चे बहुत सुन्दर दीख रहे थे। इसके अनन्तर कुश और लव हाथीपर बैठकर चले। उनपर दिव्य चमर चलने लगे ॥ ६४ ॥ वे दोनों बालक वेश्याओंका नृत्य देखते और विविध प्रकारके बाजोंकी मीठी ध्वनि

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सीतादिभिर्वारणीषु संस्थिताभिस्तथा पथि । प्रासादोपरि संस्थाभिर्नारीभिः पुष्पवृष्टिभिः ॥६६॥
हरिद्रापीतधान्यैश्च मांगल्यैर्मौक्तिकैरपि । लाजाभिर्हेमपुष्पैश्च वर्षितावीक्षितौ मुहुः ॥६७॥
जग्मतुर्बालकावेवं पश्यन्तौ कौतुकानि हि । ददर्शतुर्वाटिकाश्च पुष्पैर्वृष्टिविनिर्मिताः ॥६८॥
तथा कृत्रिमवृक्षांश्च पताकाश्च ध्वजांस्तथा । तथौषधिभवान्वृक्षान् वह्निस्पर्शविदीपितान् ॥६९॥
शकटस्थानोषधीभिः पूरितान्कृत्रिमान् जनान् ।
तथा व्याघ्रादिकान्हिंस्रानोषधीभिः प्रपूरितान् ॥७०॥
तडित्समानान् गगने प्राकारानौषधीभवान् ।
केकिचक्रोपमादींश्च चन्द्रज्योत्स्नास्तु कृत्रिमाः ॥७१॥
एवं ददर्शतुर्नानाकौतुकानि नृपात्मजौ । ततस्तौ भूरिकीर्तेश्च गत्वा मण्डपमुत्तमम् ॥७२॥
नानामहोत्सवैर्बालौ चामरच्छत्रमण्डितौ । अवरुह्य गजेन्द्राभ्यां तस्थतुर्मण्डपांगणे ॥७३॥
मधुपर्कविधानानि विष्टरादीनि वै क्रमात् । तयोर्गुरू चक्रतुस्तौ ब्राह्मणैः परिवेष्टितौ ॥७४॥
ततो वध्वोः पूजनं च सीतया रघुनन्दनः । चकार गुरुणा युक्तस्तदा स मण्डपांगणे ॥७५॥
ततो लग्नमुहूर्ते तं कुशं चम्पिकया गुरुः । तथा लवं सुमत्यापि पृथग्वेदिकयोस्तदा ॥७६॥
कृत्वा सुसंस्थितौ चोभौ दंपत्योरन्तरे पटौ । धृत्वोभयोः पृथक् चित्रौ नूतनौ हेमतंतुजौ ॥७७॥
नानामंगलघोषांश्च मुनिभिश्चक्रतुर्मुदा । आसन्सर्वे जनास्तूष्णीं शृण्वंतो मंगलस्वनान् ॥७८॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये
विवाहकाण्डे चम्पिकासुमतिस्वयंवरवर्णनं नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

एवं बन्दीजनोंकी स्तुतियां सुनते हुए राजा भूरिकीर्तिके महलोंकी ओर चले जा रहे थे ॥ ६५ ॥ सीतादिक माताएँ हथिनियोंपर बैठी थीं। अँटारियोंपर बैठी हुई नगरवासिनी नारियाँ उनपर फूल बरसा रही थीं। बीच-बीचमें हल्दीसे रंगे पीले रंगके अन्न, मांगल्य मौक्तिक, धानके लावे और सुवर्णके बने फूल भी बरसते जा रहे थे। वे नारियाँ कुश-लवको प्रेमभरी दृष्टिसे निहार रहीं थीं। इस तरहके कौतुक देखते हुए वे दोनों बालक चले जा रहे थे। रास्तेमें फूलोंकी वर्षा ही से बनी वाटिकाएँ, कृत्रिम वृक्ष, पताका, ध्वजा, मसालेके बने ऐसे वृक्ष जो आगकी चिनगारी पाकर जलने लगते थे ॥ ६६-६९ ॥ उन्हें और गाड़ीपर बैठे हुए औषधिपूर्ण बनावटी मनुष्यों, मसालेसे भरे हुए व्याघ्र आदि हिंस्र जन्तुओं, औषधिके संयोगसे बिजलीकी नाईं चमकते हुए गगनस्पर्शी भवनों तथा मयूर आदिके छूटते हुए चक्रोंको वे राजे कौतूहल भरी आँखोंसे देखते जा रहे थे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ इस प्रकार मार्गमें अनेक कौतुकोंको देखते हुए वे राजा भूरिकीर्तिके उत्तम मंडपमें पहुँचे। उस समय लोगोंमें महान् उत्साह दिखायी पड़ता था। उन बच्चोंपर छत्र लगे थे और दिव्य चमर चल रहे थे। वहाँ पहुँचकर वे हाथीसे उतरे और मण्डपाङ्गणमें पहुँचे ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ उनके गुरुजनोंने ब्राह्मणोंके साथ मधुपर्क विष्टर आदि विधि सम्पन्न किये ॥ ७४ ॥ इसके अनन्तर रामने सीता तथा गुरुजनोंके साथ उस मण्डपमें उन दोनों बहुओंकी पूजा की ॥ ७५ ॥ तदनन्तर लग्नका मुहूर्त आनेपर गुरु वसिष्ठने कुशको चम्पिकाके साथ एवं लवको सुमतिके साथ अलग-अलग वेदीपर बिठाला ॥ ७६ ॥ इस तरह दोनों वर-वधुओंको अच्छी तरह बिठलाकर उनके बीचमें एक-एक पर्दा डाल दिया और सब लोग चुपचाप गुरु वसिष्ठके मुखसे उच्चरित नाना प्रकारके मांगलिक मंत्रोंको सुनने लगे ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ इति श्रीशतकोटिराम-चरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयविरचित'ज्योत्स्ना'भाषाटीकासहिते विवाह-काण्डे तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्थः सर्गः

(लव-कुशके विवाहका वर्णन)

श्रीरामदास उवाच

श्रीसीता रघुनायकश्च गिरिजा शंभुर्गणेशस्तथा
नन्दीषण्मुखलक्ष्मणौ च भरतः कंजोद्भवः शत्रुहा ।
सर्वे ते मुनयः सुराश्च दितिजास्तीर्थादिनद्यो नदाः
दिक्पालाः शशिभास्करौ च हनुमान् कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलं तदेव सीतापतेर्यत्स्मरणं विधेयम् ॥
एवं मंगलघोषैश्च नानावाद्यपुरःसरम् । ततस्त्वंतःपटौ मुक्त्वाॐपुण्याहमिति स्मरन् ॥ ३ ॥
तयोस्ते पाणिग्रहणविधानं विधिपूर्वकम् । लाजाहोमादिकं सर्वं चक्रुर्मंगलपूर्वकम् ॥ ४ ॥
तदा महावाद्यघोषा निनेदुर्मंडपांगणे । ननृतुर्वारनार्यश्च तदा मागधवन्दिनः ॥ ५ ॥
जगुर्मंगलगीतानि तुष्टुवुस्ते महास्वनैः । तदा दानान्यनेकानि चक्रतुस्तौ नृपोत्तमौ ॥ ६ ॥
भूरिकीर्तिरामचंद्रौ महातोषप्रपूरितौ । अथ तौ बालकौ वध्वौ निजकटयोर्निवेश्य वै ॥ ७ ॥
सीतोर्मिलादिभिः स्त्रीभिर्जग्मतुर्भोजनगृहम् । तत्र गौरीहरौ पूज्य चक्रतुश्चाग्रसिंचनम् ॥ ८ ॥
ततः कुशश्चंपकिया सुमत्या स लवोऽपि च । चक्रतुर्भोजनं चोभौ स्त्रीभिः सर्वत्र वेष्टितौ ॥ ९ ॥
मात्रा सहोपनयने विवाहे भार्यया सह । अन्येन नैव भोक्तव्यं भुक्तं चेत्पतितः स्मृतः ॥१०॥
रामोऽपि बन्धुभिः पौरैः सुहृद्भिः पार्थिवोत्तमैः । चकार भोजनं भूरिकीर्तेः सद्मनि वै मुदा ॥११॥
एवं सीताऽपि नारीभिश्चकार भोजनं तदा । भूरिकीर्तेः स्नुषाभिः सा प्रार्थिता वंदिता मुहुः ॥१२॥
ततो नानासमुत्साहान् भूरिकीर्तिश्चकार सः । अथ तौ बालकौ रम्यौ स्त्रीवाक्यैर्मातृसन्निधौ ॥१३॥
स्वश्वश्रूसन्निधौ चापि स्त्रीभिः सर्वत्र वेष्टितौ । स्वस्वपत्न्याः पदयोः शिरोभ्यां नमनं मुहुः ॥१४॥

श्रीरामदास कहते हैं—'सीता, राम, गिरिजा, शिव, गणेश, नन्दी, स्वामिकार्तिकेय, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, ब्रह्मा, समस्त ऋषि, देवता, दैत्य, सारे तीर्थ, नदी, दिक्पाल, चन्द्रमा, सूर्य एवं हनुमान्‌जी ये सब आप लोगोंका कल्याण करें ॥ १ ॥ वही लग्न है, वही सुदिन है और ताराबल तथा चन्द्रबल भी वही है, जिसमें कि सीतापति रामचन्द्रजीका स्मरण किया जाय ॥ २ ॥ अनेक प्रकारके बाजोंके साथ इस तरह मंगल-घोष करनेके अनन्तर 'ॐपुण्याहम्" ऐसा उच्चारण करते हुए वसिष्ठजीने अन्तःपटको दूर कर दिया ॥ ३ ॥ विधिपूर्वक हवनादि कृत्यके साथ-साथ उन दोनों वर-वधुओंके पाणिग्रहण-संस्कार किये ॥ ४ ॥ उस समय मण्डपमें महावाद्यघोष हुए, वेश्याएँ नाचीं, मागध और वन्दीजनोंके स्तुतिपाठ हुए और गाने गाये गये। उस समय उन दोनों राजाओं (राम और भूरिकीर्ति) ने अनेक प्रकारके दान दिये ॥ ५ ॥ ६ ॥ दोनों सम्बन्धी उस समय बड़े आनन्दित थे। तदनन्तर दोनों बालक अपनी-अपनी स्त्रीको कमरपर बिठलाकर सीता-उर्मिलादिकोंके साथ भोजनशाला गये। वहाँ उन्होंने शिव-पार्वतीकी पूजा की और अग्रसिंचन-विधि सम्पन्न की ॥ ७ ॥ ८ ॥ तब सब स्त्रियोंसे वेष्टित चम्पिकाके साथ बैठकर कुशने और सुमतिके साथ लवने भोजन किया ॥ ९ ॥ क्योंकि शास्त्रका कहना है कि उपनयनसंस्कारमें माताके साथ एवं विवाहमें अपनी स्त्रीके साथ बैठकर वर भोजन करे और किसीके सङ्ग नहीं। यदि किसी औरके साथ भोजन करे तो वह पतित कहा जाता है ॥ १० ॥ उधर राम भी अपने भाइयों, पुरवासियों, सम्बन्धियों और राजाओंके साथ महाराज भूरिकीर्तिके भवनमें गये और वहाँ भोजन किया ॥११॥ उसी तरह सीताने भी स्त्रियोंके साथ जाकर भूरिकीर्तिकी बहुओंके प्रार्थना करनेपर उन्हींके यहाँ भोजन किया ॥१२॥ इसके पश्चात् राजा भूरिकीर्तिने विविध प्रकारके उत्सव

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चक्रतुस्तोषसंपूर्णौ ते तवापि स्मितानन । वधूवराश्च ते सर्वे निशापीता विरेजिरे ॥१५॥
कुंकुमांकितपादौ ते ददतुर्वल्लभाङ्कयोः । एवं नानासमुत्साहैरतिक्रांतं दिनत्रयम् ॥१६॥
चतुर्थे दिवसे रात्रौ वंशपात्रविराजितैः । दीपैर्नीराजितौ चोभौ बालकौ तौ विरेजतुः ॥१७॥
ततस्तौ बालकौ पत्न्यौ स्वस्वपृष्ठे निवेश्य च । चक्रतुस्तांडवं नृत्यं कुशलौ मण्डपांगणे ॥१८॥
मातृश्वश्रूरादिकासु पश्यत्सु च ससादरम् । पारिबर्हं भूरिकीर्तिः कुशाय च लवाय च ॥१९॥
ददौ तुष्टमनाः शीघ्रं रामसम्बन्धहर्षितः । नियुतान्वारणेन्द्रांश्च शिबिकाश्चापि तन्मिताः ॥२०॥
तुरंगान्पञ्चनियुतं नियुतान्स्यन्दनान्ददौ । द्वाभ्यां पृथक् पृथक् पौत्रीधवाभ्यां द्रव्यपूरितान् २१॥
नानालङ्कारवासांसि गा दासीः सेवकांस्तथा । ददौ ताभ्यां भूरिकीर्तिर्येषां संख्या न विद्यते ॥२२॥
एवं सम्मानितस्तेन श्रीरामो भूरिकीर्तिना । सपत्नीकाभ्यां पुत्राभ्यां गजस्थाभ्यां समन्वितः २३॥
सीतया बंधुभिः पौरैः सुहृद्भिर्भ्रातृभिर्नृपैः । पूर्ववदुत्सवाद्यैश्च स ययौ स्वीयमण्डपम् ॥२४॥
वटपुर्यां ततो रामो मासमेकं निनाय सः । चकार सीतया क्रीडां नौकासंस्थौ महोदधौ ॥२५॥
ततः स्नुषाभ्यां श्रीरामो ययौ निजपुरीं सुखम् । अयोध्यायां विजयोऽपि श्रुत्वा रामं समागतम् ॥२६॥
यः पुर्या रक्षणार्थं हि रामेणाज्ञापितः पुरा । स पुरीं शोभयामास पताकाध्वजतोरणैः ॥२७॥
वारणेंद्रं पुरस्कृत्य तूर्यनृत्यपुरःसरम् । विजयो रामसचिवो रामं प्रत्युद्ययौ जवात् ॥२८॥
अथो नदत्सु वाद्येषु रामो बालैः सुहृज्जनैः । स्नुषाभ्यां सीतया बंधुपत्नीभिर्भ्रातृभिः पुरीम् ॥२९॥
विवेश सेनया पौरैः पश्यन्नृत्यादिकं पथि । तदा वेश्या ननृतुस्तुष्टुवुर्बन्दिमागधाः ॥३०॥
स्वस्वपत्नीयुतौ बालौ वरवारणयोः स्थितौ । तदा विरेजतुर्मार्गे स्त्रीभिः पुष्पैः सुवर्षितौ ॥३१॥

किये। उन दोनों बालकोंने स्त्रियोंके कहनेसे माताके पास बैठ तथा अपनी सास आदिसे वेष्टित होकर अपनी-अपनी स्त्रियोंकी वन्दना की ॥ १३ ॥ १४ ॥ उस समय वे वर-वधू अतिशय प्रसन्न होकर मन्द-मन्द मुसका रहे थे। रातके पीले प्रकाशमें वे बड़े सुन्दर दीखते थे ॥ १५ ॥ इसके बाद उन दोनों बहुओंने कुमकुमसे रँगे हुए अपने चरण पतिके गोदमें रख दिये। इस तरह नाना प्रकारके उत्सवोंके साथ तीन दिन बीते ॥ १६ ॥ चौथे दिन रात्रिके समय बाँसके बने पात्रोंमें दीपक रखकर लव-कुशकी आरती की गयी। उस समय भी उनकी सुन्दरता देखने ही योग्य थी ॥ १७ ॥ इसके अनन्तर वे दोनों बालक अपनी-अपनी स्त्रीको पीठपर बिठाकर ताण्डव नृत्य करने लगे ॥ १८ ॥ माता-सास आदि स्त्रियें मण्डपमें बैठी यह कौतुक देख रही थीं। महाराज भूरिकीर्तिने अपने दोनों जामाताओंको खूब दहेज आदि भी दिये ॥ १९ ॥ रामके सम्बन्धसे हर्षित होकर उन्होंने उन्हें एक लाख हाथी, इतनी ही पालकियाँ, पाँच लाख घोड़े, एक लाख रथ, अलग-अलग इतनी ही संख्याकी चीजें द्रव्यसे भरकर दोनों वर-वधुओंको दीं ॥ २० ॥ २१ ॥ इनके सिवाय विविध प्रकारके अलंकार, वस्त्र, गायें, दासी, दास आदि तो इतने दिये कि जिनकी गिनती सम्भव नहीं थी ॥ २२ ॥ भूरिकीर्तिसे इस प्रकार सम्मानित होकर श्रीरामचन्द्र स्त्री समेत दोनों पुत्रोंके साथ हाथीपर सवार होकर सीता, भ्राताओं, पुरवासियों, नातेदारों तथा राजाओंको साथ लिये हुए पूर्ववत् उत्साहके साथ अपने मण्डपमें आये ॥ २३ ॥ २४ ॥ इसके अनन्तर रामने उस वटपुरीमें एक मास बिताया। वहाँ वे कभी-कभी नौकापर बैठकर सीताके साथ समुद्रकी सैर करते थे ॥ २५ ॥ इसके बाद उन्होंने दोनों पतोहुओंके साथ आनन्दपूर्वक अपनी पुरीको प्रस्थान किया। उधर अयोध्यामें जब विजयने, जिसको राम नगरीकी रक्षाके लिए छोड़ आये थे, रामके आगमनकी बात सुनी तो उसने ध्वजा-पताका-तोरण आदिसे नगरीको खूब सजाया ॥ २६ ॥ २७ ॥ एक श्रेष्ठ हाथीको आगे करके रामका मन्त्री विजय रामकी अगवानी करने जा पहुँचा ॥ २८ ॥ इसके अनन्तर जब कि विविध प्रकारके बाजे बज रहे थे तब राम अपने पुत्रों, सुहृज्जनों, पतोहुओं, सेना, पुरवासियों तथा सीताके साथ पुरीमें प्रविष्ट हुए ॥ २९ ॥ उस समय वेश्यायें नाच रही थीं और मागध तथा बन्दीजन स्तुति कर रहे थे ॥ ३० ॥ अपनी-अपनी पत्नीके साथ दोनों बालक (कुश और लव) हाथीपर बैठे हुए

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं रामो गृहं गत्वा बालाभ्यां स्वीयसद्मनि । कारयित्वा रमार्चां स ददौ दानान्यनेकशः ॥३२॥
तदाऽलंकारवस्त्राद्यैः संपूज्य रघुनन्दनः । सुहृदः सकलान्पौरानिष्टान् जानपदान्नृपान् ॥३३॥
आचांडालादिकान्सर्वान् संतुष्टानकरोन्मुदा । ततः स भूरिकीर्तेस्तान् मंत्रिणः सैन्यसंयुतान् ॥३४॥
सम्पूज्य प्रेषयामास स्वदेशं रघुनन्दनः । ततः सर्वान् जानपदान् सुहृदश्च प्लवंगमान् ॥३५॥
विभीषणादिकांश्चाज्ञां गंतुं स्वस्वस्थलं ददौ । ततः सर्वे राघवं ते वस्त्राभरणवाहनैः ॥३६॥
स्वस्वकोशैश्च संपूज्य नत्वा रामं ययुर्मुदा । स्वं स्वं देश निजैः सैन्यैः श्रीरामेणातिमानिताः ॥३७॥
अथ रामःस्नुषाभ्यांच पुत्राभ्यां बन्धुभिःस्त्रिया । सुखं चकार राज्यं स धर्मेणाप्रतिमं चिरम् ॥३८॥
ततः श्रावणमासस्य दर्शमारभ्य षोडश । प्राप्तान्यब्दे यानि यानि समुत्साहदिनानि हि ॥३९॥
तेषु सर्वेषु तं रामं सावरोधं सबालकम् । स्वपुरीं भूरिकीर्तिः स निनाय परमादरात् ॥४०॥
पूजयामास विधिवद्वस्त्रालंकारवाहनैः । कियद्दिनानि संस्थाप्य ददावाज्ञां पुनः पुनः॥४१॥
संवत्सरसमुत्साहदिनानि षोडशाधुना । विष्णुदास मया तेऽग्रे कथ्यंते तानि वै शृणु ॥४२॥
श्रावणस्याथ मासस्य कूहूः श्रेष्ठा प्रकीर्तिता । भाद्रशुक्लचतुर्थी तु विजया दशमी तथा पुनः ॥४३॥
दीपावल्याश्च चत्वारि दिनान्यतिमहांति च । मार्गशीर्षे पंचमी च सिता षष्ठी तथा पुनः ॥४४॥
संक्रान्तिर्मकराख्या तु तथा च रथसप्तमी । हुताशनी चैत्रशुक्लप्रतिपच्चापि पुण्यदा ॥४५॥
अक्षय्याख्या तृतीया च तथा वै ज्येष्ठपौर्णिमा। पंचमी श्रावणे शुक्ला षोडशैवं स्मृतानि हि ॥४६॥
संवत्सरसमुत्साहदिनान्यतिमहांति च । एतेषु भूरिकीर्तिः स रामं नीत्वा प्रपूजयत् ॥४७॥
एवं कुशस्य च तथा लवस्यापि सविस्तरात् । विवाहौ वर्णितौ शिष्य यथा पूर्वं श्रुतौ मया ॥४८॥
यदा श्रीरामचन्द्रस्य वैकुंठारोहणं शुभम् । भविष्यति तदाऽयोध्यापुर्यां वै सरयूजले ॥४९॥

सुशोभित हो रहे थे और मार्गमें नगरकी महिलायें उनपर फूल बरसा रही थीं ॥ ३१ ॥ इस तरह बड़े उत्साहके साथ वे अपने राजभवनमें पहुँचे। वहाँ उन्होंने दोनों बच्चोंके हाथों लक्ष्मीका पूजन कराया और अनेक तरहके दान दिये ॥ ३२ ॥ उस समय रामने अपने सम्बन्धियों, समस्त पुरवासियों, मित्रों, जनपदवासियों और राजाओंसे लेकर साधारण श्रेणीवाले चाण्डालों तकका नाना प्रकारके वस्त्रों और आभूषणोंसे सत्कार करके सबको प्रसन्न किया। इसके पश्चात् महाराज भूरिकीर्तिके मंत्रियों तथा सेनाकी पूजा करके उन्हें विदा किया। इसके बाद जनपदवासियों, सम्बन्धियों, वानरों तथा विभीषण आदि मित्रोंका वस्त्र, भूषण, वाहनादिके दानसे सम्मानित करके अपने-अपने नगरको जानेकी आज्ञा दी ॥ ३३–३६ ॥ इस प्रकार रामके आदर-सत्कारको स्वीकार करके उन लोगोंने भी धनसे रामकी पूजा की और अपने-अपने देशको लौटे ॥ ३७ ॥ इसके बाद राम सीता पुत्रों एवं पुत्रवधुओंके साथ रहते हुए बहुत दिनों तक धर्मानुकूल राज्य करते रहे ॥ ३८ ॥ तदनन्तर श्रावणकी अमावास्यासे लेकर वर्षमें सोलह बड़े-बड़े त्योहारों और उत्साहके दिनोंमें महाराज भूरिकीर्ति अंतःपुर समेत रामको अपने यहाँ सादर बुलाते थे ॥ ३९ ॥ ४० ॥ वहाँ पहुँचनेपर वे वस्त्र-अलंकारादि समर्पण करके रामकी पूजा करते थे। कुछ दिन राम वहाँ रहकर फिर अयोध्या चले आते और बुलावा आनेपर फिर पहुँच जाया करते थे ॥४१॥ हे विष्णुदास ! अब मैं तुम्हें वर्षके उन सोलह दिनोंको बतलाता हूँ जिनकी चर्चा अभी की है, उन्हें सुन लो ॥ ४२ ॥ श्रावण मासकी अमावस्या, भाद्रपद शुक्लपक्षकी चतुर्थी, कुवारकी विजया दशमी ॥ ४३ ॥ और दीपावलीके आगे-पीछेवाले चार दिन बड़े महत्त्वके होते हैं ॥४४॥ मार्गशीर्षके शुक्लपक्षकी पंचमी तथा षष्ठी, मकरकी संक्रांति, रथसप्तमी और चैत्र शुक्लकी हुताशनी प्रतिपदा भी बड़ी पवित्र तिथि होती है ॥ ४५ ॥ अक्षय तृतीया, ज्येष्ठकी पूर्णिमा और श्रावणके शुक्लपक्षकी नागपंचमी ये वर्षके सोलह दिन उत्तम हैं ॥ ४६ ॥ ये ही संवत्सरके बड़े-बड़े उत्साहदिवस माने गये हैं। इन्हीं दिनों भूरिकीर्ति सपरिवार रामको अपने यहाँ बुलाकर पूजन करते थे ॥ ४७ ॥ हे शिष्य ! जैसा कि मैंने आजके बहुत दिनों पहले कुश तथा लवका विवाह-वृत्तान्त सुना था, उसी तरह वर्णन किया ॥ ४८ ॥ इसके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुशः स्त्रिया चंपिकया जलक्रीडां करिष्यति । तस्य दक्षिणहस्तस्य कंकणं रुक्मनिर्मितम् ॥५०॥
सरयूजलमध्ये तु पतिष्यति महोज्ज्वलम् । तत्र तोये कुमुदस्य पन्नगस्य कुमुद्वती ॥५१॥
स्वसा दृष्ट्वा कंकणं तद्गृहीत्वा सद्म यास्यति । कुशोऽपि कंकणार्थं हि बाणं सन्धारयिष्यति ॥५२॥
सरयूशोषणार्थं हि संनद्धश्च भविष्यति । ततः सा कुमुदं गत्वा सरयूः प्रार्थयिष्यति ॥५३॥
सोऽपि दृष्ट्वा कुशं क्रुद्धं स्वसामादाय सादरम् । कुशमागत्य तं नत्वा स्वसां तस्मै प्रदास्यति ॥५४॥
रत्नानि कंकणं दत्त्वा तेन सख्यं करिष्यति । एवं कुमुद्वतीभार्याऽग्रे तस्यान्या भविष्यति ॥५५॥
तस्यां कुशात्सुतनयोऽतिथिर्नाम्ना भविष्यति । चंपिकायां दुहितरः संभविष्यन्ति नो सुताः ॥५६॥
अतिथेः सूर्यवंशोऽग्रे चिरं विस्तारमेष्यति । एवं कुशस्य द्वे पत्न्यौ वर्णिते शिष्य वै मया ॥५७॥
अथ स्वीयगृहे पत्न्याऽकरोत्क्रीडां कुशः सुखम् । तथा स्वीयगृहे पत्न्याऽकरोत्क्रीडां लवोऽपि च ॥५८॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये विवाहकाण्डे
कुशलवयोर्विवाहवर्णनं नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सर्गः

(रामका गन्धर्वकन्याओं और नागकन्याओंको जलदेवीके पंजेसे छुड़ाना)

श्रीरामदास उवाच

एकदा रघुवीरः स सीतया बालबंधुभिः । पौरैर्मन्त्रिजनैरिष्टैः पुष्पकस्थो ययौ वनम् ॥ १ ॥
पश्यन्नानाकौतुकानि रंजयन् जानकीं मुदा । ययौ स दंडकारण्यमगस्तेराश्रमान्तिकम् ॥ २ ॥
राममागतमाकर्ण्य कुंभजन्मा मुनीश्वरः । प्रत्युद्गम्य रघुश्रेष्ठं निनाय स्वाश्रमं प्रति ॥ ३ ॥
ततः स मुनिवर्यस्तु स्नात्वा रहसि संस्थितः । अन्नपूर्णां महालक्ष्मीं चिंतयामास चेतसि ॥ ४ ॥

आगे जब कि रामचन्द्रजीका वैकुण्ठारोहण हो जायगा। तब एक समय अयोध्यापुरीके सरयूजलमें कुश अपनी स्त्री चम्पिकाके साथ जलक्रीडा करते रहेंगे । उसी समय कुशके दाहिने हाथका सुवर्णकंकण जलमें गिर पड़ेगा। उस जलमें कुमुद नामक सर्पकी बहिन कुमुद्वती उस कङ्कणको लेकर घर चली जायगी और कुश अपने कङ्कणके लिए धनुषपर बाण चढ़ायेंगे ॥ ४९-५२ ॥ इस प्रकार क्रुद्ध कुश सरयूको सुखा देना चाहेंगे। इसपर सरयू कुमुदके पास जाकर प्रार्थना करेगी ॥ ५३ ॥ कुमुद भी सरयूके कथनानुसार कुशको कुपित देखकर उनके पास आयेगा और उन्हें प्रणाम करके अपनी बहिन कुमुद्वती कुशको दे देगा और बहुतसे रत्न तथा वह खोया हुआ कङ्कण देकर कुशसे मित्रता कर लेगा। इस तरह कुछ समय बाद कुशकी कुमुद्वती नामकी एक दूसरी भार्या भी होगी ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ उससे कुशका सुन्दर पुत्र अतिथि होगा। चम्पिकासे कन्यायें ही होंगी, पुत्र नहीं होंगे ॥ ५६ ॥ आगे चलकर उसी अतिथिसे सूर्यवंशका विस्तार होगा। हे शिष्य! इस प्रकार मैंने कुशकी दोनों पत्नियोंकी कथा कह सुनायी ॥ ५७ ॥ यह सब हो जानेपर कुश अपनी स्त्री चम्पिका तथा लव सुमतिके साथ आनन्दपूर्वक जीवनयापन करेंगे ॥ ५८ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे पाण्डेयरामतेजशास्त्रिविरचितभाषाटीकासहिते विवाहकाण्डे चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

श्रीरामदास बोले—एक बार रामचन्द्रजी बालवधुओं, पुरवासियों, मन्त्रियों तथा इष्टजनोंके साथ पुष्पकविमानपर बैठकर अनेक प्रकारके कौतुक देखते और सीताको प्रसन्न करते हुए वनमें गये। वहाँ दण्डकारण्यमें अगस्त्य ऋषिके आश्रमपर जा पहुँचे ॥ १ ॥ २ ॥ जब कि अगस्त्यजीको रामके आनेका समाचार मिला तो अगवानीके लिए स्वयं गये और उन्हें आदरपूर्वक अपने आश्रममें ले आये ॥ ३ ॥ इसके अनन्तर स्नान करके अगस्त्यजी एकान्तमें बैठे और मन ही मन महालक्ष्मी अन्नपूर्णाका ध्यान किया ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain. Kailash Nath Bhatia Naagarik Library Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तदा तत्तपसा तुष्टाऽऽविर्बभूव सुरेश्वरी । ददौ तस्मै पायसेन पूरितं पात्रमुत्तमम् ॥ ५ ॥
अन्नपूर्णा मुनिं प्राह स्थाल्यास्तु विविधानि हि । पक्वान्नानि यथेष्टानि निष्कास्य तव भामिनी ॥ ६ ॥
सर्वेषामग्रतः शीघ्रं करोतु परिवेषणम् । इत्युक्त्वा साऽन्नपूर्णा तं मुनिमन्तर्दधे तदा ॥ ७ ॥
लोपामुद्रा मुनेः पत्नी स्थाल्या निष्कास्य वेगतः । दिव्यान्नानि विचित्राणि सर्वेषां पुरतस्तदा ॥ ८ ॥
समर्चितानां विप्राणां चकार परिवेषणम् । अथ तुष्टं रघुश्रेष्ठ कंकणे रत्ननिर्मिते ॥ ९ ॥
ददौ मुदा कुम्भजन्मा सीतायै दिव्यकुंडले । एवं संपूजितस्तेन मुनिना रघुनन्दनः ॥ १० ॥
सहितोऽगस्तिना स्थित्वा पुष्पके पूर्ववत्पुनः । पश्यन्तौ दण्डकारण्ये कौतुकानि समंततः ॥ ११ ॥
विचचार रघुश्रेष्ठो दर्शयामास मैथिलीम् । नानावृक्षान्पर्वतांश्च नदीः पक्षिकुलान्मृगान् ॥ १२ ॥
पञ्चाप्सरसरो नाम ददर्शासौ भ्रमन् सरः । तत्तटे राघवो रात्रौ निवासमकरोन्मुदा ॥ १३ ॥
एतस्मिन्नंतरे रात्रौ नृत्यमप्सरसां शुभम् । शुश्राव मधुरं गीतं सीतया मंचके प्रभुः ॥ १४ ॥
तेऽपि सर्वे शुश्रुवुस्तन्नृत्यं गीतं च सुस्वरम् । अदृष्ट्वाऽप्सरसस्तत्र तदा स रघुनन्दनः ॥ १५ ॥
पप्रच्छ कुंभजन्मानं गीतं नृत्यं कुतस्त्विदम् । श्रूयते मुनिशार्दूल वदस्व त्वं सविस्तरम् ॥ १६ ॥
इति रामवचः श्रुत्वा तमगस्तिर्वचोऽब्रवीत् । राम राजीवपत्राक्ष किं त्वं वेत्सि न वै त्विदम् ॥ १७ ॥
सर्वानेतान्मन्मुखेन वृत्तं श्रावयितुं मुदा । चेन्मां पृच्छसि तर्ह्यद्य तत्राग्रे प्रवदाम्यहम् ॥ १८ ॥
पुरा गन्धर्वराजस्य पुत्र्यः पंच मनोरमाः । अरजस्का मुदा क्रीडां चक्रुस्त्र सरोवरे ॥ १९ ॥
एतस्मिन्नंतरे राम नागकन्याः सरोवरात् । क्रीडार्थं निर्ययुः सप्त बहिरप्राप्तयौवनाः ॥ २० ॥
तासां परस्परं मैत्री बभूव रघुनन्दन । तत्र ता नागकन्याश्च तथा गन्धर्वकन्यकाः ॥ २१ ॥
यातायातं सदा चक्रुः क्रीडार्थं सरसस्तटे । तपता मुनिना तत्र मुहुर्वाक्यैर्निवारिताः ॥ २२ ॥

उसी समय उनकी तपस्यासे प्रसन्न होकर देवताओंकी भी अधिष्ठात्री देवी अन्नपूर्णा प्रकट हो गयीं। उन्होंने अगस्त्यजीको खीरसे भरा एक पात्र दिया ॥५॥ और कहा कि इस बटलोईमेंसे विविध प्रकारके पकवान निकाल-निकालकर तुम्हारी स्त्री सबके आगे परोस दे। इतना कहकर अन्नपूर्णा अन्तर्धान हो गयीं ॥ ६ ॥ ७ ॥ इसके अनन्तर जब कि अगस्त्यजीने साथियों तथा विप्रों समेत रामकी पूजा कर ली, तब अगस्त्यजीकी पत्नी लोपामुद्राने उसी पात्रमेंसे पकवान निकाल-निकालकर सबके आगे परोस दिया। भोजनोपरान्त प्रसन्न मनवाले रामको अगस्त्यने एक जोड़ी कङ्कण और सीताको कुण्डल दिये ॥ ८–१० ॥ इस प्रकार अगस्त्यसे सत्कृत होकर राम अगस्त्यको अपने साथ लिये सबके साथ पुष्पक विमानपर जा बैठे और दण्डकारण्यमें चारों ओर विविध प्रकारके कौतुक देखते हुए इधर-उधर घूमने लगे ॥ ११ ॥ १२ ॥ रास्तेमें नाना प्रकारके वृक्ष, पर्वत, नदी, पक्षी आदि सीताको दिखाते हुए वे पंचाप्सर नामक सरोवरपर पहुँचे और वहाँपर रामने रात्रिभर निवास किया ॥ १३ ॥ रात्रिके समय जब कि राम सीताके साथ अपनी शय्यापर सोये थे, तब उन्हें मीठे-मीठे गीत और नृत्यकी ध्वनि सुन पड़ी ॥ १४ ॥ उनके सिवाय रामके साथवालोंने भी वह सुस्वर ध्वनि सुनी, किन्तु अप्सरायें नहीं दीख पड़ीं। तब रामने अगस्त्यसे पूछा—हे मुनिश्रेष्ठ ! आप मुझे यह बतलाइए कि यह नृत्य-गानकी ध्वनि कहाँसे आती सुनायी दे रही है, सो विस्तारपूर्वक हमें बतलाइए ॥ १५ ॥ १६ ॥ रामकी बात सुनकर महर्षि अगस्त्यने कहा—हे राजीवलोचन राम ! क्या आप यह वृत्तान्त नहीं जानते ? ॥ १७ ॥ अच्छा, यदि हमींसे कहलाना चाहते हैं तो मैं आपको सुना रहा हूँ ॥ १८ ॥ आजसे बहुत दिनों पहले गन्धर्वराजकी पाँच सुन्दरी कन्यायें, जिनका कि रजोधर्म भी नहीं हुआ था, आनन्दपूर्वक इस सरोवरमें जलक्रीड़ा किया करती थीं ॥ १९ ॥ हे राम ! उसी समय एक बार उस सरोवरसे सात नाग-कन्यायें भी जलक्रीड़ा करनेको निकलीं। उनकी भी बाल्यावस्था थी और यौवनका रंग अभी नहीं चढ़ा था ॥ २० ॥ तदनन्तर उन गन्धर्वकन्याओं और नागकन्याओंमें परस्पर मित्रता हो गयी और वे नित्य उस सरोवरमें जलक्रीड़ा करनेको आने-जाने लगीं। उसी सरोवरपर तपस्या करते हुए एक तपस्वीने उनको कई बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माऽऽगच्छध्वं मन्निकटे चेति ता बालभावतः । अमानयंत्यस्तद्वाक्यं समाजग्मुर्निरन्तरम् ॥२३॥
इन्द्रेण बोधिताश्चापि तत्तपोध्वंसनं प्रति । मुनिश्चापि तपोनाशं दृष्ट्वा शापादिना तदा ॥२४॥
बिना शापेन तासां स दण्डं सम्मंत्रयद्धृदि । आत्मवाक्यगौरवेण जलदेवीः प्रचोदयत् ॥२५॥
तद्वाक्याज्जलदेव्यस्ता मध्याह्ने स्वीयमंदिरम् । निन्युर्धृत्वा बलादेव यत्र केषां गतिर्न हि ॥२६॥
गंधर्वाः पन्नगा यत्र गंतुं शक्ता न चाभवन् । तपोऽन्ते स मुनिः स्वर्गं गतस्ता ह्यत्र संस्थिताः ॥२७॥
ताः सर्वा जलदेवीनां गेहे संत्यधुना प्रभो । इदं वृत्तमाधुनिकं विद्धि राम स्मयप्रदम् ॥२८॥
ता ह्यत्र जलदेवीनां जलांतर्गतसद्मनि । कुर्वन्ति नृत्यगीतानि तासां संश्रूयते ध्वनिः ॥२९॥
एवं राम यथा पृष्टं त्वया सर्वं मया तथा । वृत्तं तवाग्रे कथितं कुरु येन हितं भवेत् ॥३०॥
सर्वासां नागकन्यानां गांधर्वीणां तथा विभो । मुनिना चोदितश्चेत्थं तदा सीतापतिर्मुदा ॥३१॥
लक्ष्मणं प्राह मे चापमानयाद्य क्षणादिह । मुक्त्वा बाणं मोचयामि दग्ध्वा देवीजलस्थिताः ॥३२॥
कन्यकाः पन्नगानां च तथा गंधर्वकन्यकाः । इति तद्रामवाक्यं स श्रुत्वा सौमित्रिरादरात् ॥३३॥
शीघ्रं चापं सतूणीरं ददौ श्रीराघवं प्रति । ततः कोदण्डमुद्यम्य टणत्कृत्य रघूद्वहः ॥३४॥
शरं जग्राह तूणीरं निजनामांकितं शितम् । तदा चचाल धरणी चुक्षुभुः सप्त सागराः ॥३५॥
ववौ घोरतरो वायू रजोव्याप्ता दिशोऽभवन् । तारा निपेतुर्धरणीं दुद्रुवुर्वनचारिणः ॥३६॥
पर्वताः कंपिता आसन् ववर्षुर्लोहितं घनाः । तज्ज्ञात्वा जलदेव्यस्ताः श्रुत्वा चापध्वनिं महत् ॥३७॥
भयभीताः समाजग्मुस्ताभिः सर्वाभिरादरात् । प्रणेमुस्तास्तदा रामं बालिकास्तास्तु द्वादश ॥३८॥
राघवायार्पयामासुर्दिव्यभूषणभूषिताः । राघवं जलदेव्यस्ताः प्रार्थयामासुरादरात् ॥३९॥
राम राम महाबाहोऽस्माभिर्यदपराधितम् । तत्क्षमस्व रघुश्रेष्ठ मा मुंच स्वपतत्रिणम् ॥४०॥

रोककर कहा–॥ २१ ॥ २२ ॥ यहाँ मेरे पास तुम लोग मत आया करो। किन्तु बालभावसे मुग्ध वे कन्याएँ ऋषिकी बात न मानती हुई नित्य आती-जाती रहीं। इन्द्रने भी ऋषिका तपोभंग करनेके लिए उन कन्याओंको उभाड़ दिया था। अब ऋषिने अपने मनमें विचार किया कि शापादि देकर इन्हें दण्ड देनेसे अपनी तपस्या क्षीण होगी। इसी लिए ऐसा मार्ग निकालना चाहिए कि जिससे इन्हें बिना शापके दण्ड मिल जाय। जलदेवियाँ उन कन्याओंको पकड़कर हठात् अपने घर ले गयीं। जहाँ कि गन्धर्वों तथा पन्नगोंकी भी गति नहीं थी। अपनी तपस्या पूर्ण करके ऋषि तो स्वर्गको चले गये, किन्तु वे कन्यायें इस सरोवरमें जलदेवियोंके पास अब भी विद्यमान हैं ॥ २३–२७ ॥ हे राम ! यह एक आश्चर्यमयी घटना घट गयी थी। वे ही गंधर्वों और पन्नगोंकी कन्यायें जलदेवियोंके घरमें नाच रही हैं, उन्हींके गानेकी मधुर ध्वनि सुनायी देती हैं ॥ २८ ॥ २९ ॥ हे राम ! आपने जैसा पूछा, मैंने कह सुनाया। अब आप ऐसा करिए कि जिससे उन कन्याओंका कल्याण हो। इस प्रकार अगस्त्यजीकी प्रेरणासे रामने लक्ष्मणसे कहा–हे लक्ष्मण ! मेरा धनुष तो ले आओ। मैं क्षण भरमें उन गंधर्वों और नागोंकी कन्याओंकी जलदेवियोंके पंजेसे छुड़ा दूँगा। इस तरह रामकी बात सुनकर लक्ष्मणने तुरंत आदरपूर्वक तूणीर तथा धनुष लाकर रामको दे दिया। इसके अनंतर रामने धनुष उठाकर टंकोर किया ॥ ३०–३४ ॥ तदनंतर उन्होंने तरकससे अतितीक्ष्ण बाण निकाला, जिसपर रामका नाम लिखा हुआ था। इससे पृथ्वी डगमगाने लगी और सातों समुद्रोंमें प्रलयङ्कर लहरें उठने लगीं ॥ ३५ ॥ जोरोंसे वायु चलने लगी, दसों दिशायें धूलसे भर गयीं, तारे टूट-टूटकर गिरने लगे, वनैले जीव वन छोड़कर भागने लगे, संसारका पर्वत-वृन्द काँपने लगा और मेघमण्डल रुधिरमयी वर्षा करने लगा। उस सरोवरकी जलदेवियां धनुषका घनघोर टंकोर सुनकर भयभीत हो गयीं। वे तुरन्त उन बारहों कन्याओंको अपने साथ लिये बाहर आयीं और प्रणाम करके दिव्य अलंकारोंसे विभूषित उन कन्याओंको उन्होंने रामको सौंप दिया ॥ ३६–३९ ॥ वे सब इस प्रकार स्तुति करने लगीं। उन्होंने कहा–हे महाबाहो राम ! हमने जो अपराध किया है, सो आप क्षमा

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.

न कश्चित्सूर्यवंशेऽभूत्स्त्रीषु शस्त्रप्रहारकः । त्वयाऽपि रक्षिता पूर्वं स्त्रीत्वाद्भूर्जाह्नवीतटे ॥४१॥
यदाऽनया तु शपथः कृतो मैथिलकन्यया । ताटिकादिराक्षसीषु यत्कृतं बाणमोचनम् ॥४२॥
ब्रह्मघ्नीषु त्वया पूर्वं तत्सर्वेषां हिताय च । इति तासां वचः श्रुत्वा विहस्य रघुनन्दनः ॥४३॥
स्थापयामास तूणीरे पूर्ववत्तं स्वमार्गणम् । ततस्ताभिः पूजितः स तदा हृष्टो रघूत्तमः ॥४४॥
जलदेवीर्ददावाज्ञां स्वस्थलं गम्यतामिति । एतस्मिन्नन्तरे तत्र गंधर्वाश्चाथ पन्नगाः ॥४५॥
विदित्वा सकलं रामकृतं रामांतिकं ययुः । नत्वा रामं ससीतं च तथा तं कुम्भसंभवम् ॥४६॥
उपायनान्यनेकानि समर्प्य रघुनन्दनम् । ऊचुस्ते मंजुलं वाक्यं प्रबद्धकरसंपुटाः ॥४७॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये विवाहकांडे
जलदेवीजीवदानं बालिकामोचनं नाम पञ्चमः सर्गः ॥ ५ ॥

षष्ठः सर्गः

(गन्धर्वों तथा नागोंकी बारह कन्याओंका लक्ष्मणादिके पुत्रोंके साथ विवाह होनेका निश्चय)

गन्धर्वपन्नगा ऊचुः

राम कंजानन स्वामिन्मोचिता बालिकास्त्वया । विवाहानरजस्कानां पुत्रैस्त्वं कर्तुमर्हसि ॥ १ ॥
अद्य धन्या वयं सर्वे नः कुलं पावनं कृतम् । त्वया राम महाबाहो तारिताः स्मो वयं प्रभो ॥ २ ॥
सप्तजन्मसु यत्पुण्यं कृतमस्ति रघूद्वह । अस्माभिस्तेन सम्बन्धस्त्वयाऽद्य भवतु प्रभो ॥ ३ ॥

श्रीरामदास उवाच

इति तेषां वचः श्रुत्वा सीतया स रघूद्वहः । अङ्गीकृत्य वचस्तेषामगस्तिमवलोकयत् ॥ ४ ॥
तदा प्राह कुम्भजन्मा राघवं वचनं मुनिः । रामान्याग्रे कुमुदस्य स्वसा नाम्ना कुमुद्वती ॥ ५ ॥
त्वयि प्राप्ते हि वैकुण्ठं कुशपत्नी भविष्यति । चम्पिकायां न तनयो भविष्यति रघूद्वह ॥ ६ ॥

कर दें। हमपर इन बाणोंको आप मत छोड़िये ॥४०॥ अब तक आपके सूर्यवंशमें स्त्रियोंपर शस्त्रका प्रहार करनेवाला कोई भी नहीं हुआ है । आपने भी उस समय गङ्गाजीके किनारे सीताको लिये जाती हुई पृथ्वीकी इसी लिए रक्षा की थी कि वह स्त्री थी । इसके सिवाय आपने जो ताड़कापर शस्त्र छोड़ा, उसका कारण यह था कि वह ब्रह्मघातिनी थी। उसे तो आपने ब्राह्मणोंके कल्याणार्थ मारा था । उनकी ऐसी विनीत बातें सुनीं तो मुस्कुराकर रामने अपने बाणको फिर तरकसमें रख लिया। इसके बाद उन जलदेवियोंसे पूजित रामने प्रसन्न होकर उनसे कहा कि अब तुम लोग अपने स्थानको जाओ। इसके अनन्तर उन गंधर्वों और पन्नगोंने (जिनकी कन्यायें जलदेवियोंके कब्जेमें थीं) जब यह समाचार सुना तो रामके पास आये और सीता, राम तथा अगस्त्यको प्रणाम करके उन्होंने रामको विविध प्रकारकी भेंटें दीं। तदनन्तर हाथ जोड़कर इस प्रकार कहने लगे—॥ ४१-४७ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयकृत'ज्योत्स्ना'भाषाटीकासहिते विवाहकाण्डे पञ्चमः सर्गः ॥ ५ ॥

गन्धर्व तथा पन्नगगण कहने लगे–हे कमल सरीखे नेत्रोंवाले राम ! आपने हमारी पुत्रियोंको उन जलकन्याओंके हाथसे जैसे छुड़ाया है, उसी तरह अब इनका विवाह भी अपने पुत्रोंके साथ कर लीजिए ॥ १ ॥ आज हम अपनेको धन्य समझते हैं। आज हमारा कुल पवित्र हो गया । हे प्रभो ! आपने हमारा उद्धार कर दिया ॥ २ ॥ हमने अपने सात जन्मोंमें जो पुण्य किया हो, उसके प्रतापसे आज हमारा और आपका सम्बन्ध हो जाय ॥ ३॥ श्रीरामदासने कहा–इस प्रकारकी बातें सुनकर महारानी सीता और रामने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और अगस्त्यकी ओर निहारने लगे ॥ ४ ॥ अगस्त्यने कहा--हे राम ! जब आप वैकुण्ठधामको चले जायँगे, तब कुमुद्वती कुशकी पत्नी होगी। हे रघूद्वह ! कुशकी वर्तमान स्त्री चम्पिकाके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh. Edit Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुशात्पुत्रः कुमुद्वत्यामतिथिस्तु भविष्यति । राज्यकर्ता वंशकर्ता स एवाग्रे भविष्यति ॥ ७ ॥
अतस्त्वमधुना राम नागकन्याः कुशं विना । सप्त स्वसप्तपुत्रेभ्यः प्रयच्छ विधिना द्विजैः ॥ ८ ॥
पञ्चगंधर्वकन्याश्च यूपकेतुं कुशं लवम् । विना स्वपञ्चपुत्रेभ्यः प्रयच्छ रघुनन्दन ॥ ९ ॥
राक्षसेन विवाहेन यूपकेतुः शिशुस्ततः । अग्रे पत्नीं महानेष करिष्यत्यपरां शुभाम् ॥ १० ॥
एवं रामसुताः सर्वे स्वस्वस्त्रीभ्यां यथासुखम् । क्रीडयिष्यंति पौत्रास्तान् भविष्यंति प्रपौत्रकाः ॥११॥
प्रपौत्रस्य प्रपौत्रं त्वं दृष्ट्वा सीतासमन्वितः । सुखं यास्यसि वैकुण्ठं बन्धुभिर्नगरीस्थितैः ॥१२॥
एवं श्रुत्वा मुनेर्वाक्यमंगीकृत्य रघूद्वहः । तासां नामानि पप्रच्छ गन्धर्वान्पन्नगानपि ॥१३॥
तदाऽब्रवीत्स गंधर्वः स्वपुत्रीणां सविस्तरात् । तासां नामानि रामाग्रे पञ्चानां सरसस्तटे ॥१४॥
चंद्रिका चंद्रवदना चञ्चला चपला चला । एवं नामानि पंचानां क्रमेण रघुनंदनः ॥१५॥
श्रुत्वाऽवलोकयामास पन्नगांस्तेऽपि चाब्रुवन् । कंजानना कंजनेत्रा कंजांघ्री च कलावती ॥१६॥
कलिका कमला चैव मालती सप्त कीर्तिताः । एवं नामानि पंचानां क्रमेण रघुनंदनः ॥१७॥
श्रुत्वा ताः पुष्पके स्थाप्य तैर्निद्रामकरोन्निशि । अथ प्रभाते श्रीरामः हुत्वा स्नात्वा यथाविधि ॥१८॥
गन्धर्वपन्नगांश्चापि तदा वचनमब्रवीत् । एभिर्जनैर्मया साकं विवाहार्थं रसातलम् ॥१९॥
नैव योग्यं समागन्तुं मर्त्यलोकनिवासिना । तस्माच्छृणुध्वं मद्वाक्यं सुहृदः सकलाः शुभम् ॥२०॥
यूयं गत्वा निजस्थानं स्वस्त्रीभिश्च सुहृज्जनैः । आगंतव्यं विवाहार्थमयोध्यां मे यथासुखम् ॥२१॥
अधुनाऽहं तु गच्छामि पुरीमग्रे क्षणेन हि । विहायसा विमानेन पताकाध्वजमालिना ॥२२॥
तथेति रामवचनात्ते गताः स्वस्थलानि हि । रामोऽपि मुनिना ताभिर्बालिकाभिः सुतैः स्त्रिया ॥२३॥
विहायसा पुष्पकस्थो ययौ पश्यन्वनानि सः । अयोध्यां प्रहरेणैव मुदा प्राप रघूद्वहः ॥२४॥

कोई पुत्र नहीं होगा ॥ ५ ॥ ६ ॥ हां, कुमुद्वतीसे कुशके अतिथि नामका पुत्र उत्पन्न होगा और वही पुत्र राज्यकर्ता एवं वंशका बढ़ानेवाला होगा। इससे हे राम! कुशको छोड़कर बाकी सब कुमारोंका विवाह इन कन्याओंके साथ कर दीजिए। इनमेंसे पाँच गन्धर्वकन्याओंको यूपकेतु तथा कुश-लवके अतिरिक्त पाँच पुत्रोंको दे दीजिए ॥ ७–९ ॥ आगे चलकर यूपकेतु राक्षसविवाहके क्रमसे एक अच्छी स्त्रीके साथ विवाह करेगा ॥ १० ॥ हे राम! ऐसा करनेसे सब बेटे अपनी-अपनी स्त्रियोंके साथ सुखपूर्वक विहार करेंगे। उनके पौत्र-प्रपौत्र आदि भी होंगे ॥ ११ ॥ प्रकार आप अपने प्रपौत्रके प्रपौत्रोंको देखकर सीता अपने बन्धुओं और पुरवासियोंके साथ वैकुण्ठधामको जायँगे। इस प्रकार अगस्त्यजीकी बात सुनी तो उन्होंने अङ्गीकार कर लिया और उन गन्धर्वों-पन्नगोंसे उनकी कन्याओंके नाम पूछने लगे ॥ १२ ॥ १३ ॥ गन्धर्वराज अपनी पाँच कन्याओंका नाम बतलाते हुए बोले—चन्द्रिका, चंद्रवदना, चंचला, चपला और चला ये इनके नाम हैं ॥ १४ ॥ कन्याओंका नाम सुनकर राम उनकी ओर देखने लगे। फिर पन्नग इस प्रकार अपनी सात कन्याओंके नाम बतलाने लगे—कंजानना, कंजनेत्रा, कंजांघ्री, कलावती, कलिका, कमला और मालती ये सात नाम हैं। इस रीतिसे सबका नाम सुनकर रामने उन कन्याओंको पुष्पक विमानपर चढ़ा लिया और सब साथियोंके साथ सोगये। इसके अनन्तर प्रातःकालके समय राम उठे और विधिपूर्वक स्नान-हवन आदि किया ॥१५–१८॥ फिर वे उन गन्धर्वों तथा पन्नगोंको बुलाकर कहने लगे--हे गन्धर्व तथा पन्नगगण! मैं मर्त्यलोकका निवासी मनुष्य हूँ। इस कारण मैं अपने बन्धुवर्गके साथ न तो पन्नगोंके यहाँ पाताललोको जा सकूँगा और न गन्धर्वोंके यहाँ स्वर्गलोकको ही अपने बच्चोंका विवाह करने जा सकूंगा। इससे आप सुहृद्गण मेरी बात सुनें ॥ १९ ॥ २० ॥ आपलोग अपने-अपने घर जायँ और इनका विवाह करनेके लिए वहाँसे स्त्रियों तथा बन्धु-बांधवोंके साथ आनन्दपूर्वक अयोध्या पधारें ॥ २१ ॥ कुछ देर बाद मैं अपने विमान द्वारा आकाशमार्गसे अपनी नगरीको चला जाऊँगा ॥ २२ ॥ "बहुत अच्छा" कहकर वे गन्धर्व तथा पन्नग अपने-अपने स्थानको चले गये। इधर रामचन्द्रजी भी

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नीराजितः पुरस्त्रीभिर्विवेश निजमंदिरम् । वसिष्ठगेहे ताः सर्वाः प्रेषयामास राघवः ॥२५॥
अथ रामः सभामध्ये सौमित्रिमिदमब्रवीत् । आकारणीया राजानः सुहृदश्च मुनीश्वराः ॥२६॥
सांतःपुराः सपौराश्च स्वस्वजानपदैः सह । शृङ्गारणीयाऽयोध्येयं परिखाः सप्त सादरम् ॥२७॥
शोधनीयास्तथा सौधसमूहेषु सुधा शुभा । देया चित्राणि लेख्यानि प्रासादेषु समंततः ॥२८॥
देवालयेषु सर्वेषु सुधा देया मनोरमा । लेखनीयानि चित्राणि बलयः स्थाप्यतां पृथक् ॥२९॥
बंधनीयाः पताकाश्च रोपणीया ध्वजा अपि । समंततस्तोरणानि बंधनीयानि लक्ष्मण ॥३०॥
वेद्यः कार्या रुक्ममय्यो बंधनीयाश्च मण्डपाः । शृंगारणीया हस्त्यश्वशिबिकाश्च सहस्रशः ॥३१॥
गंधर्वेभ्यः पन्नगेभ्यो वस्तुं गेहानि वै पृथक् । कुरुष्व नूतनान्यन्नवस्त्राद्यैः पूरितानि च ॥३२॥
अन्यच्चापि यथायोग्यं यद्यज्जानासि लक्ष्मण । तत्तत्कुरुष्व यन्नोक्तं मया तव रघूद्वह ॥३३॥
तद्रामवचनं श्रुत्वा तथेत्युक्त्वा स लक्ष्मणः । तथा चकार तत्सर्वं यथा रामेण शिक्षितः ॥३४॥
अथ गन्धर्वराजस्तु तथा वै सप्त पन्नगाः । सुहृद्भिः सावरोधास्ते ययुः शीघ्रं मुदान्विताः ॥३५॥
सर्पा मानवरूपेण हस्त्यश्वरथसंस्थिताः । गन्धर्वाश्चापि सैन्यैस्ते साकेतोपवनं ययुः ॥३६॥
ततस्तानागतान् श्रुत्वा प्रत्युद्गम्य रघूद्वहः । नानावाद्यानि नादैश्च नृत्यैरप्सरसां पुरीम् ॥३७॥
नीत्वा संस्थापयामास विस्तीर्णेषु गृहेषु सः । अथ तैरेकदा रामः सभायां संस्थितः सुखम् ॥३८॥
ज्योतिर्विदः समाहूय वसिष्ठं तत्पुरोधसः । पृथग्विवाहान्कर्तुं स मुहूर्तानतिमंगलान् ॥३९॥
सम्यग्विचारयामास वर्षमध्ये सविस्तरम् । ज्योतिर्विदस्तदा प्रोचुर्मुहूर्तानतिसौख्यदान् ॥४०॥
पक्षांतरेण वैशाखे द्वौ मुहूर्तौ शुभावहौ । तथा ददुर्मुहूर्तौ द्वौ ज्येष्ठे पक्षांतरेण ते ॥४१॥
द्वावेव मार्गशीर्षेऽपि त्रीन् माघे फाल्गुनेऽपि च । एवं द्वादशनारीणां चक्रुर्लग्नविनिश्चयम् ॥४२॥

उन बालिकाओं, अपने पुत्रों तथा स्त्रियोंके साथ पुष्पक विमानपर बैठकर आकाशमार्गसे रास्तेके वनोंको देखते हुए वहाँसे चल दिये और एक प्रहरमें अयोध्या आ गये ॥ २३ ॥ २४ ॥ वहाँ पहुँचनेपर पुरवासिनी स्त्रियोंने उनकी आरती उतारी और उन कन्याओंको वसिष्ठजीके यहाँ भेज दिया ॥ २५ ॥ तदनन्तर रामने सभामें लक्ष्मणसे कहा–सब राजाओं, सम्बन्धियों और मुनियोंके यहाँ निमन्त्रण भेज दो कि सब लोग अपनी स्त्रियों तथा पुरवासियोंके साथ अयोध्या पधारें। सातों परिखाओं समेत अयोध्या नगरीका शृङ्गार करो ॥२६॥ अयोध्याके सब मकान चूनेसे पुतवाये जायँ और उनपर चारों ओर विविध प्रकारके चित्र बनाये जायँ ॥ २७ ॥ समस्त देवालयोंमें अच्छी तरह पुताई की जाय और उनपर भी सुन्दर चित्र बनाकर पूजनका सुप्रबन्ध किया जाय ॥ २८ ॥ २९ ॥ पताकाएँ बाँधी जायँ, ध्वजारोपण किया जाय और मंदिरोंके चारों ओर तोरण बांधे जायँ। जहाँ-तहाँ सुवर्णमयी वेदियाँ बनवायी जायँ । हजारों हाथी, घोड़े तथा पालकियोंका शृङ्गार किया जाय। गन्धर्वों-पन्नगोंके रहनेको नये-नये मकान बनवाकर उनमें अच्छी तरह अन्न-वस्त्र आदिका प्रबन्ध कर दो ॥ ३०-३२ ॥ हे लक्ष्मण ! जो मैं कह चुका हूँ, वह और जो नहीं भी बतलाया है और तुम जानते होओ सो भी ठीक कर लो ॥ ३३ ॥ रामकी बात सुनकर लक्ष्मणने जैसा उन्होंने कहा था, तदनुसार सब प्रबंध कर दिया ॥ ३४ ॥ इसके अनन्तर गंधर्वराज और सातों पन्नग अपने सम्बन्धियों तथा स्त्रियोंके साथ हर्षपूर्वक अयोध्याको चल दिये ॥ ३५ ॥ उस समय समस्त सर्प मानव रूप धारण किये हाथी, घोड़े तथा रथपर सवार होकर अयोध्या आये। गंधर्व भी अपनी विशाल सेनाके साथ साकेतपुर आ पहुँचे ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ इसके बाद जब रामचन्द्रजीने सुना कि वे लोग अयोध्या आ गये हैं तो विविध प्रकारके बाजों और नाचके साथ नगरीमें ले आये और खूब लम्बे-चौड़े भवनमें उनको ठहराया। इसके अनन्तर एक समय राम सब लोगोंके साथ सभामें बैठे तो वसिष्ठ तथा अनेक ज्योतिषियोंको बुलाया और विवाहके लिए अलग-अलग मुहूर्तका अच्छी तरह विचार करनेको कहा। ज्योतिषियोंने रामके आज्ञानुसार अतिशय सुखदायी मुहूर्त विचारकर कहा कि एक पक्ष बीतनेपर वैशाख मासमें दो मुहूर्त हैं। एक पक्षके अनन्तर ज्येष्ठ मासमें भी दो ही मुहूर्त हैं ॥ ३८–४१ ॥ दो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लवस्याथांगदस्यापि विवाहौ तैर्विनिश्चितौ । ज्योतिर्विद्भिर्वसिष्ठेन वैशाखे राघवाग्रतः ॥४३॥
चित्रकेतोः पुष्करस्य विवाहौ तैर्विनिश्चितौ । ज्येष्ठे मासि क्रमेणैवं पक्षे पक्षे पृथक् पृथक् ॥४४॥
तक्षस्याथ सुबाहोश्च विवाहौ मार्गशीर्षके । पक्षांतरेण रामाग्रे ज्योतिर्विद्भिर्विनिश्चितौ ॥४५॥
यूपकेतोरंगदस्य चित्रकेतोर्विनिश्चिताः । माघमासे विवाहाश्च ज्योतिःशास्त्रविशारदैः ॥४६॥
पुष्करस्याथ तक्षस्य सुबाहोः फाल्गुने शुभे । विवाहा निश्चिताः शिष्य रामाग्रे गणकैस्तदा ॥४७॥
एवं विनिश्चिताः सर्वे विवाहा द्वादश क्रमात् । ज्योतिर्विद्भिर्निश्चिताश्च श्रुत्वा तानर्चयद्विभुः ॥४८॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानंदरामायणे वाल्मीकीये विवाहकांडे
द्वादशविवाहविनिश्चयो नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

सप्तमः सर्गः

(नागों तथा गंधर्वराजकी कन्याओंका विवाह)

श्रीरामदास उवाच

अथ ते गणकाः सर्वे वसिष्ठस्तत्पुरोधसः । कुमारीणां विभागांश्च चक्रुः श्रीराघवाग्रतः ॥ १ ॥
कंजाननां लवायाथ कंजाक्षीमंगदाय च । गणका निश्चयं चक्रुः कंजांघ्रीं चित्रकेतवे ॥ २ ॥
कलावतीं पुष्कराय तथा तक्षाय कालिकाम् । सुबाहवे च कमलां मालतीं यूपकेतवे ॥ ३ ॥
गणकैः सप्त ता एवं नागकन्या विनिश्चिताः । चंद्रिकामंगदायाथ चन्द्रास्यां चित्रकेतवे ॥ ४ ॥
चञ्चलाख्यां पुष्कराय तक्षाय चपलां तथा । सुबाहवे तु ह्यचलां प्रोचुस्ते गणकादयः ॥ ५ ॥
एवं गंधर्वकन्यास्ताः पंच विप्रैर्विनिश्चिताः । एवं हि निश्चयं कृत्वा गणकादीन् रघूत्तमः ॥ ६ ॥
विसृज्य मैथिलीं गत्वा सर्वं वृत्तं न्यवेदयत् । ततो ययुः कोटिशस्ते पार्थिवाश्च मुनीश्वराः ॥ ७ ॥
सप्तद्वीपांतरस्थाश्च सावरोधाः सबालकाः । नानावाहनसंस्थाश्च पौरैर्जानपदैर्निजैः ॥ ८ ॥

मुहूर्त मार्गशीर्षमें, तीन मुहूर्त माघमें और तीन ही मुहूर्त फाल्गुनमें बतलाया। इस तरह उन बारहों कन्याओंके विवाहकी लग्न बन गयी। तदनंतर वसिष्ठके साथ-साथ उन ज्योतिषियोंने वैशाखवाली लग्नमें लव और अङ्गदके विवाहका मुहूर्त निश्चित किया। चित्रकेतु और पुष्करका विवाह ज्येष्ठमासकी लग्नमें निश्चित हुआ। तक्ष और सुबाहुका विवाह एक पक्ष बाद मार्गशीर्षके दूसरे पक्षमें निश्चित किया ॥ ४२-४५ ॥ यूपकेतु, अङ्गद तथा चित्रकेतुका विवाह माघ मासमें निश्चित हुआ ॥ ४६ ॥ पुष्कर, तक्ष तथा सुबाहुका विवाह रामके समक्ष बैठे हुए ज्योतिषियोंने फाल्गुन मासकी शुभ लग्नमें निश्चित किया ॥ ४७ ॥ इस तरह क्रमशः बारहों विवाहोंके निश्चित हो जानेपर रामने ज्योतिषियोंकी विधिवत् पूजा की ॥ ४८ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानंदरामायणे पं० रामतेजपाण्डेयविरचितभाषाटीकासहिते विवाहकांडे षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

श्रीरामदास कहने लगे—उपर्युक्त प्रकारसे विवाह निश्चित हो जानेपर रामके सामने ही वसिष्ठ तथा ज्योतिषियोंने उन कन्याओंका विवाह तैं करके यह तैं किया कि कौन-सी कन्या किसको दी जाय ॥ १ ॥ कञ्जानना नामकी कन्या लवके लिए, कञ्जाक्षी अङ्गदके लिए, कञ्जांघ्री चित्रकेतुके लिए, कलावती पुष्करके लिए, कालिका तक्षके लिए, कमला सुबाहुके लिए और मालती यूपकेतुके लिए देना निश्चित हुआ ॥ २ ॥ ३ ॥ इस प्रकार ज्योतिषियोंने उन सब कन्याओंको देनेका निश्चय कर दिया। चंद्रिका अङ्गदके लिए, चंद्रास्या चित्रकेतुके लिए, चञ्चला पुष्करके लिए, चपला तक्षके लिए और अचला सुबाहुके लिए देनेके लिए उन ज्योतिषियोंने निश्चित किया। इस तरह उन पाँचों गन्धर्वकन्याओंके वरोंका निश्चय हो जानेपर रामने आदरपूर्वक ज्योतिषियोंको विदा किया और स्वयं सीताके पास जा पहुँचे। जो कुछ सभामें निश्चित हुआ था, सो उन्हें कह सुनाया। इसके बाद सातों द्वीपोंमें रहनेवाले करोड़ों मुनीश्वर तथा राजे अपने परिवार और प्रजा समेत नाना प्रकारकी सवारियोंपर सवार होकर अयोध्या आये ॥ ४-८ ॥ उस समय उन लोगोंसे सारी अयोध्या भर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तैः साऽयोध्यापुरी व्याप्ता विरेजे नितरां तदा । ययौ विभीषणश्चाथ सुग्रीवोऽपि प्लवंगमैः ॥ ९ ॥
ययौ स भूरिकीर्तिश्च पुत्राभ्यां शीघ्रमादरात् । ययौ स जनकश्चापि युधाजित्स ययौ तदा ॥१०॥
कौसल्यायाः सुमित्राया बांधवाद्याः समाययुः । अथ रामस्तु वैशाखशुक्ले द्विजवरैः सह ॥११॥
पुरोधसा सुहृद्भिश्च स्नानमभ्यंगपूर्वकम् । कृत्वा लवाय मांगल्यस्नानार्थं स्त्रीः प्रचोदयत् ॥१२॥
ततो मुहूर्तसमये वधूच्छिष्टां निशां लवम् । सम्यग् लिप्य सुतैलार्द्रां सीताद्या मातरस्तदा ॥१३॥
स्वयं सस्नुर्मुदा सर्वास्तूर्यनादैः सबालकाः । अथ रामो देवकस्य प्रतिष्ठां ब्राह्मणैः सह ॥१४॥
आदौ कृत्वा गणपतेः पूजां सम्यग्यथाविधि । पुण्याहादित्रयं चापि कृत्वा पूर्वं सविस्तरम् ॥१५॥
चकार विधिवत्तुष्टः पूजयामास वै मुनीन् । ततो मुहूर्तसमये गत्वा पन्नगमंदिरम् ॥१६॥
लवस्य कंजनयनाविवाहं विनिवर्तयत् । चतुर्थे दिवसे वंशपात्रस्थै रत्नदीपकैः ॥१७॥
नीराजितस्तदा रामो विरेजे मंडपे स्त्रिया । ततो निजगृहं गत्वा पूर्वोक्तैरुत्सवादिभिः ॥१८॥
लवेन कारयामास लक्ष्मीपूजनमुत्तमम् । ततो दानान्यनेकानि ददौ स रघुनन्दनः ॥१९॥
ततस्ते पार्थिवाः सर्वे तथा ते पन्नगा अपि । सुहृदश्चाथ गंधर्वाः पौरा जानपदादयः ॥२०॥
पूजयामासुः श्रीरामं वस्त्रैराभरणादिभिः । तथा तान् लक्ष्मणादींश्च कुशाद्यांश्चापि बालकान् ॥ २१॥
ततस्ता नृपपत्न्यश्च सुहृत्पत्न्यः पृथक्पृथक् । नागपत्न्यश्च गंधर्वपत्न्यश्चान्यास्तथा स्त्रियः ॥२२॥
सीताद्याः पूजयामासुर्वस्त्रैराभरणादिभिः । सीताऽपि ताः सुहृत्पत्नीस्तथा पार्थिवकामिनीः॥२३॥
पूजयामास विधिवद्वस्त्रैराभरणादिभिः । रामोऽपि सुहृदः पौरान् गन्धर्वान्पन्नगान्नृपान् ॥२४॥
वस्त्रैराभरणैर्यानैः पूजयामास सादरम् । एवं वैशाखामासे तु सिते पक्षे लवस्य च ॥२५॥
कृत्वा विवाहं रामः स कृष्णपक्षे तु माधवे । चकार पूर्वद्वद्विवाहं ह्यंगदस्य च ॥२६॥
चित्रकेतोः पुष्करस्य विवाहो रघुनन्दनः । ज्येष्ठमासे शुक्लकृष्णपक्षयोरकरोन्मुदा ॥२७॥

गयी और वह बहुत ही सुन्दर दीखने लगी। बहुतसे वानरोंको साथ लिये हुए सुग्रीव, अपने दोनों बेटोंके साथ राजा भूरिकीर्ति, इनके सिवाय विभीषण, जनक, युधाजित्, कौसल्या तथा सुमित्राके बन्धु-बान्धव आदि भी अयोध्यामें आ पहुँचे। इसके बाद वैशाखके शुक्लपक्षमें पुरोहितों तथा विप्रोंके साथ रामने अभ्यङ्ग-पूर्वक स्नान किया और लवको मङ्गलस्नान करानेके लिए स्त्रियोंसे कहा ॥ ९–१२ ॥ सीतादिक माताओंने जब मुहूर्त आया, तब वधूके जूठे हल्दी-तेल तथा उबटन लेकर लवके शरीरमें लगाया और तुड़ही तथा नगाड़े आदि बाजोंके साथ बालकोंके सङ्ग स्वयं भी स्नान किया। उधर रामने ब्राह्मणोंके साथ कुलदेवताकी स्थापना की ॥ १३ ॥ १४ ॥ स्थापनाके पूर्व यथाविधि गणपतिकी पूजा की और विस्तारसे तीन प्रकारका पुण्याहवाचन किया। इसके अनन्तर मेहमानीमें आये हुए मुनियोंकी पूजा करके उन्हें सन्तुष्ट किया। शुभ मुहूर्तमें पन्नगोंके यहाँ गये और वहाँ कञ्जनयनाके साथ लवका विधिवत् विवाह सम्पन्न किया। चौथे दिन बाँसकी छिटनीमें रखे हुए रत्न-दीपकोंसे रामकी आरती उतारी गयी। उस समय राम सीताके साथ बहुत ही सुन्दर दीख रहे थे। इसके अनन्तर पूर्वोक्त उत्सवोंके साथ राम अपने घर गये। वहाँ लवके हाथोंसे अच्छी तरह लक्ष्मीपूजन कराया और अनेक प्रकारके दान दिये ॥ १५–१९ ॥ इसके बाद उन देश-देशान्तरसे आये हुए राजाओं, पन्नगों, सम्बन्धियों, पुरवासियों और जनपदवासियोंने विविध प्रकारके वस्त्रों और आभूषणोंसे राम-लक्ष्मण तथा सब बालकोंकी पूजा की। इसके पश्चात् रानियों, सम्बन्धियोंकी स्त्रियों, नागपत्नियों तथा गंधर्व आदिकी स्त्रियोंको सीता आदि स्त्रियोंने वस्त्र और आभूषण दे-देकर विधिवत् सत्कृत किया। रामने भी सम्बन्धियों, पुरवासियों, गन्धर्वों और पन्नगोंकी वस्त्राभूषणसे भली भाँति पूजा की। इस तरह वैशाख मासके शुक्लपक्षमें लवका विवाह सम्पन्न किया और कृष्णपक्षमें पूर्ववत् उत्साह समेत अङ्गदका विवाह किया ॥ २०–२६ ॥ इसी प्रकार ज्येष्ठके शुक्ल और कृष्ण-

CC-0. In Public Domain. Kirtikar Shah Vaidyagarh Deemed College

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः सर्वान्नृपादींश्च ददावाज्ञां सुपूजितान् । ततः पुनस्तानाहूय पूर्ववन्मार्गशीर्षके ॥२८॥
तक्षस्याथ सुबाहोश्च विवाहावकरोत्प्रभुः । ततः सर्वान्नृपान् रामो ददावाज्ञां सुहृज्जनान् ॥२९॥
ततः पुनस्तानाहूय माघमासे सुहृन्नृपान् । यूपकेतोरंगदस्य चित्रकेतोर्महोत्सवैः ॥३०॥
विवाहानकरोद्रामः पार्थिवान्न व्यसर्जयत् । पुष्करस्याथ तक्षस्य सुबाहोश्च महोत्सवैः ॥३१॥
चकार फाल्गुने मासि विवाहान् जानकीधवः । एवं कृत्वा विवाहांश्च रामो द्वादश सादरम् ॥३२॥
नृपैः संपूजितः सर्वान्पूज्याज्ञां नृपतीन् ददौ । पूजयित्वा मुनींश्चापि विससर्ज रघूद्वहः ॥३३॥
गधर्वपन्नगाः सप्त ते साकेतेऽत्र संस्थिताः । रामं मुक्त्वा न ते नैजं स्थलं जग्मुर्मुदान्विताः ॥३४॥
मंत्रिणः प्रेषयामासुः स्वस्वराज्येषु ते पृथक् । यदा रामः स वैकुंठमग्रे गच्छति कालतः ॥३५॥
तदा सांतानिकाँल्लोकांस्ते गच्छन्ति न संशयः । अथ रामः पन्नगानां गन्धर्वाणां च सद्मसु ॥३६॥
वार्षिकेषूत्सवेष्वत्र सावरोधः सुहृज्जनैः । पौरैः स्वीयैर्भोजनादि गत्वा ह्यंगीकरोत्सदा ॥३७॥
सदा महोत्सवाश्चासन्नयोध्यायां गृहे गृहे । आनन्दः सकलानासीन्नासीत्कुत्राप्यमंगलम् ॥३८॥
अथ तेषां राघवेण पुत्राणां च पृथक् पृथक् । अष्ट कृत्वा तु गेहानि पृथक्कृत्वा च शांतयः ॥३९॥
तेषु ते स्थापिताः सर्वे स्वस्वस्त्रीभ्यां पृथक् सुखम् । तथा ते लक्ष्मणाद्याश्च पृथग्गेहेषु बांधवाः ॥४०॥
पूर्वमेव स्थापिताश्च स्वस्वपत्न्या मुदान्विताः । सुमित्रायाः स सौमित्रिः स्वीयगेहेऽवसत्सुखम् ॥४१॥
कैकेयी भरतस्याथ गेहे मासमुवास सा । तस्थौ शत्रुघ्नगेहेऽपि मासमेकं यथासुखम् ॥४२॥
एवं सा पुत्रयोर्गेहेऽकरोद्वास मुदान्विता । कौसल्या सा रामगेहे तस्थौ सीतातिसेविता ॥४३॥
ते सर्वे बांधवाः पुत्रा निजयानैश्च सेवकैः । स्वदासीगोधनाद्यैश्च सुखमापुः पृथक् पृथक् ॥४४॥
अथ ते लक्ष्मणाद्याश्च कुशाद्या बालका अपि । स्वस्वगेहेषु वै प्रातः स्नात्वा होमान् शिवार्चनम् ॥४५॥

पक्षमें चित्रकेतु और पुष्करका विवाह सम्पन्न किया ॥ २७ ॥ इसके बाद सब राजाओं और मुनियोंको अपने-अपने घर जानेकी आज्ञा दी। फिर मार्गशीर्षमें सबको बुलाकर तक्ष और सुबाहुका विवाह किया। बादमें सबको अपने देश जानेकी अनुमति देकर माघ मासमें बुलाया और यूपकेतुका विवाह सम्पन्न किया ॥ २८–३० ॥ माघमें आये मेहमानोंको विदा न करके रामने फाल्गुन मासमे पुष्कर, तक्ष तथा सुबाहुका विवाह किया। इस तरह बारहों विवाहोंको करके रामने सब मेहमानोंकी स्वयं पूजा की और उनका पूजन स्वीकार किया। तब सबको अपनी-अपनी राजधानियोंको जानेकी अनुमति दी। इसी तरह उन मुनियोंका भी विधिवत् पूजन करके अपने-अपने आश्रमोंको जानेकी आज्ञा दी ॥ ३१–३३ ॥ किन्तु गन्धर्व और पन्नगगण अयोध्यामें ही रहे। वे अपने-अपने मन्त्रियोंको राजधानी भेजकर रामके पास रहने लगे। वे तब तक अयोध्यामें रहेंगे, जब तक राम अपने वैकुण्ठलोकको नहीं चले जायँगे। रामके चले जानेपर वे भी सान्तानिक लोकको चले जायँगे। इसके अतिरिक्त वार्षिक उत्सवों और त्योहारोंपर राम अपने घरकी स्त्रियों, मित्रों तथा सम्बन्धियोंके साथ पन्नगों और गंधर्वराजके यहाँ जाकर भोजन आदि करते थे ॥ ३४–३७ ॥ उन दिनों अयोध्यामें घर-घर उत्सव मनाये जाते थे। उस समय सर्वत्र आनंद था। कहीं भी किसी प्रकारका अमंगल नहीं दिखलायी पड़ता था ॥ ३८ ॥ इसके पश्चात् रामने उन बारहों पुत्रोंके लिए अलग-अलग घर बनवाये और विधिवत् शान्तिपाठ कराके उनको अपनी-अपनी स्त्रियोंके साथ उन घरोंमें बसा दिया। उसी तरह लक्ष्मण आदि भ्राता पहले हीसे अलग-अलग महलोंमें अपनी-अपनी स्त्रियोंके साथ सुखपूर्वक रह रहे थे। सुमित्राके पुत्र लक्ष्मण अपने महलमें आनंदपूर्वक रहते थे ॥ ३९–४१ ॥ कैकेयी एक महीना भरतके यहाँ और एक महीना शत्रुघ्नके यहाँ रहा करती थी। इस तरह अपने दोनों पुत्रोंके साथ रहती हुई वह सुखसे समय बिता रही थी। कौसल्या सीताकी सेवा ग्रहण करती हुई रामके महलोंमें रहती थीं ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ वे सब भ्राता और उनके पुत्र अलग-अलग अपनी सवारी, सेवक, दासी, गोधन आदि अपार सम्पत्तियाँ रखकर आनंद ले रहे थे ॥ ४४ ॥ यह सदाका नियम था कि लक्ष्मण आदि सब भ्राता और कुश आदि

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोद्विजार्चादि संपाद्य ततस्ते राघवं ययुः । नत्वा रामं जानकीं ते तस्थुर्दिव्यासनोपरि ॥४६॥
तेषां सर्वाः स्त्रियश्चापि स्नात्वा दुर्गां प्रपूज्य च । गत्वा सीतां प्रणेमुस्तास्तस्थुः सीताज्ञयाऽऽसने ॥४७॥
ततस्ते लक्ष्मणाद्याः कुशाद्याः स्वगुरोर्मुखात् । कथां पौराणिकीं श्रुत्वा जग्मुः स्वं स्वं गृहं प्रति ॥४८॥
ततः सर्वे रामगेहे समाहूता मुदान्विताः । उपाहारान् पृथक् चक्रुर्मध्याह्ने भोजनान्यपि ॥४९॥
एवं तेषां स्त्रियश्चापि समाहूतास्तु सीतया । उपाहारान् भोजनानि चक्रुः सीतागृहे सदा ॥५०॥
कदा मुदा स्वीयगेहे राघवेणाथ सीतया । उपाहारान् भोजनानि चक्रुस्ते ब्राह्मणादिभिः ॥५१॥
एवं तैर्बन्धुभिर्बालैः प्रापतुर्नितरां सुखम् । सीतारामौ कदा नासीत्कलहः क्वापि कस्य हि ॥५२॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये विवाहकाण्डे
द्वादशविवाहवर्णनं नाम सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

अष्टमः सर्गः

(शत्रुघ्नतनय यूपकेतु द्वारा मदनसुन्दरीका हरण)

श्रीरामदास उवाच

अथैकदा दक्षिणे हि शिवकांत्यां महापुरि । कंबुकंठो नृपः श्रीमान्निजकन्यास्वयंवरम् ॥ १ ॥
कर्तुकामो नृपान्सर्वानाह्वयामास सादरम् । तदा ते पार्थिवाः सर्वे पत्राणि हि पृथक् पृथक् ॥ २ ॥
पूर्ववैरमनुस्मृत्य कुशस्यापि लवस्य च । स्वयंवरे स्वीयमानभंगेनोद्भूतहृत्स्थितम् ॥ ३ ॥
प्रेषयामासुर्नृपतिं न ययुश्च स्वयंवरम् । तेषां पत्राणि सर्वाणि कंबुकंठो ददर्श सः ॥ ४ ॥
सर्वेषु लिखितस्त्वेक एवार्थस्तं वदाम्यहम् । यदि नायांति रामस्य बालकास्ते स्वयंवरे ॥ ५ ॥
वयं सर्वे तर्हि यामो जंबुद्वीपान्तरस्थिताः । तेषामेवमभिप्रायं ज्ञात्वा स नृपतिस्तदा ॥ ६ ॥
न समाहूय श्रीराममाह्वयामास पार्थिवान् । स्वयं चापि स्मरन्वैरं तदेवं रामपुत्रयोः ॥ ७ ॥

बालक सबेरे स्नान करके हवन, शिवार्चन एवं गौ-ब्राह्मणोंकी पूजा करते थे। तब रामके पास जाते और वहाँ सीता तथा रामको प्रणाम करके दिव्य आसनपर बैठते थे ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ उसी तरह उनकी स्त्रियाँ भी सबेरे स्नान और दुर्गापूजनसे निवृत्त होकर सीताके पास जातीं, उन्हें प्रणाम करतीं और आज्ञा पाकर दिव्य आसनोंपर बैठती थीं ॥ ४७ ॥ इसके बाद वे सब लोग गुरु वसिष्ठके मुखसे पुराणोंकी कथा सुन-सुनकर अपने भवनोंको जाया करते थे। दोपहरको रामके बुलानेपर साथ-साथ जलपान तथा भोजन करते थे। उसी तरह उनकी स्त्रियाँ भी सीताके बुलानेपर सीताके यहाँ ही आकर जलपान तथा भोजन करती थीं ॥ ४८–५० ॥ कभी-कभी वे लोग राम और बहुतसे ब्राह्मणोंको अपने यहाँ बुलाकर भोजन कराते थे ॥ ५१ ॥ इस तरह उन बन्धुओं और बालकोंके साथ सीता तथा राम बड़े सुखसे जीवन व्यतीत कर रहे वे। किसीके साथ कभी किसी तरहका झगड़ा नहीं होता था ॥ ५२ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयविरचित-भाषाटीकासहिते विवाहकाण्डे सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

श्रीरामदास कहने लगे—एक समय दक्षिणकी शिवकांतिपुरीमें वहाँके राजा कम्बुकण्ठने अपनी कन्याका स्वयम्वर करनेके विचारसे सब राजाओंके यहाँ निमन्त्रणपत्र भेजकर बुलवाया। किन्तु कुश-लवके कारण वे महाराज कम्बुकण्ठके यहाँ नहीं आये और एक-एक पत्र लिखकर भेज दिया। कम्बुकण्ठने एक-एक करके सब राजाओंका पत्र देखा ॥ १–४ ॥ उन सब पत्रोंमें एक ही चर्चा थी। वह यह कि यदि रामचन्द्रके लड़के तुम्हारे स्वयंवर न आयें तो हम सब जम्बूद्वीपके राजे तुम्हारे यहाँ आयेंगे—अन्यथा नहीं। राजा कम्बुकण्ठने उनके अभिप्राय समझकर रामचन्द्रजीके पास निमन्त्रण न भेजकर बाकी सब राजाओंको बुलाया। कम्बुकण्ठको स्वयं भी यह बात याद आ गयी कि रामके पुत्रोंने चम्पिका और सुमतिके स्वयंवरमें

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चंपिकासुमतिपाणिग्रहणीयं पुरातनम् । ततस्ते पार्थिवाः सर्वे श्रुत्वा रामं हि नागतम् ॥ ८ ॥
सप्तद्वीपांतरस्थाश्च ययुः कांतिपुरीं प्रति । अथ तां कंबुकंठस्य कन्यां मदनसुन्दरीम् ॥ ९ ॥
प्रासादसंस्थितां दृष्ट्वा नारदः खात्समाययौ । सखीभिः सा मुनिं पूज्य विनयात्पुरतः स्थिता ॥१०॥
पप्रच्छ नारदं भक्त्या विनयावनता शनैः । कुतः समागतः स्वामिन् गम्यते क्वाधुना वद ॥११॥
भवतां दर्शनेनाद्य पावित्र्यं परमं गता । इति तस्या वचः श्रुत्वा किंचित् स्मित्वा मुनिस्तदा ॥१२॥
तामाह बाले स्वर्लोकादागतोऽस्म्यधुना त्वहम् । अयोध्यायां राघवस्य पुत्राणां तु पृथक् पृथक् ॥१३॥
गेहे संभोक्तुकामोऽद्य निर्गतोऽस्मि विहायसा । एतस्मिन्नंतरे कांतिपुर्याः सैन्यानि वै बहिः ॥१४॥
दृष्ट्वा केषां हि सैन्यानि संतीति हृदि चिंतितम् । ततः पांथमुखाच्छ्रुत्वा तव चात्र स्वयंवरम् ॥१५॥
तदा विनिश्चितं चित्ते मया रामः स्वयंवरे । अत्रैवास्ति ह्यागतश्चेत्तं पश्यामि सबालकम् ॥१६॥
नैवास्ति ह्यागतश्चेद्वै तर्हि यास्याम्यतः परम् । स्वयंवरो विना रामं न भविष्यति सात्मजम् ॥१७॥
पश्याम्यत्रैव तं रामं वृथाऽग्रे गमनं मम । निश्चित्येत्थं समायातस्ततोऽदृष्ट्वा रघूत्तमम् ॥१८॥
कथं रामो नागतोऽत्र चेति पृष्टा नृपा मया । नृपाभिप्रायमाकर्ण्य तदा खिन्नं मनो मम ॥१९॥
सप्तद्वीपपतिं रामं बंधुबालकसंयुतम् । स्वयंवरमनाहूय त्वत्पित्रा निश्चितं नृपैः ॥२०॥
अधुनाऽहं प्रगच्छामि साकेतस्थं रघूत्तमम् । मन्दभाग्याऽसि बाले त्वं स्नुषा राघवसत्पतेः ॥२१॥
यतो जाताऽसि नैवात्र विचित्रा कर्मणो गतिः । इत्युक्त्वा बालिकां पृष्ट्वा नारदो गन्तुमुद्यतः ॥२२॥
ततः संप्रार्थयामास नारदं बालिका मुहुः । खिन्नचित्ताऽश्रुपूर्णाक्षी म्लानास्या स्फुरिताधरा॥२३॥
रोमांचिततनुर्मुग्धा गतश्रीर्गद्गदस्वरा । येनाहं मुनिवर्यात्र स्नुषा श्रीराघवस्य च ॥२४॥
भविष्यामि तथा कार्यं त्वया त्वां शरणं गता । इत्युक्त्वा मुनिवर्यस्य पादयोः स्थाप्य सा शिरः॥२५॥
चकार करुणं बाला तदा तां मुनिरब्रवीत् । मा चिन्तां कुरु रंभोरु समुत्तिष्ठस्व बालिके ॥२६॥

सबसे वैर कर लिया ॥ ५-७ ॥ इसके अनन्तर जब सब राजाओंने यह सुन लिया कि राम नहीं आयेंगे, तब वे कम्बुकण्ठके यहाँ पहुँचे । उधर कम्बुकण्ठकी कन्या मदनसुन्दरीको अँटारीपर देखकर नारदजी आकाश-मार्गसे उतर आये । मदनसुन्दरीने सखियोंके साथ आकर नारदकी पूजा की और उन मुनिके सामने जा बैठी ॥ ८-१० ॥ फिर भक्तिपूर्वक नारदसे पूछने लगी—स्वामिन् ! आप इस समय कहाँसे आ रहे हैं और अब कहाँ जायँगे, सो बताइए ॥ ११ ॥ आपके दर्शनसे मैं आज परम पवित्र हो गयी । इस प्रकार उसकी बात सुनी तो थोड़ा मुसकाकर नारद कहने लगे—हे बाले ! इस समय मैं स्वर्गलोकसे आ रहा हूँ और रामके सब पुत्रोंके यहाँ अलग-अलग भोजन करनेके लिए अयोध्या जा रहा हूँ । आते समय मैने कान्तिपुरी नगरीके बाहर सेना देखी । उसे देखकर मुझे बड़ा कौतूहल हुआ । रास्तेमें एक पथिकसे पूछनेपर ज्ञात हुआ कि यहां तुम्हारा स्वयम्वर है तो यह सोचा कि जहाँ तक है, रामचन्द्रजी अपने बालकों समेत यहां अवश्य आये होंगे । चलो, यहाँ ही दर्शन कर लें । यह निश्चय करके मैं यहाँ आया, किंतु रामचन्द्रजीको नहीं देखा तो राजाओंसे पूछा कि राम क्यों नहीं आये ? उन लोगोंने जो कारण बतलाया, उससे मेरा मन बहुत खिन्न हुआ ॥ १२-१९ ॥ सप्तद्वीपके अधिपति राम तथा उनके लड़कोंको न बुलानेका निश्चय करके ही तुम्हारे पिताने और-और राजाओंको बुलाया है ॥ २० ॥ अच्छा, अब मैं अयोध्यामें रामचन्द्रजीके पास जा रहा हूँ । हे बाले ! तुम अभागी हो, जो रामचन्द्रजी जैसे राजराजकी पतोहू नहीं बन रही हो । कर्मकी भी बड़ी विचित्र गति होती है । ऐसा कह और कन्यासे पूछकर नारदजी जाने लगे । तब वह कन्या मदनसुंदरी खिन्न मन, आँसू भरी आँखों, म्लानमुख, काँपते हुए अधरों तथा रोमांचित शरीर होकर गद्गद वाणीसे इस प्रकार विनय करती हुई कहने लगी—आप कोई ऐसी युक्ति करिए कि जिससे मैं रामकी ही पतोहू बनूं । मैं आपकी शरणमें हूँ । ऐसा कहकर उसने अपना मस्तक मुनिराजके चरणोंमें रख दिया और रोने लगी । तब नारद मुनिने कहा—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by Sri Kirtibhai Shanna Nanjangarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भविष्यसि त्वं रामस्य स्नुषा यत्नं करोम्यहम् । इत्युक्त्वा तां समाश्वास्य खमार्गेण मुनिर्ययौ ॥२७॥
एतस्मिन्नंतरेऽयोध्यापुर्याः स्यन्दनसंस्थितः । यूपकेतुर्वनं पश्यंस्तमसातीरमाययौ ॥२८॥
किञ्चित्सैन्ययुतो बालस्तमसायां विगाह्य सः । यावत्संध्यादिकं कर्तुमुपविष्टस्तदा मुनिम् ॥२९॥
ददर्श नारदं नत्वा पूजयामास सादरम् । ततः पप्रच्छ मुनये यूपकेतुः पुरःस्थितः ॥३०॥
कुतः समागतं चेति तच्छ्रुत्वा नारदो मुनिः । सर्वं वृत्तं सविस्तारं कथयामास बालकम् ॥३१॥
तच्छ्रुत्वा सकलं वृत्तं नत्वा तं नारदं मुनिम् । अब्रवीद्बालको वाक्यं सक्रोधः संभ्रमान्वितः ॥३२॥
मुने नृपाणां सर्वेषां द्वेषबुद्धिश्च राघवे । या जाता साऽद्य सर्वेषां ज्ञेयाऽनर्थकरी जवात् ॥३३॥
कंबुकंठादिभूपानां सारं पश्याम्यहं रणे । रणे त्वत्कृपया सर्वान् जित्वा तामानयाम्यहम् ॥३४॥
इत्युक्त्वा स ययौ कांतिं पञ्चमेऽहनि सेनया । नारदोऽपि ययौ रामं द्रष्टुं प्रीतमनास्तदा ॥३५॥
रामेण पूजितः प्रेम्णा भोजनार्थं निमंत्रितः । अथ भोजनवेलायां युपकेतुं रघूत्तमः ॥३६॥
अदृष्ट्वा लक्ष्मणं प्राह यूपकेतुर्न दृश्यते । बालेषु तं भोजनार्थं लक्ष्मणात्र समाह्वय ॥३७॥
तदा स मालतीं गत्वा प्रपच्छ लक्ष्मणो जवात् । सा प्राह वनमध्येऽद्य किञ्चित्सैन्ययुतो गतः ॥३८॥
वृत्तमेतद्यथावत्स गत्वा रामं जगाद ह । अथ रामो भोजनादि संपाद्य मुनिना मुदा ॥३९॥
ययौ सभायामासीनस्तं मुनिं वाक्यमब्रवीत् । पञ्चसप्तदिनान्यत्र स्थेयं मद्वचनात्त्वया ॥४०॥
तथेति नारदः प्राह सभायां संस्थितः सुखम् । अथ रात्रौ यूपकेतुमदृष्ट्वा रघुनन्दनः ॥४१॥
उपाहारं कर्तुकामः पुनर्लक्ष्मणमब्रवीत् । आकारय यूपकेतुं नायं दृष्टो मया शिशुः ॥४२॥
तथेति रामवचनात्पुनर्गत्वा तु मालतीम् । पप्रच्छ यूपकेतुं स सा प्राह नागतस्त्विति ॥४३॥
ततः स विह्वलो भूत्वा रामं वृत्तं न्यवेदयत् । रामोऽपि नागतं श्रुत्वा बंधुभ्यां विह्वलोऽभवत् ॥४४॥

हे रम्भोरु ! हे बालिके ! तुम किसी प्रकारकी चिन्ता न करो, उठो ॥ २१-२६ ॥ तुम अवश्य रामकी पतोहू बनोगी। मैं इसके लिए उद्योग करूँगा। ऐसा कह और उसे ढाढ़स बँधाकर नारदजी आकाशमार्गसे चल दिये ॥ २७ ॥ इसी समय यूपकेतू रथपर बैठकर अयोध्यासे निकले और रास्तेके वनोंको देखते हुए तमसा नदीके किनारे पहुँचे ॥ २८ ॥ उस समय थोड़ी-सी सेना उनके साथ थी। उसके साथ यूपकेतुने तमसामें स्नान किया और सन्ध्यावन्दन करनेको बैठे ही थे कि नारदजीको देखा। तब उनको प्रणाम करके सादर पूजन किया। इसके बाद नारद मुनिने विस्तारपूर्वक उस कन्या मदनसुंदरीका सारा वृत्तांत कहा। उसे सुनकर क्रोध और घबराहटसे पूर्ण होकर यूपकेतुने कहा—॥ २९-३२ ॥ हे मुने ! इस समय जो सब राजे रामसे द्वेषबुद्धि रखते हैं, वह उनके लिए अनर्थकारिणी सिद्ध होगी ॥ ३३ ॥ कम्बुकण्ठ आदि राजाओंका बल मैं संग्रामभूमिमें पहुँचकर देखता हूँ। हे मुनिराज ! मैं आपकी कृपासे उन सबको जीतकर मदनसुंदरीको लिये आता हूँ ॥ ३४ ॥ ऐसा कहकर यूपकेतु अपनी सेनाके साथ पाँचवें दिन कान्तिपुरीमें पहुँचे और नारदजी प्रसन्नतापूर्वक रामका दर्शन करनेके लिए अयोध्या चले गये ॥ ३५ ॥ वहाँ पहुँचनेपर रामने प्रेमसे नारदजीका पूजन करके भोजनका निमंत्रण दिया। जब भोजनका समय हुआ, तब यूपकेतुको न देखकर रामने लक्ष्मणसे कहा कि इस समय यूपकेतु नहीं दिखायी देता। हे लक्ष्मण ! और-और बालकोंके साथ उसे भी भोजन करनेके लिए बुलाओ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ रामके आज्ञानुसार लक्ष्मण मालतीके पास पहुँचे और यूपकेतुको पूछा। उसने कहा कि वे अपने साथ थोड़ी-सी सेना लेकर वनको गये हैं ॥ ३८ ॥ यह वृत्तान्त लक्ष्मणने जाकर रामको सुना दिया। तत्पश्चात् मुनिके साथ राम भोजन आदि करके अपने सभाभवनमें गये और वहाँ बैठकर नारद मुनिसे कहने लगे कि आप मेरे कहनेसे पाँच-सात दिन यहाँ ही ठहर जाइये। 'तथास्तु' कहकर नारदजी भी ठहर गये। तदनन्तर भोजनके समय रात्रिमें भी यूपकेतुको न देखकर रामने लक्ष्मणसे कहा—यूपकेतुको बुलाओ। आज मैंने दिनभर उस बच्चेको नहीं देख पाया है ॥ ३९-४२ ॥ 'बहुत अच्छा' कहकर लक्ष्मण फिर मालतीके पास गये और यूपकेतुको पूछा। उसने कहा कि वे अभी तक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः सा जानकी श्रुत्वा विह्वला खिन्नमानसा । दुद्राव राघवाग्रे सा सर्वे तूष्णीं कथं स्थिताः ॥४५॥
इति तान् प्राह वैदेही तदा सर्वेऽतिविह्वलाः । त्यक्त्वोपाहारान् वेगेन तच्छोधार्थं समुद्यताः ॥४६॥
तदा तान्विह्वलान्दृष्ट्वा नारदः प्राह राघवम् । कांतिवृत्तं यूपकेतोः प्रयाणादिकमादरात् ॥४७॥
तत्सर्वं राघवः श्रुत्वा किंचित्तुष्टमनास्तदा । लक्ष्मणं प्राह वेगेन शत्रुघ्नोऽद्यैव गच्छतु ॥४८॥
सेनया चतुरंगिण्या जवात्कांतिं कुशादिभिः । तथेति लक्ष्मणश्चोक्त्वा चोपाहारान्विधाय सः॥४९॥
सेनया बालकैर्वगाच्छत्रुघ्नं प्रेषयन्निशि । रामं नत्वाऽथ शत्रुघ्नः शीघ्रं स्यन्दनसंस्थितः ॥५०॥
ययौ कांतिसमीपं स षष्ठेऽहनि मुदान्वितः । एतस्मिन्नंतरे कांतिपुर्यां तत्र स्वयंवरे ॥५१॥
सभायां राजशार्दूलाः संस्थितास्ते मुदान्विताः । अच सा शिबिकारूढाऽऽययौ मदनसुन्दरी ॥५२॥
किंचिन्म्लानमुखी दुःखात्स्मरंती नारदेरितम् । वृद्धोपमाता तां सर्वान् दर्शयामास पार्थिवान् ॥५३॥
यूपकेतुस्तदा वेगाद्गत्वा तूष्णीं सभांगणम् । मोहनास्त्रं विसृज्याथ मोहयामास तां सभाम् ॥५४॥
मोहितैर्मोहनास्त्रेण न्यस्तां तद्वाहकैर्भुवि । रथेन शिबिकां गत्वा धृत्वा मदनसुन्दरीम् ॥५५॥
निजाभिधानं संश्राव्य तां तुष्टामकरोत्तदा । अथ सा वरयामास वीरं मदनसुन्दरी ॥५६॥
मुमोच मालां तत्कण्ठे नवरत्नमयीं शुभाम् । ततः स यूपकेतुर्हि रथे मदनसुन्दरीम् ५७॥
निवेश्य कांतिपुर्याः स बहिर्गत्वा स्थिरोऽभवत् । तामाह दयितां वीरस्त्विदानीं त्वं भयं त्यज ॥५८॥
जित्वा सर्वान्नृपानद्य त्वया गच्छाम्यहं पुरीम् । तत्तस्य वचनं श्रुत्वा सा प्राह वचनं तदा ॥५९॥
बहवः संति राजानस्त्वमेकः स्वल्पसेनया । असंख्यातानि सैन्यानि तेषां पश्य समन्ततः॥६०॥
कथं युद्धं भवेदत्र मा कुरुष्वाद्य संगरम् । शीघ्रं मां नय साकेतं ततो रामेण सेनया ॥६१॥

नहीं लौटे ॥ ४३ ॥ यह सुना तो विह्वल होकर लक्ष्मणने रामसे कहा । जब रामने यह सुना तो भ्राताओंके साथ-साथ वे भी विह्वल हो उठे ॥ ४४ ॥ जानकीने सुना तो वह भी विह्वल तथा खिन्न होकर दौड़ती हुई रामके पास पहुँची और कहा कि आप लोग यूपकेतुको अनुपस्थित देखकर भी चुपचाप बैठे हैं ? ॥ ४५ ॥ यह सुनकर सब लोग घबड़ा उठे और भोजन त्यागकर उसे ढूँढ़नेकी तैयारी कर दिये ॥ ४६ ॥ इस प्रकार सबको व्याकुल देखकर नारदजीने रामसे कान्तिपुरीका वृत्तान्त बतलाया और यूपकेतुके प्रस्थानकी भी बात कह सुनायी ॥ ४७ ॥ यह हाल सुना तो रामको थोड़ा सन्तोष हुआ और तुरंत लक्ष्मणको आज्ञा दी कि मेरी चतुरंगिणी सेना लेकर शत्रुघ्न अभी कांतिपुरी जायँ। "बहुत अच्छा" कहकर लक्ष्मणने भोजन आदि कराके रातमें ही सेना और कुश आदि वीर बालकोंके साथ शत्रुघ्नको कांतिपुरी भेजा । रामको प्रणाम करके शत्रुघ्न रथपर सवार हुए और प्रसन्नतापूर्वक प्रस्थान कर दिये ॥ ४८–५० ॥ इस तरह अयोध्यासे चलकर ठीक छठें दिन शत्रुघ्न कांतिपुरीके पास पहुँच गये । उधर कांतिपुरीमें स्वयंवर हो रहा था ॥ ५१ ॥ सभामण्डपमें बहुतसे राजे हर्षपूर्वक बैठे हुए थे । इतनेमें मदनसुन्दरी पालकीमें बैठी हुई सभामें आयी ॥ ५२ ॥ उस समय वह दुःखसे नारदकी बातोंका स्मरण कर रही थी । इस कारण उसका मुख कुम्हलाया हुआ था । सभामें पहुँचकर वृद्धा धात्रीने सब राजाओंको दिखलाया ॥ ५३ ॥ उसी समय वेगके साथ यूपकेतु सभाभवनमें पहुँचे और मोहनास्त्रका प्रयोग करके उन्होंने सारी सभाको मूर्छित कर दिया ॥ ५४ ॥ मोहनास्त्रसे मोहित होकर शिबिकावाहकोंने भी शिबिका जमीनपर रख दी । इतनेमें रथपर बैठे हुए यूपकेतु शिबिकाके पास पहुँचे और मदनसुन्दरीका हाथ पकड़कर अपना नाम बताया, जिससे वह बहुत प्रसन्न हुई और वीर यूपकेतु-को वरकर उसने उनके गलेमें वह नवरत्नमयी वरमाला डाल दी । तब प्रसन्न होकर यूपकेतुने मदनसुन्दरीको रथमें बिठा लिया ॥ ५५–५७ ॥ तब कान्तिपुरीसे बाहर निकलकर वे एक स्थानपर रुक गये । वहाँपर उन्होंने मदनसुन्दरीसे कहा कि अब तुम किसी प्रकारका भय न करो ॥ ५८ ॥ मैं सब राजाओंको जीतकर तुम्हारे साथ अयोध्यापुरी चलूंगा । यूपकेतुकी बात सुनकर उसने कहा— ॥ ५९ ॥ वे राजे बहुतसे हैं और तुम अकेले हो, तुम्हारे साथ सेना भी थोड़ी-सी है और देखो न, उनकी असंख्य सेना चारों ओर पड़ी हुई है ॥ ६० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

युद्धं कुरु नृपैर्घोरं शृणु मद्वचनं प्रभो । मा साहसं कुरुष्वात्रार्थये त्वां मुहुर्मुहुः ॥६२॥
इति तस्या वचः श्रुत्वा तामाश्वास्य पुनः पुनः । उपसंहारयामास मोहनास्त्रं स लीलया ॥६३॥
तदा ते पार्थिवाः सर्वे श्रुत्वा नीतां वधूं बलात् । शत्रुघ्नतनयेनेति स्त्रीवाक्यैः स्यंदने स्थिताः ॥६४॥
निर्ययुः कोटिशो योद्धुं स्वस्वसेनावृता जवात् । चंपिकायाः सुमत्याश्च पूर्ववैरेण दर्पिताः ॥६५॥
दुद्रुवुर्नेमिमार्गेण ददृशुस्तं रथस्थितम् । युक्तं मदनसुन्दर्या बिभ्रंतं मालिकां हृदि ॥६६॥
ततस्तं मुमुचुः सर्वे नानाशस्त्राणि सैनिकाः । यूपकेतुस्तदा वेगाट्टणत्कृत्य महद्धनुः ॥६७॥
वायव्यास्त्रेण तान्सर्वानुद्धूय दशदिक्षु सः । प्राक्षिपत्पार्थिवान् सैन्यैर्नानावाहनसंस्थितान्॥६८॥
तदा स कंबुकण्ठोऽपि पूर्ववैरमनुस्मरन् । चंपिकायाः सुमत्याश्च स्वयंवरसमुद्भवम् ॥६९॥
निमेषान्निजकन्याया वैरतो हरणं बलात् । महाक्रोधान्निर्ययौ स स्वसैन्येन परिवेष्टितः ॥७०॥
कुर्वन् दुंदुभिघोषांश्च युद्धार्थं यूपकेतुना । यूपकेतुरपि श्रुत्वा दुन्दुभीनां महत्स्वनम् ॥७१॥
कांतिपुर्युत्तरद्वारपुरतः संस्थितो रथी । टणत्कृत्य महच्चापं सन्दधे शरमुत्तमम् ॥७२॥
ये ये वीराः पुरद्वारान्निर्गताश्च बहिः शनैः । तान् जघान क्षणादेव प्रेतैर्द्वारं रुरोध सः ॥७३॥
तं दृष्ट्वा यूपकेतोश्च कंबुकण्ठः पराक्रमम् । ययौ स्वयं स्यन्दनेन प्रेतसंघं विदार्य च ॥७४॥
शेषसैन्येन संयुक्तो यूपकेतुं क्रुधा जवात् । तदाऽऽह यूपकेतुं स मया त्वं सङ्गरं कुरु ॥७५॥
किमेतान्मशकान् हत्वा पौरुषं मन्यसे जड । इत्युक्त्वा सप्तभिर्बाणैर्यूपकेतुं जघान सः ॥७६॥
तान्बाणानागतान् दृष्ट्वा यूपकेतुर्निजैः शरैः । तांश्छित्वा नवबाणैस्तच्चापं सारथिनं ध्वजम् ॥७७॥
कवचं मुकुटं छित्वा जघान तुरगानपि । पद्भ्यां तदा कंबुकण्ठो गदामादाय दुद्रुवे ॥७८॥

ऐसी अवस्थामें युद्ध कैसे करोगे ? आज तुम संग्राम न करो। मुझे शीघ्र अयोध्या पहुँचा दो और वहाँसे रामचन्द्रजीकी विशाल सेना लेकर आओ, तब युद्ध करो। हे प्रभो ! ऐसे समय साहस करना ठीक नहीं है। मैं बार-बार यही विनती करती हूँ ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इस प्रकार मदनसुन्दरीकी बात सुनकर उन्होंने उसे आश्वासन दिया और मोहनास्त्रका संवरण कर लिया ॥ ६३ ॥ जब उन राजाओंने स्त्रियोंके मुखसे सुना कि शत्रुघ्नके पुत्र यूपकेतुने मदनसुन्दरीका हरण किया है तो अपने-अपने रथोंपर सवार हो-होकर बड़ी-बड़ी सेना लिये वेगके साथ वे लड़नेको निकल पड़े। एक तो सुमति और चम्किकाके वरनेका ही वैर उन लोगोंके मनमें था, दूसरे अब मदनसुन्दरीके हरणसे उनके हृदयको और भी ठेस लगी ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ फिर क्या था, शत्रुके रथके पहियोंका रास्ता देखते हुए वे चले और थोड़ी ही दूर जाकर उन्होंने देखा कि यूपकेतु मदनसुन्दरीके साथ बैठा है और उसके गलेमें वरमाला पड़ी हुई है ॥ ६६ ॥ देखते ही सब राजाओंने एक साथ उस वीर बालकपर कितने ही शस्त्रोंका प्रहार कर दिया। यूपकेतुने भी वेगके साथ अपने धनुषका टङ्कोर किया ॥ ६७ ॥ और वायव्य अस्त्रका प्रयोग करके उन सब राजाओंको रथ, वाहन तथा सेना समेत उड़ाकर दूर फेंक दिया ॥ ६८ ॥ महाराज कम्बुकण्ठ भी पूर्ववैरका स्मरण करके विशेषकर इस समय वैरवश अपनी कन्याका हरण देखकर अपनी सेनाके साथ यूपकेतुसे युद्ध करनेके लिए दुंदुभीका घोष करते हुए निकल पड़े। यूपकेतुने भी जब दुंदुभीकी गर्जना सुनी तो कांतिपुरीके उत्तरी द्वारपर पहुँचे और अपने धनुषका टङ्कोर करके उसपर एक उत्तम शरका संधान किया ॥ ६९-७२ ॥ उस पुरद्वारसे जो-जो योद्धा निकलते, उनको अपने बाणोंसे यूपकेतु बराबर मारते जाते थे। इससे थोड़ी ही देरमें वह द्वार मृतकोंसे भर गया ॥ ७३ ॥ इस तरह यूपकेतुका पराक्रम देखकर राजा कम्बुकण्ठ स्वयं अपने रथपर सवार होकर उन शवोंको रौंदते हुए बची हुई सेनाके साथ यूपकेतुके सामने जा पहुँचे और क्रोधमें भरकर उन्होंने कहा—अब तू मेरे साथ संग्राम कर ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ अरे जड़ ! इन मच्छड़ोंको मारकर क्या तू अपने पौरुषको पौरुष मानता है ? ऐसा कहकर कम्बुकण्ठने तीन बाणोंसे यूपकेतुपर प्रहार किया ॥ ७६ ॥ उन बाणोंको अपनी ओर आते देखकर यूपकेतुने अपने नौ बाणोंसे कम्बुकण्ठके बाणों, धनुष, सारथी, ध्वजा, कवच और मुकुटको काट डाला और घोड़ोंको भी मार दिया। तब

CC-0. In Public Domain. Kirtibhai Shah Collection Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तावत्सहस्रधा बाणैर्यूपकेतुश्चकार ताम् । ततो बद्ध्वा दृढां मुष्टिं कम्बुकंठस्त्वरान्वितः ॥७९॥
हृदये यूपकेतोस्तां जघानाचलसन्निभाम् । तदा स यूपकेतुस्तं श्वशुरं स्यंदनोपरि ॥८०॥
ध्वजे बबंध वेगेन खड्गं जग्राह सम्भ्रमात् । कंबुकण्ठशिरश्छेदं कर्तुं तं समुपस्थितम् ॥८१॥
दृष्ट्वा धृत्वा करे तस्य सखड्गं सम्भ्रमान्विता । तमाह नत्वा साध्वक्षी तदा मदनसुन्दरी ॥८२॥
विह्वला विगतोत्साहा वेपती ह्यश्रुलोचना । मम तातं कंबुकण्ठमेनं हंसि कथं प्रभो ॥८३॥
मक्षिकापतनं पूर्वं ग्रासे यद्वत्त्वया कृतम् । सुखारम्भे पूर्वमेव दुःखकर्मावलम्बितम् ॥८४॥
मद्वाक्यान्नैव हंतव्यस्तस्मात्त्वां प्रार्थयाम्यहम् । एवं मदनसुन्दर्या वचः श्रुत्वा विहस्य सः ॥८५॥
कराद्विसृज्य तं खड्गं स्वसूतं चोदयन्मुदा । सेनया स ययौ यावत्पथाऽयोध्यां पुरीं प्रति ॥८६॥
तावद्दुंदुभिनिर्घोषानग्रे शुश्राव सेनया । पुनश्चापं दृढीकृत्य यूपकेतुस्तदा पथि ॥८७॥
कस्याग्रे वाहिनी चेति चिंतयामास चेतसि । ततः शरं मुमोचैकं निजनामांकितं बलात् ॥८८॥
योजनांतरसेनायां शरः शत्रुघ्नसन्निधौ । पपात तत्पदाग्रे तं दृष्ट्वा स चकितस्तदा ॥८९॥
शरपुच्छे यूपकेतोर्नाम दृष्ट्वाऽथ शत्रुहा । निश्चितवान्यूपकेतुर्मार्गेऽग्रे वर्तते ध्रुवम् ॥९०॥
ततश्चापे स शत्रुघ्नः स्वनामांकितमुत्तमम् । शरं संधाय विमुखं यूपकेतुं मुमोच ह ॥९१॥
स शरो यूपकेतोश्च मस्तकादूर्ध्वतस्तदा । अपतत्पृष्ठभागे स तं ददर्श पितुः शरम् ॥९२॥
तदा हृष्टो यूपकेतुः कुर्वन्दुंदुभिनिःस्वनान् । गत्वा वेगेन शत्रुघ्नं दृष्ट्वोत्प्लुत्य रथादधः ॥९३॥
ननाम पितरं पत्न्या कंबुकंठं प्रदर्शयन् । तदा तं सुहृदं ज्ञात्वा मोचयामास शत्रुहा ॥९४॥
कंबुकंठमुखाच्छ्रुत्वा सर्वं वृत्तं सविस्तरम् । शत्रुघ्नः प्रार्थितस्तेन सुहृदा तत्पुरीं ययौ ॥९५॥

कम्बुकण्ठ पैदल ही गदा लेकर दौड़ पड़े ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ यूपकेतुने अपने बाणोंसे उनकी गदाके भी हजार टुकड़े कर दिये। इसके बाद कम्बुकण्ठने यूपकेतुकी छातीपर कठोर घूँसा मारा। तब यूपकेतुने अपने ससुर कम्बुकण्ठको रथकी ध्वजामें बांध लिया और सिर काटनेके लिए वेगके साथ तलवार उठायी ॥ ७९-८१ ॥ इस तरह सिर काटनेको उद्यत एवं हाथमें खड्ग लिये यूपकेतुको देखकर मदनसुन्दरीने प्रणाम किया और आँखोंमें आँसू भरकर कहा—॥ ८२ ॥ हे प्रभो ! मेरे पिता कम्बुकण्ठको आप क्यों मारना चाहते हैं ? पहले ही ग्रासमें मक्खी गिर पड़नेके समान आपने सुखके स्थानमें इस दुःखदायी कर्मको क्यों अपनाया है ? ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ आप मेरी बात मानकर इन्हें मत मारिए। मैं आपसे यही प्रार्थना करती हूँ। यह कहती हुई मदनसुन्दरी विकल हो गयी। उसका उत्साह नष्ट हो गया था, वह काँप रही थी और नेत्रोंसे आँसूकी धाराएँ बहाती जा रही थी। इस प्रकार मदनसुन्दरीकी बात सुनकर यूपकेतु मुस्कराये और खड्ग फेंककर अपने सारथीको रथ चलानेका संकेत किया। वे अपनी सेनाके साथ अयोध्यापुरीकी ओर चले ही थे ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ इतनेमें आगेसे दुन्दुभीका घोष सुनायी पड़ा। अब अपना धनुष सम्हालकर सोचने लगे कि आगेसे यह किसकी सेना आ रही है। यह सोचकर उन्होंने अपने नामसे अंकित एक बाण वेगपूर्वक छोड़ा ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ वह बाण उड़ता हुआ एक योजन तक गया और जहाँ सेना पड़ी हुई थी, वहाँ पहुँचकर शत्रुघ्नके चरणोंके आगे गिरा। उस बाणको देखकर शत्रुघ्न चकित हो गये ॥ ८९ ॥ फिर बाणकी पूँछमें यूपकेतुका नाम देखकर शत्रुघ्नने निश्चय किया कि यूपकेतु आगे रास्तेमें ही है ॥ ९० ॥ तदनन्तर शत्रुघ्नने भी अपने नामसे अंकित एक बाण उठाकर यूपकेतुकी ओर छोड़ा ॥ ९१ ॥ वह बाण यूपकेतुके ऊपरसे होता हुआ पीछे जा गिरा। यूपकेतुने अपने पिताका बाण देखा ॥ ९२ ॥ तब प्रसन्न होकर दुन्दुभी जैसा गर्जन करते हुए वेगके साथ शत्रुघ्नके पास पहुँचे। वहाँ पिताको देखते ही वे रथसे कूद पड़े और अपनी स्त्री मदनसुन्दरीके साथ जाकर शत्रुघ्नको प्रणाम किया और ध्वजामें बँधे हुए कम्बुकण्ठको दिखाया। शत्रुघ्नने उन्हें अपना सम्बन्धी समझकर छुड़ा दिया ॥९३॥९४॥ फिर शत्रुघ्नने कम्बुकण्ठके मुखसे ही विस्तारसे सारा समस्त वृत्तान्त सुना। इसके बाद कंबुकंठके

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कांतिपुर्या बहिः स्थित्वा कंबुकंठमतेन सः । आकारणार्थं लग्नाय रामं दूतान्प्रचोदयत् ॥९६॥
तदा ते कंबुकंठस्य शत्रुघ्नस्यापि वेगतः । आकारणार्थं श्रीरामं ययुर्दूता मुदान्विताः ॥९७॥
इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे विवाहकाण्डे मदनसुन्दरीहरणं नामाष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

नवमः सर्गः

(रामका वंशविस्तार)

श्रीरामदास उवाच

गत्वाऽयोध्यापुरीं दूता रामं वृत्तं न्यवेदयन् । रामोऽपि श्रुत्वा तद्वृत्तं सीतायै संन्यवेदयत् ॥ १ ॥
ततो मुहूर्ते श्रीरामः सावरोधानुजैः सह । पौरैर्जानपदैः सर्वैः सुहृद्भिः सेनया सह ॥ २ ॥
नारदेन ययौ कांतिमाद्यां मुक्तिपुरीं प्रति । ततः श्रुत्वा कंबुकंठः शीघ्रं राघवमागतम् ॥ ३ ॥
स प्रत्युद्गम्य विनयान्नत्वा संपूजयन्मुदा । यूपकेतुं ततः पूज्य वारणस्थं पुरीं शनैः ॥ ४ ॥
वारस्त्रीनृत्यगीतैश्च तूर्यघोषैर्निनाय सः । ततः कांतिपुरीस्थास्ताः स्त्रियः प्रासादसंस्थिताः ॥ ५ ॥
दृष्ट्वा रामं यूपकेतुं ववर्षुः पुष्पवृष्टिभिः । ततो रामः शनैर्वस्तुं कल्पितं गृहमुत्तमम् ॥ ६ ॥
गत्वा दृष्ट्वा मुहूर्तं तु पूर्वोक्तकौतुकैः सुखम् । यूपकेतोर्विवाहं स चकार परमोत्सवैः ॥ ७ ॥
ततो विवाहं निर्वृत्य कंबुकंठेन पूजिताः । हस्त्यश्वरथपादातदासदासीजनादिभिः ॥ ८ ॥
ययौ मदनसुन्दर्या रामोऽयोध्यापुरीं निजाम् । ततो विवेश नागरीं नेदुर्वाद्यानि वै तदा ॥ ९ ॥
ननृतुर्वारनार्यश्च तुष्टुवुर्मागधादयः । प्रासादस्थाः स्त्रियो रामं ववर्षुः पुष्पवृष्टिभिः ॥१०॥
मार्गे नीराजितः स्त्रीभिर्विवेश निजमन्दिरम् । कारयित्वा रमापूजां ददौ दानान्यनेकशः ॥११॥
सुहृदः पूजयामास राघवो वसनादिभिः । ततो विसर्जयामास सर्वान्स्वस्वस्थलं प्रति ॥१२॥

प्रार्थना करनेपर उनके साथ ही कांतिपुरी गये ॥ ९५ ॥ वहाँ कम्बुकण्ठकी सलाहसे शत्रुघ्न नगरके बाहर ही ठहरे और रामको बुलानेके लिए दूतोंको भेजा ॥ ९६ ॥ उसी समय शत्रुघ्न तथा कम्बुकण्ठके दूत श्रीरामको बुलानेके लिए प्रसन्नतापूर्वक चल पड़े ॥ ९७ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे पं० रामतेजपाण्डेयविरचित'ज्योत्स्ना'भाषाटीकासहिते विवाहकांडे अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

श्रीरामदास कहने लगे--वे दूत अयोध्यापुरीमें पहुंचे और रामको कांतिपुरीका सब हाल कह सुनाया। सो सुनकर रामने सीतासे कहा ॥ १ ॥ इसके पश्चात् अच्छे मुहूर्तमें राम अपने अंतःपुरकी नारियों, पुरवासियों, जनपदवासियों, समस्त सम्बन्धियों, नारद तथा सेनाके साथ आदिमुक्तिपुरी अर्थात् कांतिपुरीको चल पड़े। जब कम्बुकण्ठने सुना कि रामचन्द्र पुरीके निकट आ पहुंचे हैं, तब आदरपूर्वक स्वागत करने गये। वहाँ पहुंचकर सविनय प्रणाम किया। इसके अनंतर राम तथा यूपकेतुका पूजन करके हाथीपर बिठाकर धीरे-धीरे पुरीको चले ॥ २-४ ॥ रास्तेमें वेश्यायें नाचती-गाती थीं और तुड़ही आदि विविध प्रकारके बाजे बज रहे थे। उधर जब नगरकी स्त्रियोंने आते देखा तो राम और यूपकेतुपर पुष्पवृष्टि करने लगीं। तत्पश्चात् राम जनवासेमें पहुंचे ॥ ५ ॥ ६ ॥ वहाँ अच्छा मुहूर्त देखकर पूर्वोक्त कौतुकोंके साथ बड़े उत्साहसे यूपकेतुका विवाह किया ॥ ७ ॥ विवाहकी सब रीतियाँ पूरी हो जानेपर कम्बुकण्ठसे पूजित होकर कितने ही हाथी, घोड़े, रथ, पैदल सेना, दास-दासी आदिके साथ मदनसुन्दरीको लेकर अपनी अयोध्यापुरीको चल दिये। अयोध्याके पास पहुंचकर वे अपनी नगरीमें घुसे तो विविध प्रकारके बाजे बजने लगे ॥ ८ ॥ ९ ॥ वेश्यायें नाचने लगीं और मागध-बन्दीजन स्तुति करने लगे। नगरवासिनी महिलाएँ अँटारियोंपर चढ़-चढ़कर रामपर फूल बरसाने लगीं और कुछ स्त्रियाँ मार्गमें आरती उतारने लगीं। इस उत्साहसे राम अपने महल गये। वहाँ उन्होंने लक्ष्मीकी पूजा की और अनेक प्रकारके दान दिये ॥ १० ॥ ११ ॥ इसके अनंतर निमंत्रणमें आये हुए

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ सप्त कुमाराश्च लवाद्याः स्वस्ववेश्मनि । चक्रुः क्रीडां पृथक् स्त्रीभ्यां कुशश्चंपिकयाऽकरोत् ॥१३॥
चंपिकायां दुहितरः कुशाज्जाताः शुभा नव । कुशस्याग्रे कुमुद्वत्यां भविष्यंत्यष्ट सूनवः ॥१४॥
भविष्यति तथा कन्या त्वेका चंपकमालिनी । ज्येष्ठः पुत्रोऽतिथिरिति नाम्ना राज्यं करिष्यति ॥१५॥
चतुर्दश सुमत्याद्याः स्त्रियः सर्वाः क्रमेण हि । सुषुवुस्तनयानष्ट कन्यैकाऽपि पृथक् पृथक् ॥१६॥
स द्वादशशतं पौत्रान्पौत्रीश्चैव मनोरमाः । त्रयोविंशद्रामचन्द्रो लालयामास सीतया ॥१७॥
कुमुद्वतीभाविपुत्रसहिताः शिशवः शुभाः । विंशच्छतमासंस्ते तथा पौत्र्यस्तडित्प्रभाः ॥१८॥
चतुर्विंशन्मिताश्चासन् सर्वाश्चोद्वाहिता नृपैः । तथा श्रीरामपौत्रैश्च नृपकन्या ह्यनेकशः ॥१९॥
काश्चित्स्वयंवरेणैव काश्चिद्राक्षसयोगतः । काश्चिद्गांधर्वयोगेन काश्चिद्दैवाहकर्मणा ॥२०॥
परिणीताः पौरुषेण तासां संख्या न विद्यते । तासां हि संततिं वक्तुं कः समर्थो भवेदिह ॥२१॥
एवं स यूपकेतोश्च विवाहश्चरमः शुभः । संपाद्य नारदः श्रीमान्सभायां रघुनन्दनम् ॥२२॥
रामनामसहस्रेण सूतोक्तेनातिभक्तितः । स्तुत्वा श्रीराघवं पृष्ट्वा ययावाकाशवर्त्मना ॥२३॥

श्रीरामदास उवाच

एवं रामेण साकेतपुर्यां भोगाश्चिरं सुखम् । भुक्तास्तेषां वर्णनेऽत्र कः समर्थो भवेन्नरः ॥२४॥
एक एव समर्थोऽभूद्वाल्मीकिस्तपसां निधिः । शतकोटिमितं येन नानाक्रीडादिसंयुतम् ॥२५॥
वर्णितं रामचरितं महामंगलकारकम् । यत्स्मृत्वापि मया किंचिच्चदग्रे परिवर्णितम् ॥२६॥
एवं रामस्त्वयोध्यायां पुत्रैः पौत्रैः समन्वितः । प्रपौत्रैः पौत्रपौत्रैश्च रंजयामास जानकीम् ॥२७॥
एवं विवाहकाण्डं च शिष्य त्वां परिवर्णितम् । नवसर्गैः पवित्रं च श्रवणान्मंगलप्रदम् ॥२८॥
विवाहकाण्डं परमं ये शृण्वत्यपि मानवाः । ते स्त्रीभिः पुत्रपौत्रैश्च वियोगं नाप्नुवंति हि ॥२९॥

सम्बन्धियोंको वस्त्र आदि दे-देकर पूजा की और सबको अपने घर जानेकी अनुमति दी ॥ १२ ॥ इसके बाद लव आदि सातों कुमार अपनी-अपनी स्त्रियोंके साथ अपने-अपने महलोंमें विहार करने लगे और कुश अपनी स्त्री चम्पिकाके साथ केलि करने लगे ॥ १३ ॥ इस तरह कुछ दिनों बाद कुशने चम्पिकासे नौ कन्यायें उत्पन्न कीं। कुमुद्वतीसे आठ पुत्र और चम्पकमालिनी नामकी एक पुत्री भी बादमें उत्पन्न होगी। कुशका सबसे बड़ा पुत्र अतिथि अयोध्यापुरीका राज करेगा ॥ १४ ॥ १५ ॥ इनके सिवाय सुमति आदि चौदह स्त्रियोंने क्रमशः आठ-आठ पुत्र और एक-एक कन्यायें उत्पन्न कीं ॥ १६ ॥ इस तरह राम सीताके साथ बारह सौ पौत्रों तथा तेईस सुन्दर पौत्रियोंका लालन-पालन करते थे ॥ १७ ॥ इसी प्रकार कुमुद्वतीके भावी पुत्रों-पौत्रोंको भी मिलाकर बीस सौ पौत्र और चौबीस पौत्रियाँ हुईं ॥ १८ ॥ जिनका रामने अच्छे-अच्छे राजाओंके साथ विवाह कर दिया और रामके पौत्रोंका विवाह अनेक राजकुमारियोंके साथ हुआ ॥ १९ ॥ उनमेंसे कुछ कुमारियाँ स्वयंवरसे आयीं, कुछ राक्षसविवाहसे आयीं, कुछ गंधर्वविवाहके योगसे आयीं और कुछका शुभ विवाहसम्बन्ध हुआ ॥ २० ॥ इनके सिवाय पौत्रोंके पुरुषार्थसे इतनी राजकुमारियाँ रामके महलोंमें आयी, जिनकी कोई संख्या ही नहीं है। ऐसी स्थितिमें उनकी सन्तानोंको कौन गिन सकता है? ॥ २१ ॥ इस प्रकार यूपकेतुका अन्तिम शुभ विवाह सम्पन्न हो जानेपर नारदने सभामें सूतके कहे हुए रामसहस्रनामसे अति भक्तिपूर्वक रामकी स्तुति करके जानेकी आज्ञा माँग ली और आकाशमार्गसे चले गये ॥ २२ ॥ २३ ॥ श्रीरामदासने कहा—इस तरह रामने बहुत समय तक सुख भोगा। उसका वर्णन करनेमें कोई भी प्राणी समर्थ नहीं हो सकता ॥ २४ ॥ बस, एकमात्र तपस्वी वाल्मीकिजी उनके वर्णनमें समर्थ हुए थे। जिन्होंने सौ करोड़ श्लोकोंमें नाना प्रकारकी क्रीड़ाओं सहित रामचरित्रका वर्णन किया। यह रामचरित परम मङ्गलकारक है। इसका स्मरण करके ही मैं तुम्हारे समक्ष कुछ कहनेमें समर्थ हुआ हूँ ॥ २५ ॥ २६ ॥ इस प्रकार राम अपनी अयोध्यापुरीमें पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र एवं प्रपौत्रोंके पुत्रोंके साथ रहते हुए सीताको आह्लादित करते रहे ॥ २७ ॥ हे शिष्य! इस तरह मैंने नौ सर्गयुक्त पवित्र विवाहकाण्डका वर्णन किया, जो सुननेमें सर्वथा मङ्गलदायक है ॥ २८ ॥

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्मं धनार्थी धनमाप्नुयात् । कामानाप्नोति कामार्थी मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ३०॥
स्त्रीकामुकैर्नरैरेतत्पठनीयं निरंतरम् । विवाहकाण्डं परमं प्राप्नुवंत्यत्र ते वधूः ॥३१॥
पतिकामा कुमारी चेत्स्नात्वा श्रोष्यति भक्तितः । विवाहकाण्डमेतद्वै मनोज्ञं पतिमाप्नुयात् ॥३२॥
सभार्यश्चेत्पठेदेतच्छृणुयाद्वाऽत्र भक्तितः । इह स्त्रिया सुखं भुक्त्वाऽप्सरोभिर्दिवि मोदते ॥३३॥
सधवा शृणुयादेतद्या नारी कांडमुत्तमम् । विवाहाख्यं कदा भर्त्रा वियोगं नाप्नुयात्तु सा ॥३४॥
सप्तदशदिनैरस्य कार्यं स्त्रीकामुकैर्मुहुः । अनुष्ठानं वर्षमेकं मूर्खोऽपि स्त्रियमाप्नुयात् ॥३५॥
प्रथमे दिवसे सर्गं पठेद्द्वौ च परेऽहनि । नवमे दिवसे सर्गान्क्रमेण संपठेन्नव ॥३६॥
दशमे दिवसेऽष्टैव क्षयस्त्वेकेन वै क्रमात् । एवं सप्तदशदिनैरनुष्ठानं स्मृतं बुधैः ॥३७॥
अथवा सकलं कांडं प्रथमे दिवसे पठेत् । परेऽहनि द्विवारं हि नवमे दिवसे क्रमात् ॥३८॥
नववारं पठेच्चेदं दशमे दिवसे ततः । अष्टवारं पठेत्कांडं क्षयस्त्वेवं क्रमात्स्मृतः ॥३९॥
एवं नरो वर्षमेकमनुष्ठानात्स्त्रियं लभेत् । स्मितवक्त्रां चारुनासां दिव्यरूपां मनोहराम् ॥४०॥

विवाहकाण्डं परमं पवित्रमानन्ददं मङ्गलकारकं च ।
स्त्रीदं मनोज्ञं श्रुतिसौख्यदं वै नरैः सदा संश्रवणीयमेतत् ॥४१॥
आनन्दरामायणमध्यसंस्थं विवाहकांडं परमं हि षष्ठम् ।
शृण्वंति भक्त्या भुवि मानवा ये लभन्ति कामानखिलान्मनोज्ञान् ॥४२॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे विवाहकांडे रामवंशविस्तारकथनं नाम नवमः सर्गः ॥९॥
विवाहकांडे सर्गा आनन्दरामायणे नवैव ज्ञातव्याः । पञ्चशताश्च श्लोकाः पञ्चाशीत्युपरिष्ठाः ॥ १ ॥

जो मनुष्य विवाहकाण्डका श्रवण करते हैं, वे अपनी स्त्री तथा पुत्र-पौत्रोंसे कभी भी वियुक्त नहीं होते ॥ २९ ॥ इसको सुननेसे धर्मार्थी धर्मको, धनार्थी धनको, कामी कामको और मोक्षार्थी मोक्षको पा लेता है ॥ ३० ॥ जो लोग स्त्रीकी इच्छा रखते हों, उन्हें चाहिये कि निरन्तर इस विवाहकाण्डका पाठ किया करें। इससे उन्हें स्त्री अवश्य प्राप्त होगी ॥ ३१ ॥ अच्छे पतिको पानेकी इच्छा रखनेवाली कुमारी यदि भक्तिपूर्वक इस कांडको सुने तो सुन्दर पति पायेगी ॥ ३२ ॥ जो सस्त्रीक मनुष्य इस काण्डको पढ़ता या सुनता है तो वह इस जन्ममें स्त्रीके साथ सुख भोगकर स्वर्गमें अप्सराओंके साथ विहार करता है। जो सधवा नारी इस काण्डको सुनती है, वह कभी पतिवियोगका दुःख नहीं पाती। जो लोग स्त्री चाहते हों, वे सत्रह दिनमें एक आवृत्तिके क्रमसे एक वर्ष पर्यन्त अनुष्ठान करें। ऐसा करनेसे मूर्ख मानव भी स्त्री प्राप्त कर सकता है ॥ ३३-३५ ॥ उसका क्रम इस तरह है- पहले दिन एक सर्ग, दूसरे दिन दो सर्ग, तीसरे दिन तीन सर्ग इस क्रमसे नवें दिन नौ सर्गोंका पाठ करे। फिर दसवें दिन आठ सर्ग और ग्यारहवें दिन सात सर्ग ऐसे एक-एक घटाता हुआ सत्रह दिनमें पूरा करे। विद्वानोंने यही अनुष्ठानकी विधि बतलायी है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ अथवा बन पड़े तो पहले रोज विवाहकांडका एक बार पाठ कर जाय, दूसरे रोज दो बार, तीसरे रोज तीन बार, इस रीतिसे बढ़ाता हुआ दसवें दिन नौ बार इस कांडका पाठ करे और ग्यारहवें रोज आठ बार, बारहवें दिन सात बार इस विधानसे घटाता हुआ सत्रहवें दिन केवल एक बार पाठ करे ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ इस तरह एक वर्ष तक अनुष्ठान करनेसे वह मुस्कराते मुखड़े, अच्छी नासिका और दिव्य रूपवाली मनोहर स्त्री पाता है ॥ ४० ॥ लोगोंको चाहिए कि इस परम पवित्र, स्त्रीदायक, श्रुतिसुखदायी तथा आनन्द देनेवाले विवाहकांडका नित्य पाठ करें ॥ ४१ ॥ आनन्दरामायणके अन्तर्गत इस छठें विवाहकांडको जो मनुष्य भक्तिपूर्वक सुनते हैं, वे अपनी सब कामनाओंको प्राप्त कर लेते हैं ॥ ४२ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयविरचरित'ज्योत्स्ना'भाषाटीकासहिते विवाहकांडे नवमः सर्गः ॥ ९ ॥

इस विवाहकांडमें कुल नौ सर्ग हैं और उनमें पाँच सौ पचासी श्लोक कहे गये हैं ॥ १ ॥

इति श्रीमदानन्दरामायणे विवाहकाण्डं समाप्तम् ।

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection